मसीह का जीवन

# मसीह का जीवन

लेखिका : ई. जी. व्हाइट

ओरिएन्टल वॉचमैन पब्लिशिंग हाऊस,
सॉल्सबरी पार्क, पूना १.

LIFE OF CHRIST (Hindi) by Ellen G. White

Registered September 1, 1980, 10,000 copies.

Owned by the Oriental Watchman Publishing House, Salisbury Park, Poona 411 001, India; printed and published by V. Raju at and for the Oriental Watchman Publishing House, Salisbury Park, Poona 411 001, India.

# भूमिका

इस पुस्तक में विश्व की सर्वाधिक [illegible] तथा रोमांचक [illegible] संकलन किया गया है। इन [illegible] को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है कि एक बालक भी इनको आसानी से समझ सकता है। फिर भी ये [illegible] केवल बालकों के [illegible] के ही उपयोगी नहीं [illegible] जो कि [illegible] बालकों के [illegible] है, बल्कि ये युवक तथा बूढ़े पाठकों का प्यार भी आकर्षित करती है, जिनकी अभिलाषा [illegible] द्वारा [illegible] की जाती है

[illegible] उसी प्रकार सुनाओ, जिस प्रकार एक बालक को सुनाई जाती है।

यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए एक अविस्मरणीय लाभ का कारण बन जाए, प्रकाशक की यह हार्दिक इच्छा है

– प्रकाशक

# विषय सूची



# मसीह का जन्म

यूसुफ तथा मरियम, जो कुछ समय के पश्चात् यीशु के पार्थिव माता-पिता कहलाए गए, गलील के पर्वतों पर स्थित, नासरत के छोटे नगर के निवासी थे।

यूसुफ दाऊद राजा का वंशज था। जब जनगणना का आदेश प्रसारित किया गया तो उसे अपने पिता-पितामह दाऊद के नगर बैतलहम में अपना नाम लिखाने के लिए जाना पड़ा।

यह थका देने वाली यात्रा थी क्योंकि उस युग में यात्रा के साधन उपलब्ध नहीं थे। मरियम भी अपने पति के साथ थी। वह पर्वत के ऊपर बसे हुए बैतलहम नगर की चढ़ाई पर चढ़ने के कारण थक कर चूर हो गई थी।

उसकी किसी विश्राम-स्थल पर पहुंच कर विश्राम करने की इच्छा थी परन्तु नगर की सराएं लोगों से पहले ही भर चुकी थी। वहां धनवानों तथा सम्मानित व्यक्तियों की सेवा का उचित प्रबन्ध था, परन्तु

इन दीन यात्रियों को कहीं स्थान प्राप्त न होने के कारण एक गौशाला में आश्रय लेना पड़ा जहां पशु रखे जाते थे।

यूसुफ तथा मरियम के पास सांसारिक धन-सम्पत्ति नहीं थी परन्तु उनके पास परमेश्वर का प्रेम था, इस कारण उनको संतोष तथा शान्ति प्राप्त थी। वे स्वर्गीय सम्राट की संतान थे जो कि उनको शीघ्र ही आश्चर्यजनक सम्मान प्रदान करने जा रहा था।

समस्त यात्रा में स्वर्गदूत उनके सरक्षक रहे थे और रात्रि को जब वे विश्राम कर रहे थे तब भी स्वर्गदूतों ने उनको अकेला नहीं छोड़ा, वे अभी भी उनके साथ थे।

इसी स्थान पर एक-मात्र एन तारणहार यीशु मुक्तिदाता का जन्म हुआ, उसे कपड़े में लपेट कर चरनी में रखा गया। उस महान सर्वशक्तिमान के पुत्र को चरनी में रखा गया।

पृथ्वी पर आने से पहले यीशु स्वर्गीय सेना का सेनापति था। भार के अत्यधिक सम्मानित तथा प्रशंसित पुत्र सृष्टि की रचना के समय उसकी महिमा के गीत गा रहे थे। जब वह अपने सिंहासन पर बैठा तो उन्होंने उसकी महिमा को न देख सकने के कारण उनसे अपने मुख छिपा लिए थे।

फिर भी महिमायुक्त यीशु ने असहाय तथा निर्धन पापियों से प्रेम किया और सेवक का रूप धारण किया जिसमें वह हमारे लिए दुःख उठा कर मृत्यु सहन कर सके।

---

१ और वह (मरियम) पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा।

यीशु अपने पिता के निकट रह कर सम्राट के वस्त्र तथा मुकुट पहन कर उपस्थित रह सकता था परन्तु हमारे लिए उसने स्वर्गीय अधिकार और महिमा का त्याग कर पृथ्वी की निर्धनता स्वीकार की। उसने स्वर्ग का अपना उच्च अधिकार त्याग देना स्वीकार किया और स्वर्गदूतों की संगति छोड़ दी जो उससे प्रेम करते थे। स्वर्गीय समूह की प्रशंसा का उसने दुष्ट मनुष्यों के उपहास तथा निन्दा में परिवर्तित कर लिया जाना स्वीकार कर लिया। हमसे प्रेम करने के कारण, उसने कठिनाईपूर्ण जीवन तथा लज्जापूर्ण मृत्यु स्वीकार की।

यह सब यीशु ने इसलिए किया कि वह हम पर परमेश्वर के प्रेम को प्रकट कर सके। उसने पृथ्वी पर रह कर हम पर यह प्रकट कर दिया कि हम परमेश्वर की आज्ञाकारिता के अन्तर्गत किस प्रकार उसे सम्मानित करके उसकी इच्छा पूरी कर सकते हैं। उसने यह इसलिए किया कि हम उसके उदाहरण का अनुसरण करते हुए अनन्त काल तक स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ वास कर सकते हैं।

यहूदियों के महायाजक और अधिकारी यीशु का स्वागत करने के लिए तैयार न थे। उनको ज्ञात था कि मुक्तिदाता का आगमन निकट है परन्तु वे इस आशा में बैठे हुए थे कि वह एक शक्तिशाली राजा के रूप में पृथ्वी पर आएगा और उनको महान तथा धनवान बना देगा। मसीह को असहाय बालक के रूप में स्वीकार करने पर उनके अभिमान को ठेस पहुँचती थी।

---

"और उन्होंने (गड़ेरियों) ने तुरन्त जाकर मरियम और यूसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा।

सो जब मसीह ने जन्म लिया, परमेश्वर ने यह तथ्य उन पर प्रकाशित नहीं किया। उसने यह सुसमाचार गड़ेरियों को दिया जो बैतलहम के पहाड़ों तथा आसपास के क्षेत्रों में अपने झुण्डों की रखवाली कर रहे थे। ये भले मनुष्य थे और रात्रि के समय प्रतिज्ञा किए हुए मुक्तिदाता के विषय में बातचीत करते रहते थे और उसके आने के लिए इतनी अधिक प्रार्थना करते थे कि परमेश्वर ने उनको शिक्षा देने के लिए अपने सिंहासन के सन्मुख उपस्थित रहने वाले सन्देश वाहकों को भेजा।

"और प्रभु का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका, और वे बहुत डर गए। तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हे बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं, जो सब लोगों के लिए होगा। कि दाऊद के नगर में आज तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।" ( लूका २:९–११ )



# मन्दिर में

यूसुफ और मरियम दोनों ही यहूदी थे और अपने राष्ट्र की विधियों का पालन करने वाले थे। जब यीशु [illegible] सप्ताह का हो गया तो वे इसे यरूशलेम के मन्दिर में परमेश्वर के सन्मुख ले कर आए। यह उस व्यवस्था के अनुकूल कार्य था जो परमेश्वर ने इस्राएल को दी थी, और यीशु को सभी बातों में आज्ञाकारी होना आवश्यक था। सो परमेश्वर का पुत्र स्वर्ग का राजकुमार, अपना उदाहरण प्रस्तुत करके हमें शिक्षा देता है कि हम सब को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए।

केवल परिवार के पहलौठे बालक को ही इस प्रकार परमेश्वर के सन्मुख प्रस्तुत किया जाता था। यह औपचारिकता एक घटना को

स्मरण रखने के लिए नियुक्त की गई थी जो कि सैंकड़ों वर्ष पहले घटी थी।

जब इस्रायल की सन्तान मिस्र में दासता का जीवन व्यतीत कर रही थी तो प्रभु ने उनको स्वतंत्र करने के लिए मूसा को भेजा। उसने मूसा को फिरौन राजा के पास जा कर यह कहने की आज्ञा दी, 'यहोवा यों कहता है, कि इस्राएल मेरा पुत्र वरन मेरा जेठा है, और जो मैं तुझसे कह चुका हूं, कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे, और तू ने अब तक उसे जाने नहीं दिया, इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन तेरे जेठे को घात करूंगा।" निर्गमन ४:२२,२३।

मूसा ने यह सन्देश राजा तक पहुंचा दिया परंतु फिरौन का उत्तर यह था, "यहोवा कौन है, कि मैं उसका वचन मान कर इस्राएलियों को जाने दूं? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूंगा।" निर्गमन ५:२।

फिर प्रभु ने मिस्रियों पर भयानक विपत्तियां भेजीं। इन विपत्तियों में अन्तिम विपत्ति यह थी कि समस्त मिस्री परिवारों के पहलौठे, राजा से ले कर दास तक के सभी पहलौठे मार डाले गए।

प्रभु ने मूसा को बताया कि प्रत्येक इस्राएली परिवार को एक मेम्ना बलि करके उसका लोहू अपने घर की चौखट पर लगाने की आज्ञा दे। यह एक चिन्ह था कि मृत्यु का दूत इस्राएलियों के घरों पर यह चिन्ह देखकर उनके किसी पहलौठे को घात न करे, परन्तु यह विपत्ति निर्दय तथा अभिमानी मिस्रियों पर ही पड़े।

"फसह" का यह रक्त यहूदियों के लिए मसीह के रक्त का प्रतिनिधित्व करता था। क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर अपने पुत्र का उसी रूप में बलिदान करने जा रहा था जिस रूप में यह मेम्ना बलिदान

दिया गया था; ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त मृत्यु से बच सके।

मसीह हमारा फसह कहलाता है। (१) उसी के रक्त से विश्वास द्वारा हमारा उद्धार (२) होता है।

सो प्रत्येक इस्राएली परिवार इसीलिए अपने पहलौठे को मन्दिर में लाया करता था, इसके द्वारा वे स्मरण करते थे कि उनके बच्चे परमेश्वर द्वारा किस प्रकार उस विपत्ति से बचा लिए गए थे और किस प्रकार सभी लोग पाप तथा अनन्त मृत्यु से बच सकते हैं।

जो बालक इस रीति से मन्दिर में प्रस्तुत किया जाता था, उसे महायाजक अपनी गोद में ले कर उसे वेदी के सम्मुख ले जा कर ऊपर उठा देता था। इस प्रकार वह निष्ठापूर्वक परमेश्वर को समर्पित किया जाता था। इसके पश्चात् बालक को फिर अपनी माता की गोद में रख दिया जाता था, और उसका नाम एक पुस्तक या चर्म पत्र पर लिख लिया जाता था जिस मे समस्त इस्राएलियों के पहलौठों के नाम लिखे हुए होते थे। इसी प्रकार जो मसीह के रक्त द्वारा बचाए जाते है, उनके नाम जीवन की पुस्तक मे लिखे हुए पाए जाएंगे।

व्यवस्था के अनुसार यूसुफ और मरियम यीशु को महायाजक के पास ले गए। माता-पिता प्रतिदिन अपने-अपने बच्चों को महायाजक के पास लाते रहते थे सो जब यूसुफ और मरियम, यीशु को उसके पास ले गए तो महायाजक ने उस में कोई असाधारण बात नहीं देखी। वे साधारण कोटि के लोग थे। यीशु को उसने मात्र एक

(१) कुरिन्थियों ५ ७ (२) इफिसियों १ ७

असहाय शिशु के रूप में देखा। महायाजक को ज्ञात ही नहीं था कि वह इस समय संसार के मुक्तिदाता को अपनी गोद में लिए हुए है जो की स्वर्गीय मन्दिर का महायाजक है। परन्तु यदि वह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाला होता तो यह तथ्य उसे निश्चय ही ज्ञात होता क्योंकि प्रभु उसे स्वयं ही उसे इस विषय पर शिक्षित कर देता।

इस अवसर पर मन्दिर में परमेश्वर के दो सेवक उपस्थित थे– शमौन तथा हन्नाह। दोनों ही परमेश्वर की सेवा करते हुए बूढ़े हो चुके थे और उसने उन दोनों पर वह तथ्य स्पष्ट कर दिया जो अभिमानी तथा स्वार्थी याजक पर स्पष्ट न हुआ था।

शमौन से प्रतिज्ञा की गई थी कि जब तक वह मुक्तिदाता को अपनी आंखों से न देख लेगा तब तक मृत्यु को न देखेगा। जब उसने यीशु को मन्दिर में देखा तो उसे ज्ञात हो गया कि इसी के आगमन की प्रतिज्ञा की गई है। यीशु के मुखमण्डल पर स्वर्गीय प्रकाश तथा चमक थी और शमौन ने उसे अपनी गोद में ले कर परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहा :

" हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा करता है। क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है। जिसे तू ने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है, कि वह अन्यजातियों को प्रकाश देने के लिए ज्योति, और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो। " (१)

हन्नाह भविष्यद्वक्तिन, " उसी घड़ी वहां आकर प्रभु का धन्यवाद करने लगी, और उन सभों से, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे, उसके विषय में बातें करने लगी। " (२)

---

१. लूका २:२९ – ३२ २. लूका २:३८

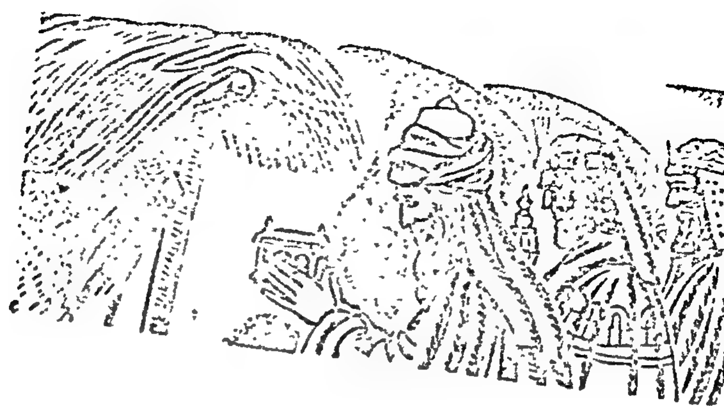
सो इस प्रकार परमेश्वर दीन लोगों को अपना साक्षी होने के लिए चुनता है। प्रायः जिन लोगों को इस संसार में महान समझा जाता है, वे इससे वंचित रह जाते हैं। अनेक लोग यहूदी महायाजकों और अधिकारियों के समान हैं। वे अपनी ही सेवा तथा सम्मान के अभिलाषी होते हैं, उनको परमेश्वर की सेवा तथा सम्मान की अधिक चिन्ता नहीं होती। इसीलिए परमेश्वर उनको अपनी दया और करुणा के विषय में बताने के लिए नहीं चुनता है।

मरियम, यीशु की माता, शमौन की दूरगामी भविष्यवाणी पर विचार करती रही। उसने अपनी गोद के बच्चे को देखा और उसे वे बातें स्मरण हो आयीं जो बैतलहम के गड़ेरियों ने उससे कही थीं, उसका मन प्रसन्नता और आनन्द से परिपूर्ण हो गया। शमौन के शब्दों को सुन कर उसे यशायाह की भविष्यवाणी स्मरण हो आई। उसे ज्ञात था कि ये आश्चर्यजनक शब्द यीशु के ही विषय में कहे गए हैं।

"जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे, उन्होंने बड़ा उजियाला देखा, और जो घोर अन्धकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त काल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से ले कर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और संभाले रहेगा।" (३)

---

(३) यशायाह ९: २-७



# ज्योतिषियों की मुलाकात

परमेश्वर की इच्छा यह थी कि पृथ्वी पर मसीह के आगमन के विषय में लोगों को ज्ञान हो जाए। यह याजकों का कार्य था कि वे मुक्तिदाता के आगमन के बारे लोगों को शिक्षा दें परन्तु वे स्वयं भी उसके आगमन से अनभिज्ञ थे। सो परमेश्वर ने गड़ेरियों को सूचना देने के लिए स्वर्गदूतों को भेजा कि मसीह ने जन्म ले लिया है और उनको वह स्थान भी बता दिया जहां से उसे देख सकते थे।

परमेश्वर का यह अभिप्राय था कि यहूदी तथा दूसरे लोग यह जान लें कि मसीह पृथ्वी पर आ चुका है। पूर्व दिशा में हर देश में ज्योतिषी रहा करते थे जिन्होंने भविष्यवाणियों का अध्ययन किया था और वे जानते थे कि मसीह का आगमन निकट है।

ये लोग विद्वान थे और दर्शनशास्त्र के विशेषज्ञ थे। इन्होंने प्रकृति में परमेश्वर के हाथ के कार्यों का गहरा अध्ययन किया था, और वे परमेश्वर से प्रेम करना सीख गए थे। इन्होंने नक्षत्रों का अध्ययन किया था और वे उनकी गति से भी परिचित थे। वे आकाशदर्शन के प्रेमी थे और यात्रा करते समय ऊपर नक्षत्रों को निहारते चलते थे। यदि उनको आकाश में कोई नया नक्षत्र दिखाई देता था तो वे उसे किसी महान घटना का प्रतीक मानते हुए उसका स्वागत करते थे।

उस रात्रि को जब कि स्वर्गदूत गडेरियों के पास बैतलहम में पहुंचे तो इन ज्योतिषियों को आकाश में एक विचित्र ज्योति दिखाई दी। यह महिमा की ज्योति थी जिसने स्वर्गीय सेना को घेर रखा था। जब यह ज्योति अन्तर्धान हो गई तो उन्होंने आकाश में एक नया तारा देखा। यह देख कर तुरन्त उनको उस भविष्यवाणी का विचार आया जो कहती है, "याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इस्राएल में से एक राजदण्ड उठेगा।" (१)

*क्या यह सितारा इस तथ्य का चिन्ह था कि मसीह पृथ्वी पर आ गया है?* उन्होंने इसके पीछे पीछे चलने का संकल्प कर लिया, वे यह देखने को उत्सुक थे कि यह नक्षत्र उनको कहां ले जाता है। वह उनको यहूदिया देश में ले गया। परन्तु जब वे यरूशलेम नगर के निकट पहुंचे तो इस तारे का प्रकाश इतना धीमा पड़ गया कि वे उसके पीछे पीछे न चल सके।

उन्होंने परस्पर विचार करके यह निष्कर्ष निकाला कि यहूदी उनको मुक्तिदाता तक तत्काल ही पहुंचा देंगे सो वे यरूशलेम में जा कर पूछने लगे, "कि यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए हैं। यह सुन कर हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा

(१) गिनती २४।१७

यरूशलेम घबरा गया। उसने लोगों के सब महायाजकों और शास्त्रियों को इकठ्ठे करके उनसे पूछा, कि मसीह का जन्म कहां होना चाहिए ? उन्होंने उससे कहा, यहूदिया के बैतलहम में। क्योंकि भविष्यद्वक्ता द्वारा ऐसा ही लिखा गया है।" (१)

हेरोदेस उस राजा के विषय में कुछ नहीं सुनना चाहता था जो कि किसी दिन उसका सिंहासन छीन ले। सो उसने ज्योतिषियों को अकेले बुला कर पूछा कि तुम लोगों ने उसका सितारा कब देखा था। फिर उसने उनको बैतलहम भेज दिया और उनसे कहा, "कि जाकर उस बालक के विषय में ठीक ठीक मालूम करो और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मैं भी आ कर उसको प्रणाम करूं।" (२)

जब ज्योतिषियों ने हेरोदेस की बातें सुन लीं तो वे फिर यात्रा पर चल पड़े। "और देखो, जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे-आगे चला और जहां बालक था, उस जगह के ऊपर पहुंच कर ठहर गया।" (३)

"और उस घर में पहुंच कर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा और मुंह के बल गिर कर उसे प्रणाम किया और अपना-अपना थैला खोल कर उसको सोना, और लोहबान और गन्धरस भेंट चढ़ाई।" (४)

ज्योतिषियों के पास जो बहुमूल्य वस्तुएं थीं, वे उनको मुक्तिदाता के पास ले आए थे। ऐसा करके उन्होंने हमारे सामने एक उदाहरण

१. मत्ती २:२-५ २. मत्ती २:८
३. मत्ती २:९ ४. मत्ती २:११

---

✦ दाहिनी ओर के चित्र में : ज्योतिषी आकाश में विचित्र ज्योति देख रहे हैं।



प्रस्तुत किया है। अनेक लोग अपने सांसारिक मित्रों को भेंट देते हैं परन्तु स्वर्गीय मित्र को कोई भेंट नहीं चढ़ाते जिसने उनको आशीषें दी हैं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। हमें मसीह के पास अपनी उत्तम से उत्तम भेंट लानी चाहिए—हमारा समय, हमारा धन, और हमारा प्रेम उसके चरणों में अर्पित किया जाना चाहिए। हम निर्धनों की सहायता के द्वारा उसे अपनी भेंट चढ़ा सकते हैं और लोगों को मुक्तिदाता की शिक्षा दे कर भी उसे भेंट चढ़ा सकते हैं। इस प्रकार हम उनकी सहायता करते हैं जिनके लिए उसने अपने प्राण दिए हैं। ऐसी भेंट मसीह सहर्ष और मुस्कुरा कर ग्रहण करता है और हमें आशीष देता है।



# मिस्र के लिए प्रस्थान

हेरोदेस ने जो ज्योतिषियों से कहा था कि वह जा कर यीशु को प्रणाम करना चाहता है पर उसमें सत्य का लेश मात्र भी न था। उसे डर था कि मुक्तिदाता बड़ा हो कर उसके सिंहासन पर अपना अधिकार कर लेगा। वह उस बालक को खोजने का इच्छुक था ताकि उसको मरवा डाले।

ज्योतिषी वापिस लौट कर हेरोदेस को बालक के विषय में बताने की तैयारी कर रहे थे, परन्तु परमेश्वर का एक दूत स्वप्न में उन पर प्रकट हुआ और उसने उनको दूसरे मार्ग से अपने देश भिजवा दिया।

"उनके चले जाने के बाद देखो, प्रभु के एक दूत ने यूसुफ को दिखाई दे कर कहा, उठ, उस बालक को

माता को ले कर मिस्र देश को भाग जा; और जब तक मैं तुझसे न कहूं, तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढने पर है कि उसे मरवा डाले।" (१)

यूसुफ ने भोर तक प्रतीक्षा नहीं की; वह तत्काल ही उठ बैठा और बच्चे तथा उनकी माता को ले कर लम्बी यात्रा पर निकल पड़ा। ज्योतिषियों ने यीशु को बहुमूल्य भेंटें चढ़ाई थीं, और इस प्रकार परमेश्वर ने उनकी यात्रा के खर्च का प्रबन्ध कर दिया था और यही धन उनके मिस्र में रहने के लिए भी पर्याप्त था। वे स्वदेश वापिस लौटने तक उससे अपना निर्वाह करते रहे।

हेरोदेस को जब यह ज्ञात हुआ कि ज्योतिषी दूसरे मार्ग से अपने देश चले गए, तो वह क्रोधित हो उठा। परमेश्वर ने मसीह के विषय में भविष्यद्वक्ता द्वारा जो कुछ कहा था उससे हेरोदेस भली भांति परिचित था। वह यह भी जानता था कि ज्योतिषियों का नेतृत्व करने के लिए किस प्रकार तारे को भेजा गया था। फिर भी वह यीशु को नष्ट कर देने पर तुला हुआ था। उसने क्रोधित होकर सैनिक भेज दिए और, "बैतलहम और उसके आसपास के सब लड़कों को जो दो वर्ष या उससे छोटे थे मरवा डाला।" (२)

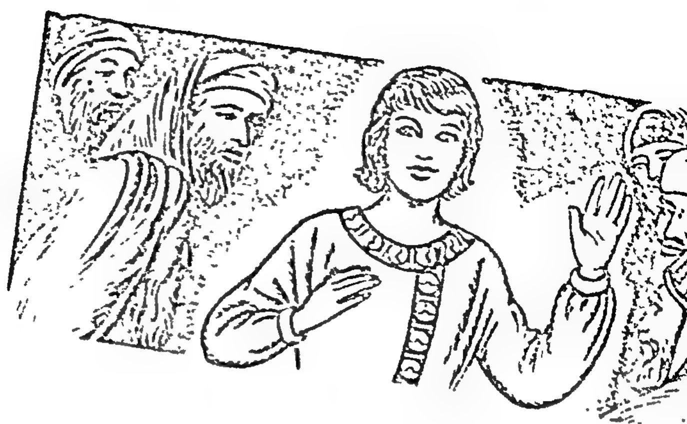
मनुष्य की परमेश्वर के विरुद्ध लड़ाई कैसी विचित्र बात है। इन निर्दोष बालकों की निर्मम हत्या का दृश्य कैसा भयानक रहा होगा! हेरोदेस ने पहले भी अनेक निर्दयतापूर्ण कार्य किये थे। फिर स्वर्गदूत यूसुफ पर प्रगट हुआ और उसने कहा, "उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा, क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे सब मर गए।" (३)

---

(१) मत्ती २:१३ (२) मत्ती २:१६

(३) मत्ती २:२०

यूसुफ बैतलहम में बसने की आशा लगाए हुए था, जहां यीशु का जन्म हुआ था, परन्तु यहूदिया देश के निकट आने पर उसे ज्ञात हुआ कि हेरोदेस का पुत्र उसके उत्तराधिकारी के रूप में राज्य कर रहा है। इससे यूसुफ वहां जाने से डरा और उसे ज्ञात न हो सका कि अब क्या करना उचित है। तो परमेश्वर ने उसको निर्देश देने के लिए एक स्वर्गदूत भेज दिया। उस स्वर्गदूत की आज्ञा का पालन करते हुए यूसुफ नासरत में लौट आया।



# मसीह का बाल्यकाल

यीशु का बाल्यकाल एक छोटे से पहाड़ी गांव में व्यतीत हुआ। वह परमेश्वर का पुत्र था, और पृथ्वी पर किसी भी स्थान पर रह सकता था। उसे किसी भी स्थान पर सम्मान प्राप्त हो सकता था। परन्तु वह राजाओं के महलों या धनवान लोगों के घर नहीं गया। उसने नासरत के निर्धनों के बीच रहना स्वीकार किया।

यीशु निर्धनों पर यह प्रकट करना चाहता है कि वह उनकी परीक्षाओं को समझता है। उसने वे सभी कष्ट सहन किए हैं जो निर्धन सहन करते हैं। वह उनसे सहानुभूति रखता है तथा उनकी सहायता कर सकता है।

यीशु के प्रारम्भिक वर्षों के विषय में बाइबल बताती है, "और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया,

और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।" (१) उसका मस्तिष्क उज्ज्वल तथा गतिशील था। "और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।" (२) उनकी बुद्धि तीव्र थी और अपनी आयु में उसमें अधिक विवेक तथा विचारशीलता थी। फिर भी वह साधारण बालक के समान ही व्यवहार करता था। वह बुद्धि तथा डील-डौल में अन्य बालकों के समान ही बढ़ता गया।

परन्तु यीशु सभी बातों में अन्य बालकों के समान नहीं था। उसका व्यवहार मधुर तथा स्वार्थरहित था। उसके हाथ सदा ही दूसरों की सेवा करने के लिए तत्पर रहते थे। वह सहनशील तथा धैर्यवान था और सत्य के प्रति चट्टान के समान दृढ़ रहता था। दूसरों के प्रति सद्व्यवहार और सज्जनता प्रगट करने में वह कभी असफल नहीं रहा। अपने घर में तथा जहां भी वह उपस्थित हो, वह सूर्य की किरण के समान सुखदायक प्रकाश बिखेर देता था।

वह निर्धनों तथा बूढ़ों का आदर करता था और मूक पशुओं के प्रति भी सहानुभूति प्रगट करता था। वह छोटे पक्षियों पर भी दयावान था और उसकी निकटता में रहने से प्रत्येक प्राणी प्रसन्नता अनुभव करता था।

मसीह के युग में यहूदी अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति बहुत सचेत थे। उनके शिक्षा संस्थान, आराधनालयों से या उपासना के स्थानों के निकट होते थे और उनके शिक्षक रब्बी कहलाए जाते थे। ये शिक्षक बहुत विद्वान समझे जाते थे। यीशु इनके स्कूल में नहीं गया क्योंकि ये लोग कुछ ऐसी शिक्षाएं भी देते थे जो सत्य के विपरीत होती थी। परमेश्वर के वचन की अपेक्षा मनुष्य की शिक्षाओं का अधिक अध्ययन किया जाता था और उनकी शिक्षाएं प्राय परमेश्वर

---

१. लूका २४०  २ लूका २५२

मसीह का ज

की शिक्षा के विपरीत होती थी जो कि उसने अपने भविष्यद्वक्ता
द्वारा उनको दी थी।

परमेश्वर ने स्वयं अपने पवित्र आत्मा द्वारा मरियम को यी
के पालन-पोषण के लिए आवश्यक निर्देश दिए। मरियम ने यीशु क
पवित्र शास्त्र की शिक्षा दी और उसने फिर स्वयं उनको पढ़ कर
उनका अध्ययन किया।

यीशु ने उन आश्चर्यजनक वस्तुओं का भी अध्ययन किया जिनको
परमेश्वर ने आकाश तथा पृथ्वी पर बनाया है। प्रकृति की इस
पुस्तक में उसने सूर्य, चन्द्रमा, वृक्ष, पौधे तथा जीव-जन्तुओं को देखा।
दिन प्रतिदिन वह उनको देखता रहा और उनसे शिक्षा ग्रहण करने
का प्रयत्न करता रहा और उनके बनाए जाने का उद्देश्य खोजता
रहा। पवित्र स्वर्गदूत उनके साथ रहते थे और परमेश्वर से सम्बन्धित
बातों को समझने में उसकी सहायता करते रहते थे। इस प्रकार वह
डील-डौल तथा सामर्थ में बढ़ता चला गया और साथ ही ज्ञान तथा
बुद्धिमता में भी बढ़ता रहा।

प्रत्येक बालक वैसा ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है जैसा कि यीशु
ने किया। हमें केवल उन्हीं बातों को सीखने में अपना समय व्यय
करना चाहिए जो सत्य हैं। झूठी कल्पित बातों से हमें कोई लाभ
नहीं हो सकता। केवल सत्य का हमारे लिए महत्व हो सकता है और
इसको हम परमेश्वर के वचन द्वारा और उसके कार्यों से सीख सकते
हैं। जब हम उन वस्तुओं का अध्ययन करते हैं तो स्वर्गदूत उन बातों
को समझने में हमारी सहायता करते हैं। हम इससे परमेश्वर की
बुद्धिमता और भलाई को ... जो हम ... स्वर्गीय पिता है।
... हमारे मस्तिष्क को ... हमारे हृदय
... बनते हैं और हम ... समान
... जाते हैं।

प्रतिवर्ष यूसुफ तथा मरियम फसह का पर्व्व मनाने के लिए यरूशलेम जाते थे। जब यीशु की अवस्था बारह वर्ष की हो गई तो वे उसे भी अपने साथ ले गए।

यह यात्रा बहुत आनन्ददायक थी। उस युग में लोग या तो पैदल यात्रा करते थे या कुछ लोग बैलों तथा गदहों पर सवार होकर यरूशलेम जाते थे। यह यात्रा अनेक दिनों में पूरी होती थी। देश के सभी भागों से और दूसरे देशों से भी लोग इस फसह के पर्व्व में सम्मिलित होने के लिए यरूशलेम पहुंचते थे। एक स्थान के निवासी प्राय सामूहिक यात्रा करते थे और इस प्रकार यात्रियों के बड़े दल बन जाते थे। यह पर्व्व मार्च के अन्तिम सप्ताह में या अप्रैल के प्रथम सप्ताह में आयोजित किया जाता था। यह ऋतु फिलीस्तीन देश में बसन्त ऋतु होती थी और समस्त देश इस समय भांति-भांति के सुन्दर फूलों तथा हरियाली से आच्छादित होता था और सर्वत्र पक्षियों का मधुर गान सुनाई देता था। यात्रा करते हुए माता-पिता, इस्राएल के लिए किए गए परमेश्वर के महान आश्चर्यकर्मों का अपने बच्चों के सम्मुख वर्णन करते जाते थे और वे प्राय अपने बच्चों के साथ दाऊद राजा के रचे सुन्दर गीत भी गाते थे।

मसीह के युग में परमेश्वर की सेवा के प्रति यहूदी उत्साहहीन और ठंडे हो चुके थे। वे परमेश्वर की भलाई की अपेक्षा सांसारिक सुख-समृद्धि के इच्छुक थे। परन्तु ये बातें यीशु में नहीं थीं। उसे परमेश्वर के विषय में विचार करने में आनन्द प्राप्त होता था। जब वे मन्दिर में पहुंचे तो उसने वहां याजकों को सेवा-कार्य करते हुए देखा। वह भी उपासना करनेवालों के साथ परमेश्वर को दण्डवत करने के लिए झुका जब कि वे प्रार्थना करने के लिए भूमि पर झुके और उसने भी उनके साथ मिल कर परमेश्वर की स्तुति के गीत गाए।

* नासरत से यरूशलेम की दूरी लगभग ७० मील थी।

प्रत्येक दिन प्रातःकाल तथा सन्ध्याकाल एक मेम्ना वेदी पर बलिदान करके चढ़ाया जाता था। यह मुक्तिदाता के बलिदान होने का प्रतीक था। जब यीशु ने निर्दोष मेम्ने को देखा तो पवित्र आत्मा ने उसे उसका अर्थ समझा दिया। उसे ज्ञात हो गया कि वह स्वयं भी परमेश्वर का मेम्ना है जिसे मनुष्यों के पापों के लिए बलिदान होना है।

मस्तिष्क में ऐसे विचार लिए यीशु कहीं एकान्त में जाना चाहता था। सो वह मन्दिर में अपने माता-पिता के साथ नहीं ठहरा और जब वे अपने घर वापिस लौटे तो वह उनके साथ नहीं था।

मन्दिर से जुड़ा हुआ एक स्कूल भी वहां स्थापित किया गया था जिसमें रब्बी शिक्षा देते थे और कुछ समय के पश्चात् यीशु इसी स्थान पर पहुंच गया। वह भी महान गुरु के चरणों के पास अन्य शिष्यों के समान बैठ गया और उनके शब्दों को सुनने लगा। मसीह के विषय में यहूदियों की धारणा अनुचित थी। यीशु इसको जानता था, परन्तु उसने विद्वानों की बातों का खण्डन नहीं किया। उसने ज्ञान प्राप्त करने वाले शिष्य के समान अपने शिक्षकों से प्रश्न पूछा। उसने यशायाह भविष्यद्वक्ता के ५३ वें अध्याय के विषय में प्रश्न किया जिसमें मुक्तिदाता की मृत्यु का वर्णन किया गया है। उसने यह अध्याय उनको पढ़ कर सुनाया और इसका अर्थ पूछा।

रब्बी इसका कोई उत्तर न दे सके। उन्होंने यीशु से प्रश्न करने आरम्भ कर दिए और उनका पवित्रशास्त्र का ज्ञान देख कर आश्चर्य चकित रह गए। उन्होंने देख लिया कि बाइबल का उसको उनकी अपेक्षा कहीं अधिक ज्ञान है। उन्होंने यह भी देखा कि उनकी शिक्षा अनुचित है, परन्तु किसी अन्य बात पर विश्वास करने के लिए वे तत्पर नहीं थे।

फिर भी यीशु ने नम्रता और सज्जनता प्रगट की और इस कारण वे उन पर क्रोधित नहीं हुए। वे उसको अपने विद्यार्थी के रूप में रखने के इच्छुक थे और वे उससे भी यही अपेक्षा रखते थे कि वह भी बाइबल की वैसी ही शिक्षा दे जैसी वे देते थे।

जब यूसुफ और मरियम अपनी यात्रा से घर की ओर लौटे, तो उन्होंने यह ध्यान नहीं दिया कि यीशु पीछे छूट गया है। उनका विचार था कि वह अपने यात्री मित्रों के साथ होगा, परन्तु रात्रि में पड़ाव डालने पर उनको वह न दिखाई दिया। उन्होंने सभी लोगों में उसकी खोज की परन्तु उनकी यह खोज व्यर्थ हुई।

यूसुफ और मरियम पर भय छा गया। उनको स्मरण आया कि हेरोदेस ने शिशु काल में उसे किस प्रकार मरवा डालने का प्रयत्न किया था। उनको भय था कि कहीं किसी प्रकार की विपत्ति उस पर न पड़ गई हो। शोकित हृदय से वे शीघ्र ही यरूशलेम लौट गए, परन्तु तीन दिन की खोज के पश्चात् ही वे उससे मिल सके।

उससे फिर मिलने पर उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा, फिर भी मरियम का विचार था कि उनको छोड़ने में वही दोषी था, इसलिए उसने कहा," हे पुत्र, तू ने क्यों हमसे ऐसा व्यवहार किया ? देख, मैं और तेरा पिता कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे।"

"तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे ?" यीशु ने उत्तर दिया, "क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है ?" १

इन शब्दों को व्यक्त करते हुए यीशु ने ऊपर आकाश की ओर संकेत किया। उसके मुख पर एक ऐसी ज्योति थी जिसे देख कर

---

१ लूका २ ४८, ४९

उनको आश्चर्य हो रहा था। यीशु को ज्ञात था कि वह परमेश्वर का पुत्र था, और वह वही कार्य कर रहा था जिसको करने के लिए उसके पिता ने उसे पृथ्वी पर भेजा था।

मरियम उसके शब्दों को आजीवन नहीं भूली। आगामी वर्षों में उसने स्पष्टता से उन शब्दों का अर्थ समझ लिया।

यूसुफ और मरियम को यीशु से प्रेम था, फिर भी वे उसे वापस ले जाने में असावधान रहे थे। वे उस कार्य को भूल गए थे जो कि परमेश्वर ने उनको करने के लिए दिया था। उनकी एक दिन की उपेक्षा के कारण यीशु उनसे पृथक हो गया था। इसी प्रकार आज भी अनेक मुक्तिदाता की संगति छोड़ कर उससे पृथक हो जाते हैं। जब हमें उसके विषय में विचार करना अच्छा नहीं लगता या हम उससे प्रार्थना नहीं करते और जब हम निकम्मी बातचीत करते हैं या बुरी बातें बोलते हैं तो हम मसीह से स्वयं को पृथक करते हैं। उसके बिना हम दुखी और शोकित हो जाते हैं। परन्तु यदि वास्तव में हम उसकी संगति चाहते हैं तो वह सदा हमारे साथ रहता है। वह उन सब के साथ रहता है, जो उसकी उपस्थिति के इच्छुक होते हैं। वह निर्धन से निर्धन परिवार को भी ज्योति से परिपूर्ण कर देता है और अत्यन्त शोकित हृदय में भी प्रसन्नता भर देता है।

यद्यपि उसे ज्ञान था कि वह परमेश्वर का पुत्र था, वह यूसुफ और मरियम के साथ नासरत वापस लौट गया। वह तीस वर्ष तक, "उनके आधीन" रहा। वह जो स्वर्ग का सेनापति था, इस पृथ्वी पर आज्ञाकारी तथा प्रेमी पुत्र रहा। वे महान बातें जो मन्दिर में सेवा करने के कारण उसके मस्तिष्क में जम गई थीं, उसके हृदय में छिपी रहीं। वह अपना नियुक्त कार्य करने के लिए परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करता रहा।

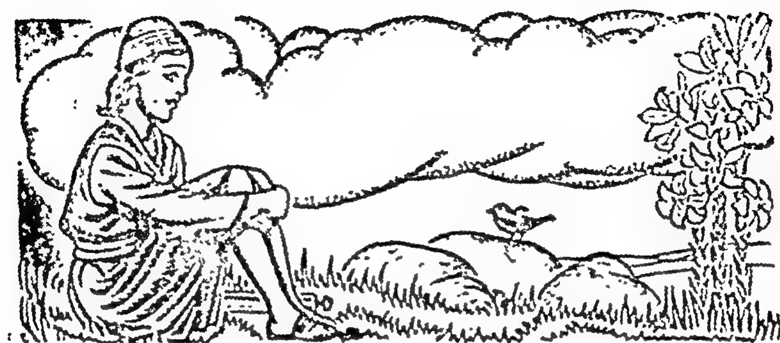
यीशु एक निर्धन किसान के परिवार में रहा। उसने सच्चाई से

साथ प्रसन्नतापूर्वक परिवार के निर्वाह में अपना योगदान दिया। जब वह कार्य करने योग्य हो गया तो उसने एक व्यवसाय सीख लिया और यूसुफ के साथ बढ़ई की दूकान में कार्य करता रहा।

साधारण मजदूर के समान उसने मोटे कपड़े के वस्त्र पहने और छोटे नगर की गलियों में कार्यवश आता जाता रहा। उसने अपना सांसारिक जीवन सुखी बनाने के लिए अपनी अलौकिक शक्ति का प्रयोग नहीं किया।

बाल्यकाल तथा युवावस्था में परिश्रम करने के फलस्वरूप उसका शरीर तथा मस्तिष्क सशक्त बन गया। उसने अपनी शक्ति का इस प्रकार उपयोग किया जिससे उसका स्वास्थ्य बना रहे और सभी उपयोगी कार्य सुचारु रूप से पूर्ण हो सकें। उसने जो कुछ भी किया उत्तम रीति से किया। वह सभी बातों में यहां तक कि अपने औज़ारों के प्रयोग में भी निपुणता प्राप्त करने का इच्छुक था। अपना उदाहरण प्रस्तुत करके उसने हमें शिक्षा दी कि हम परिश्रमी होना चाहिए और अपने कार्य सावधानी के साथ उचित रूप से करने चाहिए क्योंकि कार्य से ही मनुष्य सम्मानित होता है। हम सब को ऐसे कार्य करने चाहिए जो स्वयं हमारे लिए तथा दूसरों के लिए भी लाभदायक हों। परमेश्वर ने कार्य हमें आशीष के रूप में प्रदान किया है और वह उन बच्चों से प्रेम रखता है जो [illegible] पारिवारिक कार्यों में हाथ बटाते हैं [illegible] पिता का भार हल्का करते हैं। ऐसे बच्चे अपने परिवार [illegible] के लिए भी आशीष का कारण बनते हैं।

जो युवक युवतियां अपने कार्यों द्वारा परमेश्वर [illegible] का प्रयोग करते हैं और जो उचित [illegible] उचित होते हैं, संसार के लिए उपयोगी सिद्ध [illegible] वहां अपना स्थान बना कर उच्च [illegible]



# संघर्ष के दिन

यहूदी शिक्षकों ने लोगों के लिए अनेक नियम बना रखे थे और वे उनसे ऐसे कार्य करने को कहते थे जिनकी परमेश्वर ने आज्ञा नहीं दी थी। यहां तक कि बालक-बालिकाओं को भी इन नियमों को सीख कर उनका पालन करना होता था। परन्तु यीशु ने रब्बियों की शिक्षा को सीखने का प्रयास नहीं किया। वह इन शिक्षकों के प्रति असम्मान प्रकट करने में विशेष सावधान रहता था, परन्तु वह पवित्र शास्त्र का अध्ययन करता और परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करता था। प्रायः लोग उसकी निन्दा करते रहते थे क्योंकि वह वैसे कार्य नहीं करता था जिनको दूसरे लोग किया करते थे। फिर वह बाइबल द्वारा उन पर स्पष्ट कर देता था कि उचित क्या है।

यीशु सदा ही दूसरों को प्रसन्न रखने का प्रयास करता था। चूंकि वह नम्र तथा दयालु स्वभाव का नवयुवक था इसलिए रब्बी उससे अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करवाने की आशा लगाए रहते थे। परन्तु वे इस में पूर्णतया असफल रहे। जब वे उससे अपने नियमों के पालन का अनुरोध करते थे तो वह उनसे प्रश्न करता था कि बाइबल की इस विषय में क्या शिक्षा थी। जो कुछ बाइबल में लिखा होता था, वह वही करता था।

इससे रब्बी क्रोधित हो उठे। उनको ज्ञान था कि उनकी शिक्षाएं बाइबल की शिक्षाओं के प्रतिकूल हैं और फिर भी यीशु द्वारा उनका पालन न किए जाने के कारण वे उससे क्रुद्ध थे। उन्होंने इस विषय पर उसके माता-पिता से उसकी शिकायत की, और यीशु को दोषी ठहराया गया जिसको सहन करना कठिन था।

यीशु के भाई रब्बियों का पक्ष लेते थे, उनका कहना था कि इन शिक्षकों के शब्दों का, परमेश्वर के शब्दों के समान आदर किया जाना चाहिए। वे लोगों के नेताओं से स्वयं को उच्च समझने के लिए यीशु की निन्दा किया करते थे।

रब्बी दूसरे लोगों से स्वयं को उच्च समझते थे और साधारण लोगों से नहीं मिलते-जुलते थे। निर्धनों तथा अशिक्षित लोगों को वे तुच्छ समझते थे। यहां तक कि वे रोगी तथा दुर्बल व्यक्तियों की पूर्णतया उपेक्षा कर देते थे।

यीशु ने प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम किया और उसमें अपनी रुचि प्रगट की। जो भी दीन-दुखी उससे मिला, उसने उसकी सहायता करने का प्रयत्न किया। उसके पास लोगों को देने के लिए अधिक धन नहीं होता था परन्तु वह दूसरों की सहायता करने के लिए स्वयं भूखा रह जाता था। जब उसके भाई दीन-दुखिया से कटु वचन बोलते थे तो वह उन्हीं लोगों के पास जा कर उनसे नम्रता से बात

कर उनको प्रोत्साहित करता था। जो लोग भूखे-प्यासे होते थे, वह उनको अपना ठंडा पानी तथा अपना भोजन खिला कर सन्तुष्ट कर देता था।

इन कार्यों से उसके भाई उससे अप्रसन्न रहते थे। वे उसे धमका कर डराने का प्रयास करते थे परन्तु वह जो कुछ परमेश्वर ने कहा था, वही करता था और सदा ही उचित कार्य करता रहता था।

यीशु को अनेक प्रकार की परीक्षाओं का सामना करना पड़ा। शैतान सदा ही उस पर प्रबल होने की घात में बैठा रहता था। यदि वह यीशु से एक भी अनुचित कार्य करवाने में सफल हो जाता या उससे एक भी अनुपयुक्त शब्द कहलवाने में सफल हो जाता तो वह फिर मुक्तिदाता न रह जाता और समस्त संसार नष्ट हो जाता। शैतान इस तथ्य से परिचित था, इसीलिए वह यीशु को पाप में डालने का भरसक प्रयत्न किया करता था। मुक्तिदाता की सुरक्षा के लिए स्वर्गदूत सदा उपस्थित रहते थे, फिर भी अन्धकार की शक्तियों से उसका निरन्तर संघर्ष होता रहता था। हम में से एक को भी वैसी भयानक परीक्षाओं का सामना नहीं करना पड़ा जैसा कि उसको करना पड़ा था।

परन्तु प्रत्येक परीक्षा के लिए उसका एक ही उत्तर होता था: "लिखा है।" अपने भाइयों के अनुचित कार्यों की भी उसने निन्दा नहीं की परन्तु उनको बताया कि परमेश्वर इस विषय में क्या कहता है।

नासरत बहुत दुष्ट नगर था, वहां के नवयुवक तथा बच्चे यीशु से अपने ही जैसे दुष्कर्म करने के लिए निरन्तर कहते रहते थे। वह आकर्षक तथा प्रसन्नचित्त युवक था इसलिए उनको उसकी संगति प्रिय लगती थी। परन्तु उसके ईश्वरीय सिद्धान्तों ने उनके क्रोध को

भड़का दिया था। उसे प्रायः अनुचित कार्य न करने के कारण डरपोक तथा कायर कहा जाता था। छोटी छोटी बातों पर ध्यान आकर्षित करने के कारण उसका उपहास किया जाता था। इन सबका उसके पास यही उत्तर होता था, यह लिखा है, "परमेश्वर का भय बुद्धि का मूल है और बुराई से परे रहना ही ज्ञान है।" १

यीशु ने अपने अधिकारों के लिए कभी विवाद नहीं किया। जब उसके साथ कटु व्यवहार किया गया तो उसने धैर्यपूर्वक उसे सहन किया। यह चूंकि सहज ही भलाई करने पर सहमत हो जाता था और वाद-विवाद भी नहीं करता था, इसलिए प्रायः उसके कार्यों को अनावश्यक ही कठिन बना दिया जाता था फिर भी वह निरुत्साहित नहीं होता था क्योंकि उसे ज्ञात था कि परमेश्वर उसे देख कर मुस्करा रहा है।

उसे सबसे अधिक प्रसन्नता एकान्त में परमेश्वर के साथ रहने से होती थी। जब वह अपना कार्य समाप्त कर देता था तो वह ध्यान करने के लिए खेतों तथा हरी घाटियों में या पहाड़ पर परमेश्वर से प्रार्थना करने चला जाता था। वह चातक पक्षी को अपने रचयिता की स्तुति में गान करते हुए सुनता था और स्वयं भी उसके साथ ही परमेश्वर की स्तुति के गीत गाने लगता था। स्तुति गान करते करते भोर का प्रकाश उदय हो जाता था। भोर को सूर्योदय से पहले सदा ही वह किसी निर्जन स्थान में पाया जाता था। यहां उसे बाइबल का अध्ययन करने तथा परमेश्वर के विषय में विचार करते हुए देखा जाता था। इन स्थानों से शान्ति प्राप्त करने के पश्चात् वह प्रतिदिन अपना कर्तव्य का पालन करने के लिए लिए लौट आता था और परिश्रम तथा धैर्य का उदाहरण प्रस्तुत करता था।

---

१ अय्यूब २८ २८

वह जहां भी होता था, उसकी उपस्थिति स्वर्गदूतों को निकट ले आती प्रतीत होती थी। उसके शुद्ध तथा पवित्र जीवन का प्रभाव सभी वर्गों के लोग अनुभव करते थे। वह सभी लोगों से मिलता-जुलता था। उसकी भेंट क्रूर, विचारहीन, दुर्जन, अन्यायी महसूल लेने वालों, अपव्ययी, अधर्मी सामरियों, मूर्तिपूजक सैनिकों तथा अशिक्षित किसानों से होती रहती थी, परन्तु उसके शब्द सभी के लिए सहानुभूति से पूर्ण होते थे। उसने थके हुए लोगों को देखा जो कि भारी बोझ उठाने पर बाध्य कर दिए गए थे। उसने उनका भार उठाने में उनकी सहायता की और उनको परमेश्वर के प्रेम, भलाई तथा दयालुता की शिक्षा दी जो उसने स्वयं प्रकृति से सीखी थी।

उसने उनको अपने गुणों पर दृष्टिपात करने की शिक्षा दी और उनको बताया कि यदि वे अपने गुणों का सदुपयोग करें तो उनको अनन्त आशीषें प्राप्त हो सकती हैं। उसने अपना उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उनको सिखाया कि जीवन का प्रत्येक क्षण बहुमूल्य है और उसको भले कामों में प्रयोग किया जाना चाहिए। उसने किसी मानव को तुच्छ नहीं समझा परन्तु अज्ञानी और क्रूर व्यक्ति को भी प्रोत्साहन दे कर ऊपर उठाने का प्रयत्न किया। उसने ऐसे लोगों को बताया कि परमेश्वर उनसे अपनी सन्तान के समान प्रेम करता है और उनका चरित्र भी उत्तम बन सकता है।

इस प्रकार शान्त अवस्था में यीशु ने अपने बाल्यकाल से ही दूसरों की भलाई के लिए कार्य किया। उसके विद्वान शिक्षक तथा उसके भाई भी उसको इस कार्य को करने से नहीं रोक सके। उसने जीवन के अभिप्राय को सच्चाई के साथ स्पष्ट किया क्योंकि वह संसार की ज्योति बनने जा रहा था।



# बपतिस्मा

जब मसीह के सार्वजनिक सेवा-कार्य करने का समय आ गया, तो सर्वप्रथम वह यरदन नदी में गया और उसने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।

यूहन्ना को मुक्तिदाता के लिए मार्ग प्रशस्त करने के लिए भेजा गया था। उसने जंगल में प्रचार करते हुए कहा था, "परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है, मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" १ उसका उपदेश सुनने के लिए विशाल भीड़ एकत्रित हो जाती थी। और लोग अपने पापों को अंगीकार करके उससे यरदन नदी में बपतिस्मा लेते थे।

परमेश्वर ने यूहन्ना को मालूम करा दिया था कि किसी दिन मसीह उसके पास आकर उससे बपतिस्मा देने का अनुरोध करेगा।

---

मरकुस १:१५

उसने यूहन्ना से यह प्रतिज्ञा भी की थी कि उसे एक चिन्ह दिया जाएगा जिससे वह समझ सके कि मसीह कौन है। जब यीशु उसके पास पहुंचा तो यूहन्ना ने उसके मुख पर कुछ विशेष चिन्ह देखे और उसके पवित्र जीवन का आभास पा कर उससे कहा, "मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है।?"

"यीशु ने उसको यह उत्तर दिया कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।"[1] और जब उसने यह कहा तो उसके मुखमण्डल पर वैसी ही स्वर्गीय ज्योति दिखाई दी जैसी कि शमौन ने देखी थी।

तो यूहन्ना मुक्तिदाता को यरदन नदी के स्वच्छ जल में ले गया और वहां उसने लोगों के सामने उसको बपतिस्मा दिया।

यीशु ने बपतिस्मा इसलिए नहीं लिया कि उसे पापों से पश्चाताप करने की आवश्यकता थी, क्योंकि उसने कभी पाप नहीं किया था। उसने हमारे लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

जब वह पानी से निकल कर ऊपर आया तो उसने घुटने टेक कर प्रार्थना की। फिर आकाश खुल गया और महिमा की किरणें उस पर चमकने लगीं, "और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा।"[2] उसका मुख तथा शरीर अब स्वर्गीय ज्योति से प्रकाशमान हो उठा।

फिर यह आकाशवाणी हुई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।"[3]

मसीह पर परमेश्वर की जो महिमा आ कर ठहरी वह हमारे लिए उसके प्रेम का प्रतीक थी। मुक्तिदाता हमारे लिए एक

---

१ मत्ती ३:१४, १५

२ मत्ती ३:१६ ३ मत्ती ३:१७

उदाहरण बन कर आया; और जिस प्रकार परमेश्वर ने निश्चित रूप में मसीह की प्रार्थना सुनी, उसी प्रकार वह हमारी प्रार्थना सुनेगा। अत्यन्त तुच्छ, अत्यन्त पापी तथा अत्यन्त घृणित मनुष्य भी अब उसके द्वारा परमेश्वर के निकट पहुंच सकते हैं। जब हम यीशु के नाम में परमेश्वर पिता के निकट आते हैं तो वही स्वर्गीय वाणी हमें भी सुनाई देती है जो यीशु को सुनाई दी थी : "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं।"

कहाँ जा रहा था सो वह उसकी परीक्षा करने के लिए वहीं पहुंच गया।

जब यीशु यरदन से लौटा तो उसका चेहरा परमेश्वर की महिमा से प्रकाशमान हो रहा था परन्तु जंगल में प्रविष्ट होते ही वह महिमा की ज्योति अन्तर्धान हो गई थी। उस पर संसार के पापों का भार लदा हुआ था, उसके चेहरे से ऐसा शोक और व्यथा प्रकट हो रही थी जैसी मनुष्य ने कभी अनुभव नहीं की। वह पापियों के लिए ऐसा कष्ट सहन कर रहा था।

आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में वर्जित फल को खा कर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया था। उनकी अवज्ञाकारिता में पाप, दुःख तथा मृत्यु आये। मसीह आज्ञाकारिता का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए संसार में आया। जंगल में चालीस दिन तक उपवास करने के पश्चात्, अपने पिता की इच्छा से पृथक हो जाने की आशंका में उसने भोजन तक प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया।

हमारे आदि माता-पिता के सन्मुख जो परीक्षाएं आयीं उन में प्रमुख परीक्षा भूख को शान्त करना था। इस लम्बे उपवास द्वारा यीशु को यह स्पष्ट करना था कि भूख को भी नियंत्रित किया जा सकता है।

शैतान मनुष्य की इसके द्वारा परीक्षा इसलिए करता है कि भूख से मानव शरीर दुर्बल हो जाता है और मस्तिष्क पर भी आवरण छा जाता है। तब शैतान समझ लेता है कि इसके द्वारा मनुष्य को सरलता से छला जा कर नष्ट किया जा सकता है। परन्तु मसीह

---

दाहिनी ओर के चित्र में– "यीशु ने उससे (शैतान) कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।"



कहाँ जा रहा था सो वह उसकी परीक्षा करने के लिए वहीं पहुंच गया।

जब यीशु यरदन से लौटा तो उसका चेहरा परमेश्वर की महिमा से प्रकाशमान हो रहा था परन्तु जंगल में प्रविष्ट होते ही वह महिमा की ज्योति अन्तर्धान हो गई थी। उस पर संसार के पापों का भार लदा हुआ था, उसके चेहरे से ऐसा शोक और व्यथा प्रकट हो रही थी जैसी मनुष्य ने कभी अनुभव नहीं की। वह पापियों के लिए ऐसा कष्ट सहन कर रहा था।

आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में वर्जित फल को खा कर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया था। उनकी अवज्ञाकारिता में पाप, दुःख तथा मृत्यु आयें। मसीह आज्ञाकारिता का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए संसार में आया। जंगल में चालीस दिन तक उपवास करने के पश्चात्, अपने पिता की इच्छा से पृथक हो जाने की आशंका में उसने भोजन तक प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया।

हमारे आदि माता-पिता के सन्मुख जो परीक्षाएं आयीं उन में प्रमुख परीक्षा भूख को शान्त करना था। इस लम्बे उपवास द्वारा यीशु को यह स्पष्ट करना था कि भूख को भी नियंत्रित किया जा सकता है।

शैतान मनुष्य की इसके द्वारा परीक्षा इसलिए करता है कि भूख से मानव शरीर दुर्बल हो जाता है और मस्तिष्क पर भी आवरण छा जाता है। तब शैतान समझ लेता है कि इसके द्वारा मनुष्य को सरलता से छला जा कर नष्ट किया जा सकता है। परन्तु मसीह

---

दाहिनी ओर के चित्र में– "यीशु ने उससे (शैतान) कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।"

कहाँ जा रहा था सो वह उसकी परीक्षा करने के लिए वहीं पहुंच गया।

जब यीशु यरदन से लौटा तो उसका चेहरा परमेश्वर की महिमा से प्रकाशमान हो रहा था परन्तु जंगल में प्रविष्ट होते ही वह महिमा की ज्योति अन्तर्धान हो गई थी। उस पर संसार के पापों का भार लदा हुआ था, उसके चेहरे से ऐसा शोक और व्यथा प्रकट हो रही थी जैसी मनुष्य ने कभी अनुभव नहीं की। वह पापियों के लिए ऐसा कष्ट सहन कर रहा था।

आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में वर्जित फल को खा कर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया था। उनकी अवज्ञा-कारिता में पाप, दुःख तथा मृत्यु आये। मसीह आज्ञाकारिता का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए संसार में आया। जंगल में चालीस दिन तक उपवास करने के पश्चात्, अपने पिता की इच्छा से पृथक हो जाने की आशंका में उसने भोजन तक प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया।

हमारे आदि माता-पिता के सन्मुख जो परीक्षाएं आयीं उन में प्रमुख परीक्षा भूख को शान्त करना था। इस लम्बे उपवास द्वारा यीशु को यह स्पष्ट करना था कि भूख को भी नियंत्रित किया जा सकता है।

शैतान मनुष्य की इसके द्वारा परीक्षा इसलिए करता है कि भूख से मानव शरीर दुर्बल हो जाता है और मस्तिष्क पर भी आवरण छा जाता है। तब शैतान समझ लेता है कि इसके द्वारा मनुष्य को सरलता से छला जा कर नष्ट किया जा सकता है। परन्तु मसीह

दाहिनी ओर के चित्र में– "यीशु ने उससे (शैतान) कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।"

का उदाहरण हमें यह शिक्षा देता है कि प्रत्येक अनुचित इच्छा पर मनुष्य प्रबल हो सकता है। हमारी भूख हम पर शासन नहीं कर सकती; उस पर हमारा नियंत्रण होना चाहिए।

जब शैतान प्रथम बार मसीह पर प्रगट हुआ तो वह ज्योति का दूत प्रतीत हो रहा था। उसने स्वयं को स्वर्गीय संदेशवाहक बताया। उसने मसीह से कहा कि पिता परमेश्वर की उसके प्रति कदापि यह इच्छा नहीं है कि इस प्रकार का कष्ट सहन करे। उसने कष्ट सहन करने पर सहमति प्रगट कर दी है और यही पर्याप्त है।

जब यीशु भूख की पीड़ाएं सहन कर रहा था तो शैतान ने उससे कहा :

"यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इन पत्थरों से कह दे कि ये रोटियां बन जाएं?" १

परन्तु यीशु अपने जीवन द्वारा हमारे लिए एक आदर्श स्थापित करने के लिए आया था, इसलिए उसको भी वही कष्ट सहन करने थे जो हम करते हैं; वह अपनी भलाई के लिए आश्चर्य कर्म भी नहीं कर सकता था। उसके आश्चर्य कर्म तो सदा ही दूसरों की भलाई के लिए होते थे। शैतान की मांग के उत्तर में उसने कहा :

"लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" २

इस प्रकार उसने स्पष्ट कर दिया कि अपने लिए भोजन की व्यवस्था करने की अपेक्षा, परमेश्वर के वचन के पालन का कहीं अधिक महत्व है। जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं उनके साथ परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा है कि उनको इस जीवन की

---

१ मत्ती ४:३ २ मत्ती ४:४

सभी आवश्यक वस्तुएं दी जाएंगी तथा आनेवाले जीवन की भी उसके साथ प्रतिज्ञा की गई है।

शैतान इस प्रथम तथा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परीक्षा में मसीह पर प्रबल न हो सका, वह फिर उसे यरूशलेम के मन्दिर के कंगूरे पर ले गया और उससे कहा:

"यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों को पत्थर से ठेस लगे।" मत्ती ४:६।

शैतान ने यहां परमेश्वर का वचन उद्धृत करते हुए मसीह के उदाहरण का अनुसरण किया। परन्तु यह प्रतिज्ञा उनके लिए नहीं है जो जान-बूझ कर खतरा मोल लेते हैं। परमेश्वर ने मसीह को यह आज्ञा नहीं दी थी कि वह अपने आप को कंगूरे से नीचे गिरा दे। यीशु शैतान को प्रसन्न करने के लिए ऐसा नहीं कर सकता था, उसने कहा,

"यह भी लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।" हमें अपने स्वर्गीय पिता की देख-भाल पर पूरा भरोसा होना चाहिए परन्तु हमें उस स्थान पर नहीं जाना चाहिए जहां वह हमें नहीं भेजता। हमें वह कार्य नहीं करना चाहिए जिसके लिए उसने हमें वर्जित किया है।

चूंकि परमेश्वर करुणानिधान है और क्षमा करने के लिए तत्पर है, इसलिए कुछ लोग कहते हैं कि अनाज्ञाकारिता की अवस्था में भी

वे सुरक्षित हैं। परन्तु यह कल्पना मात्र है। परमेश्वर उनके पाप क्षमा कर देता है जो उससे क्षमा मांग कर पाप को त्याग देते हैं। परन्तु जो जान-बूझ कर पाप करते रहते हैं; वह उनको आशीष प्रदान नहीं करेगा।

शैतान अब अपने वास्तविक रूप में उसके सन्मुख आया। वह अन्धकार के राजकुमार के रूप में प्रकट हुआ। वह यीशु को एक ऊंचे पर्वत के शिखर पर ले गया और उसने उसे संसार के समस्त राज्य दिखाए। नगरों पर सूर्य की अद्भुत किरणें चमक रही थीं, संगमरमर के बने महलों में चहल-पहल दिखाई दे रही थी। सुन्दर वाटिकाएं तथा उद्यान फल-फूलों से लदे हुए भव्य दिखाई दे रहे थे। खेत तथा अंगूरों के बाग भी दिखाई दे रहे थे, तब शैतान ने कहा :

" यदि तू गिर कर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।" मत्ती ४:९।

एक क्षण तक यीशु ने उस दृश्य को देखा। फिर उसने उस ओर से अपना मुख फेर लिया। शैतान ने आकर्षक ज्योति में संसार को उसके सन्मुख प्रस्तुत किया था, परन्तु मुक्तिदाता ने इस ऊपरी सुन्दरता के भीतर देखा। उसने संसार की दुष्टता तथा पाप और परमेश्वर से पृथकता को देखा। ये सभी कष्ट मनुष्यों द्वारा शैतान की उपासना और परमेश्वर से पृथक हो जाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए थे।

मसीह का हृदय इस लालसा से पूर्ण था कि उन सब का उद्धार कर दे जो भटक गए हैं। वह अदन की वाटिका से भी अधिक भव्य स्थान संसार को उपलब्ध कराने के लिए लालायित था। वह मनुष्य को परमेश्वर के मार्ग पर ले आने के लिए उत्सुक था। मनुष्यों के लिए ही वह इन परीक्षाओं का सामना कर रहा था। उसको इन

पर प्रबल तथा विजयी होना था जिससे वे भी परीक्षाओं पर विजयी हो सकें और स्वर्गदूतों की समानता प्राप्त कर सकें और परमेश्वर की सन्तान कहलाने के अधिकारी बन सकें।

शैतान ने उनसे गिर कर प्रणाम करने की मांग प्रस्तुत की, मसीह ने उत्तर दिया :

"हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू अपने प्रभु परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।" मत्ती ४.१०।

संसार के प्रति प्रेम, अधिकार की कामना और जीवन का गर्व—सभी कुछ जो मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करे उसको परमेश्वर की उपासना करने से रोक देता है, इस अन्तिम परीक्षा में मसीह के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। शैतान ने सांसारिक धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य मसीह को देने की प्रतिज्ञा की यदि वह दुष्टता के सिद्धान्तों को स्वीकार कर ले। इसी प्रकार शैतान आज भी अनुचित कार्यों द्वारा लाभ प्राप्त करने के लिए मनुष्यों को प्रेरित करता है।

वह हमारे कान में फुसफुसाते हुए कहता है, "इस संसार में सफलता प्राप्त करने के लिए तुमको मेरी सेवा करनी चाहिए। सत्य का पालन करने के लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। मेरे सुझाव का पालन करो और मैं तुमको धन-सम्पत्ति, आदर-सम्मान और प्रसन्नता दूंगा।' उसके सुझावों को स्वीकार करने से हम शैतान की उपासना करते हैं। इससे केवल हमें विनाश प्राप्त होता है।

मसीह ने हमें बता दिया है कि परीक्षा के समय हमें क्या करना चाहिए जब कि उसने शैतान से कहा, "दूर हो जा," परीक्षा देने वाला इस आज्ञा की अवहेलना न कर सका।

वे सुरक्षित हैं। परन्तु यह कल्पना मात्र है। परमेश्वर उनके पाप क्षमा कर देता है जो उससे क्षमा मांग कर पाप को त्याग देते हैं। परन्तु जो जान-बूझ कर पाप करते रहते हैं; वह उनको आशीष प्रदान नहीं करेगा।

शैतान अब अपने वास्तविक रूप में उसके सन्मुख आया। वह अन्धकार के राजकुमार के रूप में प्रकट हुआ। वह यीशु को एक ऊंचे पर्वत के शिखर पर ले गया और उसने उसे संसार के समस्त राज्य दिखाए। नगरों पर सूर्य की अद्‌भुत किरणें चमक रही थीं, संगमरमर के बने महलों में चहल-पहल दिखाई दे रही थी। सुन्दर वाटिकाएं तथा उद्यान फल-फूलों से लदे हुए भव्य दिखाई दे रहे थे। खेत तथा अंगूरों के बाग भी दिखाई दे रहे थे, तब शैतान ने कहा :

" यदि तू गिर कर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।" मत्ती ४:९।

एक क्षण तक यीशु ने इस दृश्य को देखा। फिर उसने उस ओर से अपना मुख फेर लिया। शैतान ने आकर्षक ज्योति में संसार को उसके सन्मुख प्रस्तुत किया था, परन्तु मुक्तिदाता ने इस ऊपरी सुन्दरता के भीतर देखा। उसने संसार की दुष्टता तथा पाप और परमेश्वर से पृथकता को देखा। ये सभी कष्ट मनुष्यों द्वारा शैतान की उपासना और परमेश्वर से पृथक हो जाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए थे।

मसीह का हृदय इस लालसा से पूर्ण था कि उन सब का उद्धार कर दे जो भटक गए हैं। वह अदन की वाटिका से भी अधिक भव्य स्थान संसार को उपलब्ध कराने के लिए लालायित था। वह मनुष्य को परमेश्वर के मार्ग पर ले आने के लिए उत्सुक था। मनुष्यों के लिए ही वह इन परीक्षाओं का सामना कर रहा था। उसको इन

पर प्रबल तथा विजयी होता था जिससे वे भी परीक्षाओं पर विजयी हो सकें और स्वर्गदूतों की समानता प्राप्त कर सकें और परमेश्वर की सन्तान कहलाने के अधिकारी बन सकें।

शैतान ने उससे गिर कर प्रणाम करने की मांग प्रस्तुत की, मसीह ने उत्तर दिया :

"हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू अपने प्रभु परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।" मत्ती ४.१०।

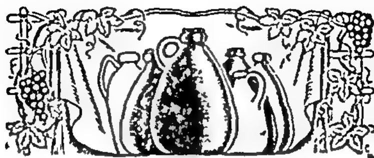
संसार के प्रति प्रेम, अधिकार की कामना और जीवन का घमंड—सभी कुछ जो मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करके उसको परमेश्वर की उपासना करने से रोक देता है, इस अन्तिम परीक्षा में मसीह के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। शैतान ने सांसारिक धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य मसीह को देने की प्रतिज्ञा की यदि वह दुष्टता के सिद्धान्तों को स्वीकार कर ले। इसी प्रकार शैतान आज भी अनुचित कार्यों द्वारा लाभ प्राप्त करने के लिए मनुष्यों को प्रेरित करता है।

वह हमारे कान में फुसफुसाते हुए कहता है, "इस संसार में सफलता प्राप्त करने के लिए तुमको मेरी सेवा करनी चाहिए। सत्य का पालन करने के लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। मेरे सुझाव का पालन करो और मैं तुमको धन-सम्पत्ति, आदर-सम्मान और प्रसन्नता दूंगा।" उसके सुझावों को स्वीकार करने से हम शैतान की उपासना करते हैं। इससे केवल हमें विनाश प्राप्त होता है।

मसीह ने हमें बता दिया है कि परीक्षा के समय हमें क्या करना चाहिए जब कि उसने शैतान से कहा, "दूर हो जा," परीक्षा करने वाला इस आज्ञा की अवहेलना न कर सका।

विद्रोहियों का प्रमुख नेता घृणा, क्रोध तथा व्याकुलता से पूर्ण हो कर संसार के मुक्तिदाता की उपस्थिति से भाग निकला। प्रतिरोध कुछ समय के लिए समाप्त हो गया। आदम जिस परीक्षा में असफल रहा था, मसीह उसमें पूर्ण रूप से विजयी हुआ।

सो इस प्रकार हम परीक्षाओं को रोकने में सफल हो सकते हैं। प्रभु हम से कहता है, "शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा, परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।" याकूब ४ : ७, ८।



# प्रारम्भिक सेवा-काल

जंगल से मसीह फिर यरदन नदी की ओर आया जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा द्वारा प्रचार कर रहा था। उस समय यरूशलम के अधिकारियों द्वारा उसके पास कुछ व्यक्ति भेजे गए थे जो उसके प्रचार कार्य तथा बपतिस्मा के उसके अधिकार के विषय में प्रश्न कर रहे थे। वे उससे पूछ रहे थे कि क्या वह मसीह है, या एलिय्याह या 'वह भविष्यद्वक्ता' अर्थात् मूसा है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर में उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।" फिर उन्होंने प्रश्न किया।

"फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजने वालों को उत्तर दें, तू अपने विषय में क्या कहता है?

उसने उत्तर दिया, "मैं जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है जंगल में पुकारने वाले का शब्द हूँ कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।" यूहन्ना १:२२-२३।

प्राचीन युग में जब एक राजा एक देश से दूसरे देश की यात्रा करता था तो उसके रथ के आगे मार्ग सुधारने के कुछ व्यक्तियों को भेजा जाता था। उनको पेड़ काटने होते थे, मार्ग के पत्थर हटाने होते थे और गड्ढों को भरना पड़ता था ताकि राजा का मार्ग सीधा बन सके। सो जब स्वर्ग का राजा यीशु इस पृथ्वी पर आने वाला था तो उसका मार्ग सुधारने के लिए यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को भेजा गया ताकि वह लोगों को अपने पापों से पश्चाताप करने की शिक्षा दे।

जब यूहन्ना यरूशलेम से आए दूतों के प्रश्न का उत्तर दे रहा था तो उसने यीशु को नदी के तट पर खड़े हुए देखा। उसका चेहरा चमकने लगा और उसने अपने हाथ फैलाते हुए कहा :

"तुम्हारे बीच एक व्यक्ति खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते; अर्थात मेरे बाद आने वाला है, जिसकी जूती के बन्ध, मैं खोलने योग्य नहीं।" यूहन्ना १:२६, २७।

लोगों पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा, मसीहा उनके बीच में खड़ा था। वे उत्सुकता से उस व्यक्ति को खोजने लगे जिसके विषय में यूहन्ना ने कहा था। परन्तु यीशु भीड़ में मिल गया था इसलिए लोग उसे न देख सके।

दूसरे दिन फिर यूहन्ना ने यीशु को देखा और उसकी ओर संकेत करते हुए चिल्लाकर कहा, "देखो, परमेश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप उठा ले जाता है।"

फिर यूहन्ना ने लोगों को वह चिन्ह बताया जो मसीह के बपतिस्मे के समय उसने देखा था, "मैंने देखा और गवाही दी है," फिर उसने कहा, "कि यही परमेश्वर का पुत्र है।" यूहन्ना १:२९, ३४।

आनन्दयुक्त भय तथा आश्चर्य चकित अवस्था में सुननेवालों ने यीशु की ओर देखा। वे परस्पर एक दूसरे से पूछने लगे क्या यह मसीह है?

उन्होंने देखा कि यीशु में सांसारिक वैभव या महानता का कोई चिह्न नहीं है। उसके वस्त्र सादे थे जैसे कि निर्धन लोग पहनते हैं। परन्तु उसके धीर तथा भरे हुए चेहरे पर कुछ ऐसी विशेषता थी जिसने इनके हृदयों को आन्दोलित कर दिया था। उसके चेहरे पर अधिकार तथा प्रतिष्ठा विद्यमान थी। उसकी दृष्टि तथा मुखाकृति से अलौकिक स्नेह तथा अकथनीय प्रेम प्रगट हो रहा था।

परन्तु यरूशलेम से जो दूत भेजे गए थे वे यीशु की ओर आकर्षित नहीं हुए। यूहन्ना ने ऐसे शब्द नहीं कहे थे जिनको सुनने की उनके हृदय में इच्छा थी। वे मसीहा को एक महान विजेता के रूप में प्रगट होने की आशा लगाए बैठे थे। उन्होंने देखा कि यीशु ऐसा कुछ नहीं कर रहा था, सो वे निराश हो कर यरूशलेम लौट गए।

दूसरे दिन फिर यूहन्ना ने यीशु को देखा और फिर यह चिल्ला उठा। "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।" यूहन्ना के दो शिष्य उसके निकट खड़े हुए थे, वे यीशु के पीछे हो लिए। उन्होंने उसकी शिक्षाओं को सुना और उसके शिष्य बन गए। इन दोनों शिष्यों में से एक इन्द्रियास तथा दूसरा यूहन्ना था। इन्द्रियास शीघ्र ही अपने भाई शमौन को यीशु के पास ले आया जिसका नाम उसने पतरस रखा। दूसरे दिन गलील को जाते समय मार्ग में मसीह ने एक अन्य शिष्य को चुन लिया जिसका नाम फिलिप्पुस था। जैसे ही फिलिप्पुस ने उससे भेंट की, वह अपने मित्र नतनएल को ले आया।

इस रीति से मसीह का पृथ्वी पर महान कार्य आरम्भ हुआ। उसने एक के बाद एक शिष्य को बुलाया। एक अपने भाई को ले कर आया और दूसरा अपने मित्र को। ऐसा ही मसीह के प्रत्येक अनुयायी का

करना चाहिए। जैसे ही उसे यीशु का ज्ञान हो जाता है, उसे दूसरों को बताना चाहिए कि उसे कैसा आश्चर्यजनक मित्र मिल गया है। यह कार्य सभी छोटे-बड़ों द्वारा किया जाना चाहिए।

गलील के काना में यीशु अपने शिष्यों सहित एक विवाह के भोज में सम्मिलित हुआ। उपस्थित जनों के सन्मुख वहां उसकी आश्चर्यजनक शक्ति का प्रदर्शन होना था।

ऐसे अवसरों पर उस देश में दाखरस पिलाने की प्रथा थी। भोज समाप्त होने से पहले दाखरस घट गया। दाखरस का अभाव अतिथि-सत्कार का अभाव माना जाता था और इसको बहुत बड़ा अनादर समझा जाता था। दाखरस के अभाव के विषय में यीशु को सूचित कर दिया गया। उसने नौकरों को आज्ञा दी कि वे पत्थर के सभी छः बड़े मटकों को पानी से भर दें, फिर उसने कहा, "अब निकाल कर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।" यूहन्ना २:८।

पानी अब दाखरस बन गया था। यह दाखरस पहले दिए गए दाखरस से कहीं अधिक उत्तम था और यह सभी के लिए पर्याप्त भी था।

इस आश्चर्यकर्म को करने के पश्चात् ही यीशु वहां से चला गया था। उसके चले जाने के पश्चात् ही अतिथियों को ज्ञात हुआ कि उसने क्या किया था।

विवाह के भोज के अवसर पर मसीह का यह उपहार एक चिन्ह था। जल बपतिस्मे का प्रतीक है और दाखरस उसके रक्त का प्रतिनिधित्व करता है जो कि संसार के लिए बहाया जाने वाला था।

यीशु ने जो दाखरस बनाया वह उत्तेजित करने वाली मदिरा नहीं थी। ऐसी मदिरा नशा उत्पन्न करके दुराचार का कारण बनती है और इसका प्रयोग करने के लिए परमेश्वर ने हमें वर्जित किया है। "दाखमधु ठट्ठा करने वाला और मदिरा हल्ला मचाने वाली है; जो

कोई उसके कारण भूल करता है, वह बुद्धिमान नहीं।" १ "क्योंकि अन्त में वह सर्प की नाईं डसता है और करैत के समान काटता है।" नीतिवचन २० १, २३ ३२।

इस भोज में जो दाखरस प्रयोग किया गया वह शुद्ध तथा मीठे अंगूरों का रस था। यह वैसा ही रस था जिसके विषय में यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है, "जिस भांति दाख के किसी गुच्छे में जब नया दाखमधु भर आता है ...... क्योंकि उसमें आशीष है।" यशायाह ६५ ८।

विवाह में सम्मिलित होकर यीशु ने यह प्रकट किया कि ऐसे अवसरों पर एक दूसरे से भेंट करना आवश्यक है। वह लोगों को प्रसन्न देखना चाहता था। प्रायः वह उनके घरों में जा कर उनसे भेंट करता था और उनकी चिन्ताओं और व्याकुलताओं के [illegible] में उनकी सहायता किया करता रहता था, और उन पर परमेश्वर के प्रेम तथा उसकी भलाई को स्पष्ट करता रहता था।

यह जहां कहीं भी होता था, सदा ऐसे ही कार्य करता रहता था। जब कभी उसके ईश्वरीय सन्देश को सुनने के लिए हृदय को खोला जाता था, वह मुक्ति के सत्य को उन पर स्पष्ट कर देता था।

एक दिन जब वह सामरिया के देश में होता हुआ आगे जा रहा था तो वह एक कुंए पर विश्राम करने के लिए बैठ गया। उसी समय एक स्त्री कुएं पर जल भरने आई और उसने उससे पीने के लिए जल मांगा।

स्त्री को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि यहूदी सामरी जाति के लोगों से घृणा करते थे। परन्तु मसीह ने उससे कहा कि यदि वह उससे मांगती तो वह उसे पीने के लिए जीवन का जल देता। यह सुनकर स्त्री का आश्चर्य अधिक बढ़ गया। [illegible]

करना चाहिए। जैसे ही उसे यीशु का ज्ञान हो जाता है, उसे दूसरों को बताना चाहिए कि उसे कैसा आश्चर्यजनक मित्र मिल गया है। यह कार्य सभी छोटे-बड़ों द्वारा किया जाना चाहिए।

गलील के काना में यीशु अपने शिष्यों सहित एक विवाह के भोज में सम्मिलित हुआ। उपस्थित जनों के सन्मुख वहां उसकी आश्चर्यजनक शक्ति का प्रदर्शन होना था।

ऐसे अवसरों पर उस देश में दाखरस पिलाने की प्रथा थी। भोज समाप्त होने से पहले दाखरस घट गया। दाखरस का अभाव अतिथि-सत्कार का अभाव माना जाता था और इसको बहुत बड़ा अनादर समझा जाता था। दाखरस के अभाव के विषय में यीशु को सूचित कर दिया गया। उसने नौकरों को आज्ञा दी कि वे पत्थर के सभी छः बड़े मटकों को पानी से भर दें, फिर उसने कहा, "अब निकाल कर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।" यूहन्ना २:८।

पानी अब दाखरस बन गया था। यह दाखरस पहले दिए गए दाखरस से कहीं अधिक उत्तम था और यह सभी के लिए पर्याप्त भी था।

इस आश्चर्यकर्म को करने के पश्चात् ही यीशु वहां से चला गया था। उसके चले जाने के पश्चात् ही अतिथियों को ज्ञात हुआ कि उसने क्या किया था।

विवाह के भोज के अवसर पर मसीह का यह उपहार एक चिन्ह था। जल बपतिस्मे का प्रतीक है और दाखरस उसके रक्त का प्रतिनिधित्व करता है जो कि संसार के लिए बहाया जाने वाला था।

यीशु ने जो दाखरस बनाया वह उत्तेजित करने वाली मदिरा नहीं थी। ऐसी मदिरा नशा उत्पन्न करके दुराचार का कारण बनती है और इसका प्रयोग करने के लिए परमेश्वर ने हमें वर्जित किया है। "दाखमधु ठट्ठा करने वाला और मदिरा हुल्लड़ मचाने वाली है; जो

कोई उसके कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं।" १ "क्योंकि अन्त में वह सर्प की नाईं डसता है और करैत के समान काटता है।" नीतिवचन २०:१; २३:३२।

इस भोज में जो दाखरस प्रयोग किया गया वह शुद्ध तथा मीठे अंगूरों का रस था। यह वैसा ही रस था जिसके विषय में यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है, "जिस भांति दाख के किसी गुच्छे में जब नया दाखमधु भर आता है ... .. क्योंकि उसमें आशीष है।" यशायाह ६५:८।

विवाह में सम्मिलित होकर यीशु ने यह प्रगट किया कि ऐसे अवसरों पर एक दूसरे से भेंट करना आवश्यक है। वह लोगों को प्रसन्न देखना चाहता था। प्रायः वह उनके घरों में जा कर उनसे भेंट करता था और उनकी चिन्ताओं और व्याकुलताओं को भुलाने में उनकी सहायता किया करता रहता था, और उन पर परमेश्वर के प्रेम तथा उसकी भलाई को स्पष्ट करता रहता था।

वह जहां कहीं भी होता था, सदा ऐसे ही कार्य करता रहता था। जब कभी उसके ईश्वरीय सन्देश को सुनने के लिए हृदय को खोला जाता था, वह मुक्ति के सत्य को उस पर स्पष्ट कर देता था।

एक दिन जब वह सामरिया के देश से होता हुआ आगे जा रहा था तो वह एक कुंए पर विश्राम करने के लिए बैठ गया। उसी समय एक स्त्री कुए पर जल भरने आई, और उससे उसने पीने के लिए जल मांगा।

स्त्री को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि यहूदी सामरी जाति के लोगों से घृणा करते थे। परन्तु मसीह ने उससे कहा कि यदि वह उससे मांगती तो वह उसे पीने के लिए जीवन का जल देता, यह सुनकर स्त्री का आश्चर्य अधिक बढ़ गया। तब यीशु ने कहा·

"जो कोई उस जल में से पीएगा, जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्त काल तक प्यासा न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।" यूहन्ना ४:१३, १४।

जीवन-जल का अर्थ पवित्र आत्मा है। जैसे कि एक थके हुए यात्री को शीतल जल की आवश्यकता होती है, वैसे ही हमारे हृदयों को परमेश्वर की आत्मा की आवश्यकता है। वह जो ऐसा जल पीता है, कभी प्यासा न होगा। पवित्र आत्मा हमारे हृदयों में प्रेम उत्पन्न कर देता है। उससे हमारी लालसाएं शान्त हो जाती हैं और हम सांसारिक धन, आदर तथा आमोद प्रमोद की ओर आकर्षित नहीं होते हैं। और इससे हमारे हृदय में ऐसा आनन्द अनुभव होता है जिसको हम दूसरों को भी देना चाहते हैं। यह हमारे हृदय में जल के सोते के समान उमड़ने लगता है और उससे चारों ओर आशीष बह निकलती है।

और जिसके अन्दर परमेश्वर की आत्मा वास करती है, वह मसीह के साथ उसके राज्य में अनन्त काल तक रहेगा। विश्वास के साथ इसको हृदय में ग्रहण करना ही अनन्त जीवन का आरम्भ है।

मसीह ने उस स्त्री को बताया कि यदि वह उससे मांगे तो वह उसे बहुमूल्य आशीष प्रदान करेगा। इसी प्रकार वह हमें भी आशीष देता है। इस स्त्री ने परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया था और मसीह ने उसपर प्रकट कर दिया कि वह उसके जीवन के पापों से परिचित है। परन्तु साथ ही उसने उस पर यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह उसका मित्र है और उससे प्रेम करता है तथा उसके हृदय में उसके प्रति करुणा तथा स्नेह है और यदि वह अपने पापों को त्यागने पर सहमत हो तो परमेश्वर उसे अपनी सन्तान के समान ग्रहण करने को तैयार है।

उसे यह जानकर कितनी प्रसन्नता हुई होगी ! प्रसन्न प्रकट करती हुई वह नगर में पहुंच गई और उसने लोगों से कहा कि वे चल कर यीशु को देखें ।

तो लोग उसके साथ कुए पर आए और उन्होंने उससे कुछ समय तक वहीं रहने का अनुरोध किया । वह उनके साथ दो दिन तक रहा और उसने उनको शिक्षा दी और बहुत लोगों ने उसके वचन को सुना । उन्होंने अपने पापों से पश्चात्ताप किया और उसे अपना मुक्तिदाता स्वीकार करके उस पर विश्वास किया ।

अपने सेवा-काल में मसीह दो बार अपने नगर नासरत में गया । प्रथम बार वह सब्त दिन के यहां के आराधनालय में गया ।

यहां हम मसीहा के कार्यों के विषय में यशायाह की भविष्यवाणी पढ़ते हैं — किस प्रकार वह कंगालों को सुसमाचार सुनाता, दुखियों को सान्त्वना देता, अन्धों को दृष्टि देता तथा कुचले हुए लोगों को छुड़ाता था ।

फिर उसने लोगों को बताया कि यह भविष्यवाणी आज उनके सम्मुख पूरी हुई है । वह ये कार्य स्वयं कर रहा था ।

इन शब्दों को सुनकर सुनने वालों के हृदय आनन्द से भर गए । उन्होंने विश्वास किया कि जिस मुक्तिदाता के आगमन की प्रतिज्ञा की गई थी, वह यीशु ही है । उनके हृदय पवित्र आत्मा की शक्ति से द्रवित हो गए और उन्होंने प्रभु की स्तुति तथा जयजयकार किया ।

फिर उनको स्मरण हो आया कि यीशु किस प्रकार एक बढ़ई के रूप में उनके बीच रहा था । उन्होंने अनेक बार उसको बढ़ई की दुकान में यूसुफ के साथ कार्य करते देखा था । यद्यपि जीवन भर उसने प्रेम तथा दयापूर्ण कार्य किए थे उनको फिर भी विश्वास न हुआ कि यही मसीहा है ।

ऐसे विचारों द्वारा उन्होंने शैतान के लिए अपने मस्तिष्कों को नियंत्रित करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। फिर मुक्तिदाता के विरुद्ध उनके मन में क्रोध उत्पन्न हो गया। वे उसका विरोध करते हुए चिल्लाने लगे और उसको मार डालने का विचार करने लगे।

वे उसे एक ऊंचे पर्वत पर ले गए ताकि उसे ढकेलकर नीचे गिरा दें। परन्तु स्वर्गदूत उसकी सुरक्षा के लिए उपस्थित थे। वह चुपचाप भीड़ में से निकल गया और वे उसे न पा सके। दूसरी बार जब वह नासरत में आया तब भी लोग उसे स्वीकार करने के लिए तैयार न हुए। वह चला गया और फिर कभी नासरत न लौटा।

मसीह ने उन लोगों के लिए कार्य किया जो उसकी सहायता के इच्छुक थे और समस्त स्थानों पर लोगों की भीड़ उसे घेरे रहती थी। जब वह शिक्षा देता तथा चंगाई प्रदान करता था तो लोग आनंदित हो उठते थे। उस समय पृथ्वी पर स्वर्ग आ जाता था और लोग करुणा-निधान मुक्तिदाता को देख कर आत्मविभोर हो जाते थे।

परन्तु उनकी आशाएं सांसारिक महानता प्राप्त करने पर केन्द्रित थीं। उनके हृदय में धन-सम्पत्ति, पद तथा अधिकार की लालसा थी और इसको वे अपनी कल्पित धार्मिकता का प्रतिफल मानते थे। वे आशा लगाए बैठे थे की मसीहा इस पृथ्वी पर आकर अपना राज्य स्थापित करेगा और लोगों पर एक शक्तिशाली राजा के समान शासन करेगा। उनका विचार था कि उसके आने पर उनको सभी सांसारिक आशीषें प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो जाएगी।

यीशु को ज्ञात था कि उसकी ऐसी आशा पूरी न होने के कारण वे निराश हो जाएंगे। वह उनकी आकांक्षाओं से कहीं अधिक उत्तम बातों की शिक्षा देने के लिए आया था। वह इसलिए आया था कि परमेश्वर की सच्ची उपासना उनमें पुनःस्थापित हो जाए। वह शुद्ध हृदय का धर्म स्थापित करना चाहता था जिससे शुद्ध जीवन तथा पवित्र चरित्र प्रकाशित होता है।

उसने अपने हृदयस्पर्शी पहाड़ी उपदेश में उन पर स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर की दृष्टि में किन बातों का महत्व है और किन वस्तुओं से वास्तविक प्रसन्नता प्राप्त होती है।

मुक्तिदाता के शिष्यों पर भी रब्बियों की शिक्षा का व्यापक प्रभाव था इसीलिए मसीह ने सर्वप्रथम उनको अपनी शिक्षाओं से अवगत किया। उनको जो शिक्षा दी गई वह हमारे लिए भी उतनी ही उपयोगी है। हमें भी उसको सीखने की उतनी ही आवश्यकता है।

"धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं" मत्ती ५ : ३-१२, मसीह ने कहा। मन के दीन वे लोग होते हैं जो अपनी पापी दशा से परिचित होते हैं और अपनी आवश्यकता को समझते हैं। वे जानते हैं कि स्वयं वे भले कार्य नहीं कर सकते। वे परमेश्वर की सहायता के अभिलाषी होते हैं और ऐसे ही लोगों को परमेश्वर द्वारा आशीषें

प्रदान की जाती है। "क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र है, कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं।" यशायाह ५७:१५।

"धन्य हैं वे जो शोक करते हैं।" इसका आराम उन लोगों से नहीं है जो कुड़कुड़ाते तथा शिकायतें करते रहते हैं और जो मुंह बिगाड़े और सिर झुकाए इधर-उधर घूमते रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि जो लोग सत्यनिष्ठा से अपने पापों पर शोक व्यक्त करते हैं और परमेश्वर से क्षमा की याचना करते हैं, वे सब मुफ्त में क्षमा प्राप्त करेंगे। परमेश्वर कहता है, "मैं उनके शोक को दूर करके उन्हें आनन्दित करूंगा, मैं उन्हें शांति दूंगा, और दुख के बदले आनन्द दूंगा।" यिर्मयाह ३१ १३।

"धन्य हैं वे जो नम्र हैं।" मसीह कहता है, "मुझसे सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं।" मत्ती ११:२९। जब उससे दुर्व्यवहार किया गया, उसने बुराई के प्रति भलाई दिखाई। ऐसा करके उसने हमारे सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

"धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं।" धार्मिकता भला कार्य करना है। यह परमेश्वर की व्यवस्था की आज्ञाकारिता है क्योंकि व्यवस्था द्वारा ही धार्मिकता के सिद्धान्त निर्धारित किए गए हैं। बाइबल बताती है, "क्योंकि तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं।" भजन संहिता ११९:१७२। इस व्यवस्था को अपना उदाहरण प्रस्तुत करके मसीह ने पालन करना लोगों को सिखाया। व्यवस्था की धार्मिकता उसके जीवन में हमें सफाई से दिखाई देती है। हम धर्म के भूखे और प्यासे तब होते हैं जब हमारे समस्त विचार, शब्द तथा कार्य मसीह के समान होते हैं।

और हम मसीह के समान बन सकते हैं यदि हम वास्तव में उसके समान बनने के इच्छुक होते हैं। हमारा जीवन उसके जीवन के समान बन सकता है, और हमारे कार्य परमेश्वर की व्यवस्था के अनुरूप बन सकते हैं। पवित्र आत्मा हमारे हृदय में परमेश्वर का प्रेम भर देता है और हमें उसकी इच्छा पूरी करने में प्रसन्नता होती है। माता-पिता अपने बालकों को अच्छी वस्तुएं देने को जितने उत्सुक होते हैं उनसे कहीं अधिक परमेश्वर हमें अपनी आत्मा प्रदान करने के लिए उत्सुक है। उसने प्रतिज्ञा की है, "मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा।" मत्ती ७:७। "वे सब जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं तृप्त किए जायेंगे।"

"धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं।" दयालु होना दूसरों के साथ उससे भी अच्छा व्यवहार करना है जिसके वे योग्य हैं। परमेश्वर ने हमारे साथ ऐसा ही व्यवहार किया है। उसे दयालुता प्रगट करने में प्रसन्नता होती है। वह धन्यवाद न करनेवालों तथा दुष्टों पर भी दयालु है। वह हमें भी एक दूसरे के साथ ऐसा ही व्यवहार करने की शिक्षा देता है। वह कहता है, "एक दूसरे पर कृपालु, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।" इफिसियों ४:३२।

"धन्य हैं वे जो मन के शुद्ध हैं।" हम वास्तव में जो कुछ हैं और अपने विषय में जो कुछ कहते हैं, परमेश्वर को हमारी उनसे भी कहीं अधिक चिन्ता है। उसे यह चिन्ता नहीं है कि हम कितने सुन्दर तथा आकर्षक दिखाई देते हैं, परन्तु वह हमारे हृदयों की शुद्धता देखता है। मन की शुद्धता से ही हमारे शब्द तथा कार्य उचित हो सकते हैं। राजा दाऊद ने प्रार्थना की, "हे परमेश्वर मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर।" "मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सन्मुख ग्रहण हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करने वाले।" भजन संहिता ५१:१०; १९:१४। यही हमारी भी प्रार्थना होनी चाहिए।

"धन्य हैं, वे जो मेल कराने वाले हैं।" वह व्यक्ति जिसके हृदय में मसीह की नम्रता तथा दीनता का आत्मा है, सदा ही मेल कराने वाला व्यक्ति होगा। ऐसी आत्मा क्रोध को उत्तेजित नहीं करती और कटु उत्तर नहीं देती। यह परिवार को प्रसन्नता प्रदान करती है और आस-पास के लिए मधुर शान्ति तथा आशीष का कारण बनती है।

"धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं।" मसीह को ज्ञात था कि उसके नाम के कारण उसके अनेक शिष्य को बन्दीगृह में डाला जाएगा और बहुतों को मार डाला जाएगा। परन्तु उसने उनको बताया कि इन बातों के कारण उनको हार मानने की आवश्यकता नहीं है। जो मसीह से प्रेम करते और उसके पीछे चलते हैं, उनको कोई वस्तु हानि नहीं पहुंचा सकती। वह प्रत्येक स्थान पर उनके साथ रहता है। वे उनको मार सकते हैं परन्तु वह उनको ऐसा जीवन देगा जिसका कभी अन्त नहीं होता और उनको ऐसा मुकुट देगा जो कभी नहीं मुर्झाएगा। और उनके द्वारा दूसरे लोग मसीह की शिक्षा प्राप्त करेंगे। मुक्तिदाता ने अपने शिष्यों से कहा।

"तुम जगत की ज्योति हो।" मत्ती ५:१४। यीशु शीघ्र ही इस संसार को छोड़ कर अपने स्वर्गीय राज्य में जाने वाला था। परन्तु शिष्यों को उसके प्रेम की शिक्षा देनी थी। उनको लोगों के बीच ज्योति के समान चमकना था। प्रकाशस्तम्भ की बत्ती अन्धकार में चमकती है और जहाजों को बन्दरगाह में सुरक्षित पहुंचाने में सहायक होती है। इसी प्रकार मसीह के अनुयायियों को इस अन्धकारमय जगत में चमकते हुए, लोगों को मसीह के पास पहुंचाने का नमूना बनना है। यह बातें मसीह के सभी अनुयायियों का गीत रहा है। वह दूसरों को बचाने के लिए अपने साथ वालों को काम के लिए उनको बुलाता है।

सुनने वालों के लिए ऐसी शिक्षा नई तथा अद्‌भुत शिक्षा थी, उसने अनेक वार उनके सन्मुख अपनी शिक्षा को दोहराया। एक वार एक व्यवस्थापक ने उसके पास आकर उससे प्रश्न किया :

"स्वामी, अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए मैं क्या करूं?"

लूका १० : २५–२९।

यीशु ने उससे कहा, "कि व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?"

"उसने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रख, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"

"तूने ठीक उत्तर दिया है," यीशु ने कहा, "यही कर तो तू जीवित रहेगा।"

व्यवस्थापक ने यह नहीं किया था, उसे ज्ञात था कि उसे दूसरों से अपने समान प्रेम न था। पश्चात्ताप करने की अपेक्षा, उसने अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति को छिपाने की इच्छा से बहाना प्रस्तुत करते हुए कहा "मेरा पड़ोसी कौन है?"

महायाजक और रब्बी प्रायः इस प्रश्न पर वाद-विवाद करते थे वे निर्धनों तथा अशिक्षित लोगों को अपना पड़ोसी नहीं समझते और उनके प्रति कोई दया-भाव प्रकट नहीं करते थे। मसीह ने उ इस विवाद में कोई भाग नहीं लिया। उसने इसका उत्तर एक घट द्वारा व्यक्त किया जो कि वास्तव में कुछ समय पहले घट चुकी थ

उसने कहा, एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था। निर्जन तथा ऊबड़-खाबड़ था और जंगल में से होकर निकलता

मार्ग में डाकुओं ने घेर लिया और उसके कपड़े उतार लिए और मार-पीट कर उसे अधमुआ छोड़कर चले गए।

जब यह सब हो चुका था तो [illegible] के मन्दिर का एक पादरी तथा एक लेवी उस मार्ग से निकले। परन्तु उस अभागे व्यक्ति की सहायता करने की अपेक्षा, वे किनारा कर आगे निकल गए। इन लोगों को मन्दिर में परमेश्वर की सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया था और उनका परमेश्वर के समीप ही होना चाहिए था जो कि दया तथा करुणा से परिपूर्ण है। परन्तु उनके हृदय कठोर हो चुके थे।

कुछ देर बाद एक सामरी जाति का व्यक्ति वहाँ निकट पहुँचा। सामरी यहूदियों की दृष्टि में तुच्छ तथा पतित लोग थे। इन लोगों का दर्जा एक अछूत जाति का सा रहा था और भी इन पर अत्याचार किए जाते थे परन्तु सामरी इस विषय पर विचार करने के लिए नहीं रुका। उसे डाकुओं के आक्रमण की भी चिन्ता नहीं थी जो कि सम्भवतः उस निर्जन स्थान में छिपे रहे थे।

वहाँ एक अपरिचित व्यक्ति पड़ा हुआ था जिसकी मृत्यु हो जाने की सम्भावना थी। सामरी ने अपना घोड़ा उतारा और उस घायल व्यक्ति का [illegible] दिया। उसने उसके घावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टी बाँध दी। फिर उसने उसे अपनी सवारी पर बिठाया और उसे एक सराय में ले आया और समस्त रात्रि उसकी देखभाल की। दूसरे दिन जाने से पहले उसने सराय के मालिक को उसके लिए धन दिया और जब तक कि वह पूर्णतया आराम न हो जाए तब तक उसकी देख-भाल करने के लिए कहा। [illegible] पश्चात् [illegible] था और दया। इस प्रकार किया

"अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा ?"

व्यवस्थापक ने उत्तर दिया : "वही, जिसने उस पर तरस खाया।"

फिर यीशु ने कहा, " जा, तू भी ऐसा ही कर। " लूका १०:३६, ३७।

याजक तथा लेवी परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का ढोंग रचते थे परन्तु वास्तव में सामरी ने उसकी आज्ञाओं का पालन किया। उसका हृदय प्रेम तथा करुणा से पूर्ण था। अपरिचित घायल व्यक्ति की देख-भाल करके उसने परमेश्वर तथा मनुष्य के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया। एक दूसरे के प्रति भलाई करने से परमेश्वर हमसे प्रसन्न होता है। हम दूसरों के प्रति प्रेम प्रकट करके उसके प्रति प्रेम प्रकट करते हैं।

करुणा तथा प्रेम से पूर्ण हृदय संसार के समस्त धन से अधि श्रेष्ठ है। जो भले कार्य करते हैं, वे स्वयं को परमेश्वर की सन्त प्रकट करते हैं। ऐसे ही लोग मसीह के साथ उसके राज्य में व करेंगे।



# अच्छा सामरी

अच्छे सामरी के दृष्टांत द्वारा यीशु ने सिखलाया कि जीवन एकांतता में व्यतीत करना नहीं हैं। दयालु, प्रेमी व सेवा-भक्त जीवन की कीमत दुनिया के सब धनों से अधिक हैं। जो लोग भलाई करने के लिए जीते हैं, दिखायें कि वे परमेश्वर के बेटे-बेटियां हैं। ये ही हैं जो ख्रीष्ट के राज्य में उसके साथ रहेंगे।



# सब्त का पालन

मुक्तिदाता ने सब्त का पालन किया और अपने शिष्यों को भी सब्त का पालन करना ही सिखाया था। उन्होंने यह दिखाया कि सब्त का किस प्रकार पालन किया जा सकता है क्योंकि उन्होंने उसको पवित्र ठहराया था।

बाइबल कहती है, "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।" "परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्रामदिन है।" "क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उनमें है सब को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।" निर्गमन २०:८-१०, ११; ३१:१६, १७।

मसीह ने सृष्टि की रचना में अपने पिता के साथ कार्य किया और उसी ने सब्त को बनाया। बाइबल कहती है, "सभी वस्तुएं उसी के द्वारा सृजी गईं।" यूहन्ना १:३। जब हम सूर्य, नक्षत्रों, वृक्षों तथा सुन्दर फूलों को देखते हैं तो हमें स्मरण रखना चाहिए कि इन वस्तुओं को मसीह ने बनाया है। और उसी ने सब्त को बनाया है, ताकि उसके द्वारा हमें उसके प्रेम तथा शक्ति को स्मरण रखने में सहायता प्राप्त हो सके।

यहूदी शिक्षकों ने सब्त को पालन करने के लिए अनेक नियम बना लिए थे और वे चाहते थे कि सब लोग इन नियमों का पालन करें। इसलिए वे मुक्तिदाता को देखते रहे कि वह इस विषय में क्या करता है।

एक सब्त के दिन यीशु और उसके शिष्य आराधनालय से अपने घर लौट रहे थे। मार्ग में उनको एक खेत में से हो कर निकलना पड़ा। भोजन के लिए देर हो चुकी थी और शिष्यों को भूख लग रही थी, तो उन्होंने अन्न की कुछ बालें तोड़ लीं और हाथों से मल मल कर अन्न के दाने खाने लगे। सब्त को छोड़ किसी और दिन खेतों या बागों में से निकलने वालों को वहां कुछ खाना चाहे एकत्रित करके खाने की अनुमति थी, परन्तु सब्त के दिन कोई ऐसा नहीं कर सकता था। मसीह के शत्रुओं ने शिष्यों का यह कार्य देख लिया था तो उन्होंने मुक्तिदाता से कहा, "देख, तेरे चेले सब्त के दिन वह कार्य कर रहे हैं जो उचित नहीं है।" मत्ती १२:२।

परन्तु मसीह ने अपने शिष्यों का पक्ष लिया। उसने दोष लगाने वालों को दाऊद राजा का स्मरण दिलाया जिसने आवश्यकता के समय परमेश्वर के भवन में जा और उसकी भेंट की रोटियां खाईं

---

मसीह ने आज्ञा दी थी, उसके वचन मात्र के अनुसार सब [illegible] द्वारा, विश्राम किया। [illegible] द्वारा [illegible] आज्ञा का पालन करना चाहिए।

जिन्हें याजकों के अतिरिक्त किसी को खाने की अनुमति नहीं थी। उसने ये रोटियां अपने भूखे साथियों को भी दी थीं। यदि भूख की अवस्था में दाऊद के लिए भेंट की पवित्र रोटी खाना उचित था तो सब्त के दिन भूखे शिष्यों का बालें तोड़ कर खाना क्यों उचित नहीं था ?

सब्त को मनुष्य पर भार बनने के लिए नहीं बनाया गया। यह उसकी भलाई करने तथा उसे शान्ति तथा विश्राम देने के लिए बनाया गया है। इसीलिए हमारे प्रभु ने कहा, "सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया, मनुष्य सब्त के लिए नहीं।" मरकुस २ : २७।

"और ऐसा हुआ कि किसी और सब्त के दिन को वह आराधनालय में जा कर उपदेश करने लगा; और वहां एक मनुष्य था जिसका दाहिना हाथ सूखा था।

"और शास्त्री और फरीसी उस पर दोष लगाने का अवसर पाने के लिए उसकी ताक में थे, कि देखें कि वह सब्त के दिन चंगा करता है कि नहीं;

"परन्तु वह उनके विचार जानता था; इसलिए उसने सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, उठ, बीच में खड़ा हो, वह उठ खड़ा हुआ।

"फिर यीशु ने उनसे कहा; मैं तुमसे पूछता हूं कि सब्त के दिन क्या उचित है, भला करना या बुरा करना; प्राण को बचाना या नाश करना ?"

"और उसने चारों ओर उन सभों को देख कर उस मनुष्य से कहा : अपना हाथ बढ़ा, और उसका हाथ फिर चंगा हो गया।"

'परन्तु वे आपे से बाहर हो कर आपस में विवाद करने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें?' लूका ६ ६–८।

यीशु ने प्रश्न करके उन पर यह प्रगट किया कि उनके विचार कितने अनुचित थे। 'तुम में ऐसा कौन है जिसकी एक ही भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड़हे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़ कर न निकाले?'

इस प्रश्न का कोई उत्तर न दे सके। इसलिए उसने कहा, "भला, मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़ कर है! इसलिए सब्त के दिन भलाई करना उचित है।" मत्ती १२ ११, १२।

'उचित है'—इसका अर्थ यह है कि यह व्यवस्था के अनुकूल है। मसीह ने सब्त का पालन करने के लिए व्यवस्था को कभी रद्द नहीं किया और न कभी व्यवस्था के पालन का विरोध किया। इसके विपरीत उसने व्यवस्था का सदा पालन किया।

यशायाह ने मसीह के विषय में भविष्यवाणी की [illegible] यहोवा को अपनी धार्मिकता के निमित्त यह भाता है कि व्यवस्था की अधिक बड़ाई करे। बड़ाई करने का अर्थ है व्यवस्था को उच्च पद तथा उच्च सम्मान देना। मसीह ने उसका अक्षरशः पालन करके उसे सम्मानित किया। उसने स्पष्ट कर दिया कि व्यवस्था का पालन आवश्यक है, न केवल उन कार्यों द्वारा जिनका सम्बन्ध देह से है परन्तु विचारों द्वारा भी जिनका सम्बन्ध मन से निश्चित है।

इस तात्पर्य के विचार अनेक प्रकार के लोग [illegible] करते थे। इस्राएल के कई लोग [illegible] में सम्मिलित हो गए थे, परन्तु उनमें

से अधिकांश निराश हो चुके थे। पानी हिलने के समय इतनी अधिक भीड़ हो जाती थी कि बहुत से लोग तो किनारे पर भी नहीं पहुंच पाते थे।

एक सब्त के दिन यीशु बैथसदा में आया। जब उसने वहां दुखी लोगों को देखा तो उसके हृदय में दया भर गयी। एक व्यक्ति की दशा। दूसरों से अधिक दयनीय थी, क्योंकि वह अड़तीस वर्ष से अपंग दशा तो में पड़ा हुआ था। कोई डाक्टर उसका उपचार नहीं कर सकता था। उसे अनेक बार इस तालाब पर लाया गया था परन्तु जब पानी हिलना आरम्भ होता था तो कोई दूसरा व्यक्ति उससे पहले तालाब में उतर पड़ता था।

इस सब्त के दिन उसने एक बार फिर तालाब पर पहुंचने का प्रयत्न किया था, परन्तु इस बार भी वह असफल रहा। जब वह घिसटता हुआ अपनी चटाई पर वापस आया जो कि उसका बिस्तर था तो यीशु ने उसे देख लिया। उसकी शक्ति लगभग लुप्त हो चुकी थी। यदि उसे सहायता न मिलती तो उसकी मृत्यु निश्चित थी। वह लेटा हुआ बार-बार तालाब की ओर देख रहा था, एक प्रेमी चेहरा उस पर झुका और उसे यह वाणी सुनाई दी:

"क्या तू चंगा होना चाहता है?" उस रोगी ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मेरे पास कोई नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए तो मुझे तालाब में उतार दे; परन्तु मेरे पहुंचते-पहुंचते दूसरा मुझ से पहले उतर पड़ता है।" यूहन्ना ५: १–११।

उसे ज्ञात नहीं था कि जो उसके निकट खड़ा है वह एक को ही नहीं वरन जितने उसके पास आते हैं, उन सब को आरोग्यता प्रदान कर सकता है। मसीह ने उस व्यक्ति से कहा, "उठ, अपनी खाट उठा कर चल फिर।"

उस व्यक्ति ने तुरन्त अपना ध्यान यीशु की बात पर लगाया और उसके शरीर में शक्ति आ गई। वह उठ कर अपने पैरों पर खड़ा हो गया और उसे ज्ञात हो गया कि वह चल फिर सकता है। उसे कैसी प्रसन्नता हुई होगी।

उसने अपना बिस्तर उठाया और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ चला गया। शीघ्र ही उसकी कुछ यहूदियों से भेंट हुई, उसने अपनी आरोग्यता का आश्चर्यजनक अनुभव उनको बताया। वे प्रसन्न प्रतीत नहीं होते थे, उन्होंने सब्त के दिन खाट उठाने के लिए उसकी निन्दा की। उस व्यक्ति ने उनको बताया "जिसने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझसे कहा, अपनी खाट उठा कर चल फिर।"

अब उनके प्रति उनका क्रोध [illegible] हो गया, वे उस पर दोष लगाने लगे जिसने सब्त के दिन उसे खाट उठाने की आज्ञा दी थी।

[illegible] में ऐसे [illegible] इस [illegible] का [illegible] विचार नहीं [illegible] के विषय में [illegible] शिक्षा दी [illegible] के लिए [illegible] विचार [illegible] दिन [illegible] की आज्ञा दी थी। [illegible]

[illegible]

से अधिकांश निराश हो चुके थे। पानी हिलने के समय इतनी अधिक भीड़ हो जाती थी कि बहुत से लोग तो किनारे पर भी नहीं पहुंच पाते थे।

एक सब्त के दिन यीशु बैथसदा में आया। जब-उसने वहां दुखी लोगों को देखा तो उसके हृदय में दया भर गयी। एक व्यक्ति की दशा। दूसरों से अधिक दयनीय थी, क्योंकि वह अड़तीस वर्ष से अपंग दशा तो में पड़ा हुआ था। कोई डाक्टर उसका उपचार नहीं कर सकता था। उसे अनेक बार इस तालाब पर लाया गया था परन्तु जब पानी हिलना आरम्भ होता था तो कोई दूसरा व्यक्ति उससे पहले तालाब में उतर पड़ता था।

इस सब्त के दिन उसने एक बार फिर तालाब पर पहुंचने का प्रयत्न किया था, परन्तु इस बार भी वह असफल रहा। जब वह घिसटता हुआ अपनी चटाई पर वापस आया जो कि उसका बिस्तर था तो यीशु ने उसे देख लिया। उसकी शक्ति लगभग लुप्त हो चुकी थी। यदि उसे सहायता न मिलती तो उसकी मृत्यु निश्चित थी। वह लेटा हुआ बार-बार तालाब की ओर देख रहा था, एक प्रेमी चेहरा उस पर झुका और उसे यह वाणी सुनाई दी :

"क्या तू चंगा होना चाहता है?" उस रोगी ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मेरे पास कोई नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए तो मुझे तालाब में उतार दे; परन्तु मेरे पहुंचते-पहुंचते दूसरा मुझ से पहले उतर पड़ता है।" यूहन्ना ५ : १–११।

उसे ज्ञात नहीं था कि जो उसके निकट खड़ा है वह एक को ही नहीं वरन जितने उसके पास आते हैं, उन सब को आरोग्यता प्रदान कर सकता है। मसीह ने उस व्यक्ति से कहा, "उठ, अपनी खाट उठा कर चल फिर।"

उस व्यक्ति ने तुरन्त आज्ञा पालन करने का प्रयत्न किया और उसके शरीर में शक्ति आ गई। वह उठ कर अपने पैरों पर खड़ा हो गया और उसे ज्ञात हो गया कि वह चल फिर सकता है। उसे कैसी प्रसन्नता हुई होगी।

उसने अपना बिस्तर उठाया और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ चल गया। शीघ्र ही उसकी कुछ फरीसियों से भेंट हुई, उसने अपनी आरोग्यता का आश्चर्यजनक अनुभव उनको बताया। वे प्रसन्न प्रतीत नहीं हो रहे थे, उन्होंने सब्त के दिन खाट उठाने के लिए उसकी निन्दा की। उस व्यक्ति ने उनको बताया "जिसने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझसे कहा, अपनी खाट उठा कर चल फिर।"

अब उसके प्रति उनका क्रोध शान्त हो गया, वे उस पर दोष लगाने लगे जिसने सब्त के दिन उसे खाट उठाने की आज्ञा दी थी।

यरूशलेम में जहाँ कि मुक्तिदाता इस समय उपस्थित था बहुत से विद्वान रब्बी रहा करते थे जो वहाँ पर के सब्त के विषय में लोगों को अपने मिथ्या विचारों की शिक्षा देते थे। मन्दिर में बड़ी संख्या में लोग उपासना के लिए एकत्रित होते थे, इसलिए रब्बियों की शिक्षाओं का व्यापक प्रचार होता था। मसीह ने उनकी भूलों का सुधारने का निश्चय कर लिया था। इसीलिए उसने सब्त के दिन इस रोगी को चंगा करके उसे अपनी खाट उठाने की आज्ञा दी थी। उसका ज्ञान था कि उसका यह कार्य रब्बियों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित करेगा और तब उसे उनको शिक्षा देने का अवसर मिल जाएगा।

ऐसा ही हुआ। फरीसी मसीह को अपनी महासभा सैनहेड्रीन में ले गए और सब्त को तोड़ने के विषय में उससे प्रश्न करने लगे,

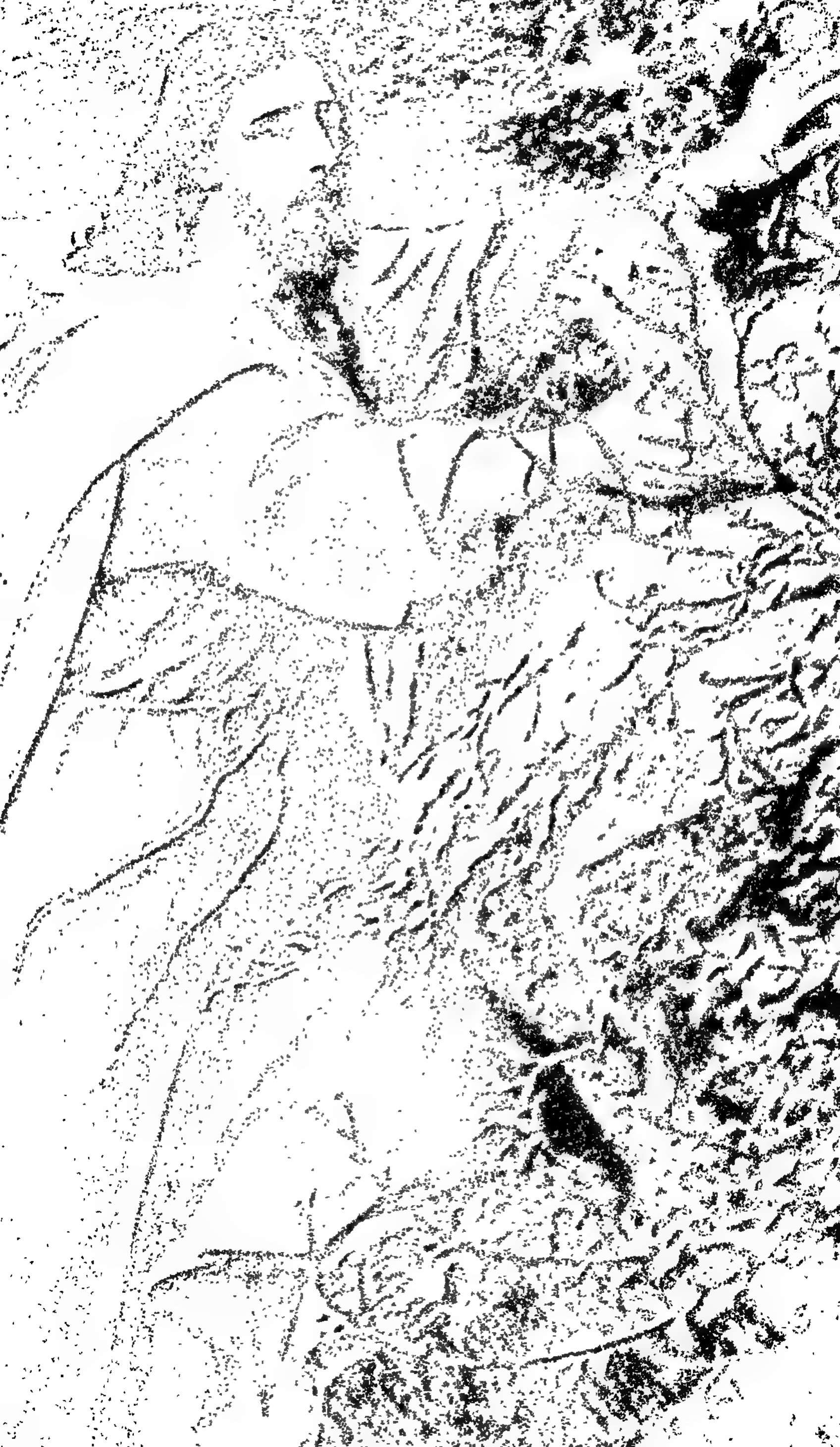
मुक्तिदाता ने उनको बतला दिया कि उसका यह कार्य सब्त की व्यवस्था के अनुरूप है। यह परमेश्वर की इच्छा और उसके कार्य के भी अनुरूप है। "मेरा पिता अब भी कार्य करता है," उसने कहा, "और मैं भी करता हूँ।" यूहन्ना ५ : १७। परमेश्वर प्रत्येक प्राणी की देखभाल करता हुआ निरन्तर कार्य करता है। क्या यह कार्य सब्त के दिन बंद हो सकता है ?

क्या परमेश्वर अपने सूर्य को सब्त के दिन चमकने से रोक देता है ? क्या उसकी किरणों द्वारा उस दिन भूमि को गर्मी तथा हरियाली प्राप्त करने से परमेश्वर सूर्य को रोकता है ? क्या उस दिन सरिताओं का प्रवाह रुक जाना चाहिए और समुद्र की लहरों को भी थम जाना चाहिए ? क्या उस दिन अन्न के पौधों या फल-फूलों की वृद्धि रुक जानी चाहिए ?

स्वर्ग का कार्य कभी नहीं रुकता और हमें भी सब्त के दिन भले कार्यों से नहीं रुकना चाहिए। व्यवस्था हमें प्रभु के विश्रामदिन को अपना कार्य करने को वर्जित करती है। आजीविका के लिए परिश्रम उस दिन अवश्य रुक जाना चाहिए सासांरिक लाभ या आनन्द का कार्य उस दिन नहीं होना चाहिए। परन्तु सब्त व्यर्थ तथा अकर्मण्यता में व्यतीत नहीं होना चाहिए। परमेश्वर ने सृष्टि की रचना का कार्य समाप्त कर सब्त को विश्राम किया, इसी प्रकार हमें भी विश्राम करना चाहिए। वह उस दिन हमें अपने प्रतिदिन के कार्यों को करने से वर्जित करता है। इस दिन हमें पवित्रता के साथ भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए और पवित्र कार्य करते हुए परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए।

## यीशु अच्छा चरवाहा

चरवाहे की एक सौ भेड़ें होतीं, लेकिन जब एक गायब हुई तो वह भेड़शाला में झुण्ड के साथ नहीं रहा। वह खोयी हुई भेड़ को ढूंढने निकल गया। आंधी में अंधियारी रात को पहाड़ों और तराइयों से होते हुए वह चला। जब तक भेड़ नहीं पाता वह आराम नहीं करता। इसी तरह, यीशु जो अच्छा चरवाहा है अपने शिष्यों के झुण्ड की रखवाली करता है।





# अच्छा चरवाहा

मुक्तिदाता ने स्वयं को चरवाहा कहा और अपने शिष्यों को भेड़ों का दृष्टान्त बताते हुए कहा

" अच्छा चरवाहा मैं हूँ, मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे पहचानती हैं।" यूहन्ना १० : १४।

मसीह शीघ्र ही अपने शिष्यों को छोड़ कर जाने वाले थे, इसलिए उन्होंने उनको शान्ति देने के लिए ये बातें कहीं ताकि जब वह उनके साथ न रहें तो वे उनके वचनों को स्मरण करें। जब कभी वे किसी चरवाहे को अपनी भेड़ें चराते देखते थे तो उनको अपने मुक्तिदाता का प्रेम और उनके शब्द स्मरण हो आते थे।

उस देश में चरवाहे रात-दिन अपने झुण्ड की रखवाली करते थे। चरवाहा भेड़ों को जंगलों और पहाड़ी स्थानों से निकालकर हरी-भरी सुखदायी चरागाहों में ले जाता था जहां जल की धाराएं बहती थीं। वह समस्त रात्रि जंगली पशुओं तथा डाकुओं से उनकी रक्षा करता था जो प्राय: उनकी ताक में घूमते रहते थे।

वह रोगी तथा दुर्बल भेड़ों का विशेष ध्यान रखता था। छोटे मेम्नों को वह अपनी गोद में उठा कर ले जाता था।

भेड़ों का झुण्ड चाहे जितना बड़ा हो, वह झुण्ड की प्रत्येक भेड़ को जानता था। वह प्रत्येक भेड़ का नाम रखता था और प्रत्येक को उसके नाम से सम्बोधित करता था।

इसी प्रकार मसीह, जो स्वर्गीय चरवाहा है अपने झुण्ड की रखवाली करता है जो समस्त विश्व में बिखरा पड़ा है। वह हम में से प्रत्येक के नाम से परिचित है। वह हम में से प्रत्येक के घर से परिचित है और हमारे घर के प्रत्येक सदस्य को जानता है। वह हम में से प्रत्येक की ऐसी देख-भाल करता है जिसे कि संसार में दूसरा कोई व्यक्ति न हो।

चरवाहा अपनी भेड़ों के आगे-आगे चलता था और इस प्रकार सभी खतरों का सामना करता था। वह बनैले हिंसक पशुओं का सामना करता था और डाकुओं से भी लोहा लेता था। कभी-कभी चरवाहा अपनी भेड़ों की रक्षा करते समय मारा भी जाता था।

इसी प्रकार मुक्तिदाता अपने शिष्यों के झुण्ड की रक्षा करता है। वह हमारे आगे-आगे चल कर गया है। वह उसी रूप में पृथ्वी पर रहा जैसे हम रहते हैं। वह बालक था फिर नवयुवक हुआ और फिर पुरुष बन गया। वह शैतान और उसकी परीक्षाओं पर प्रबल हुआ इसी प्रकार हम भी उस पर प्रबल हो सकते हैं। वह हमें बचाने के

लिए मरा। यद्यपि अब वह स्वर्ग में है, वह हमें एक क्षण के लिए भी नहीं भूला। वह अपनी प्रत्येक भेड़ को सुरक्षित रखेगा। जो लोग उसके पीछे चलते हैं उनमें से एक भी उस महान प्रभु के हाथ से नहीं छूट सकता।

एक चरवाहे के पास सौ भेड़ें हो सकती हैं परन्तु यदि उनमें से एक खो जाती है तो वह शेष भेड़ों के पास नहीं ठहरता, वह खोई हुई भेड़ को खोजने निकल पड़ता है।

अन्धेरी रात्रि में, आंधी–तूफान में पहाड़ों और घाटियों में वह उस भेड़ को खोजने के लिए निकल पड़ेगा और तब तक विश्राम नहीं लेगा जब तक कि उसकी भेड़ न मिल जाए।

फिर वह उसको गोद में उठा लेता है और घर सुरक्षित ले आता है। वह अपनी लम्बी, थका देने वाली खोज की कोई शिकायत नहीं करता परन्तु प्रसन्नतापूर्वक कहता है

"मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।" लूका १५ ४–६।

इसी प्रकार हमारा मुक्तिदाता चरवाहा उन्हीं की रखवाली नहीं करता जो झुण्ड में हैं। वह कहता है, "मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढने और बचाने के लिए आया है। मत्ती १८ ११।

"मैं तुमसे कहता हूं, कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय में नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं।" लूका १५ : ७।

हमने पाप किया है और हम परमेश्वर से दूर भटक गए हैं। यशायाह कहता है हम उन भेड़ों के समान हैं जो अपने झुण्ड से दूर भटक गई

हों। वह हमें पाप से बचाने के लिए आया। वह हमें अपने झुण्ड में वापस बुला रहा है।

जब हम चरवाहे के साथ वापस लौट आते हैं और अपने पापों को त्याग देते हैं, तो मसीह स्वर्ग में अपने स्वर्गदूतों से कहता है :

"मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।"

फिर स्वर्ग में स्वर्गदूत आनन्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगते हैं और उनके मधुर गान से समस्त स्वर्ग गूंज उठता है।

मसीह ने हमारे सन्मुख ऐसा चित्र प्रस्तुत नहीं किया जिसमें कोई शोकग्रस्त चरवाहा बिना अपनी भेड़ लिए झुण्ड में वापस लौटा हो। यहां हमारे साथ एक प्रतिज्ञा की गई है कि परमेश्वर के झुण्ड से भटकी हुई एक भी भेड़ की उपेक्षा नहीं की जाएगी। एक को भी सहायता से वंचित नहीं रखा जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति जो उद्धार को आधीनता से स्वीकार कर लेगा, उसको मुक्तिदाता पाप के जंगल से निकाल कर बचा लेगा।

इसलिए झुण्ड से भटके हुए प्रत्येक व्यक्ति को ढाढ़स बांधना चाहिए। अच्छा चरवाहा आपको खोज रहा है। स्मरण रखिए उसका कार्य, "खोए हुओं को ढूंढ़ना और बचाना है।" इसमें उसका आशय आपको बचाने से है। मुक्ति की सम्भावनाओं पर सन्देह करना, उस की बचानेवाली शक्ति पर सन्देह करना है जिसने आपको अपरिमित मूल्य चुका कर मोल लिया है। अविश्वास का स्थान विश्वास को लेने दीजिए। उन हाथों की ओर देखिए जो कि आप के लिए छेदे गए, और बचानेवाली शक्ति में आनन्दित रहिए।

[illegible] है।

[illegible] है।

[illegible] और [illegible]।

[illegible] और [illegible] है। [illegible]

[illegible] और [illegible]।

[illegible] और [illegible] है।

[illegible]

हों। वह हमें पाप से बचाने के लिए आया। वह हमें अपने झुण्ड में वापस बुला रहा है।

जब हम चरवाहे के साथ वापस लौट आते हैं और अपने पापों को त्याग देते हैं, तो मसीह स्वर्ग में अपने स्वर्गदूतों से कहता है :

"मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।"

फिर स्वर्ग में स्वर्गदूत आनन्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगते हैं और उनके मधुर गान से समस्त स्वर्ग गूंज उठता है।

मसीह ने हमारे सन्मुख ऐसा चित्र प्रस्तुत नहीं किया जिसमें कोई शोकग्रस्त चरवाहा बिना अपनी भेड़ लिए झुण्ड में वापस लौटा हो। यहां हमारे साथ एक प्रतिज्ञा की गई है कि परमेश्वर के झुण्ड से भटकी हुई एक भी भेड़ की उपेक्षा नहीं की जाएगी। एक को भी सहायता से वंचित नहीं रखा जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति जो उद्धार को आधीनता से स्वीकार कर लेगा, उसको मुक्तिदाता पाप के जंगल से निकाल कर बचा लेगा।

इसलिए झुण्ड से भटके हुए प्रत्येक व्यक्ति को ढाढ़स बांधना चाहिए। अच्छा चरवाहा आपको खोज रहा है। स्मरण रखिए, उसका कार्य, "खोए हुओं को ढूंढ़ना और बचाना है।" इससे उसका आशय आपको बचाने से है। मुक्ति की सम्भावनाओं पर सन्देह करना, उस की बचानेवाली शक्ति पर सन्देह करना है जिसने आपको अपरिमित मूल्य चुका कर मोल लिया है। अविश्वास का स्थान विश्वास को लेने दीजिए। उन हाथों की ओर देखिए जो कि आप के लिए छेदे गए, और बचानेवाली शक्ति में आनन्दित रहिए।

स्मरण रहिए कि परमेश्वर तथा मसीह की ओर में बहुत शक्ति है और समस्त स्वर्गीय सेना पापियों की मुक्ति के लिए कार्य कर रही है।

जब मसीह पृथ्वी पर था, तो उसने आश्चर्य कर्मों द्वारा किसी भी प्रकृति या कष्ट पर अपनी शक्ति प्रकट की। उसने लोगों को शारीरिक रोगों से आरोग्यता प्रदान की। उसने प्रकट कर दिया कि वह उनके मन से पापों को भी दूर कर सकता है।

उसने लंगड़ों को चलने की शक्ति प्रदान की, बहरों को सुनने की शक्ति दी, कोढ़ियों को शुद्ध किया और अपंग व्यक्तियों को स्वस्थ किया और लोगों को भांति-भांति के रोगों से मुक्त किया।

उसके शब्द सुनते ही लोगों के अन्दर से दुष्ट आत्माएं निकल गयीं, जिन्होंने उसके आश्चर्यजनक कार्य देखे वे चकित होकर कहने लगे, "यह कैसा वचन है, कि वह अधिकार और सामर्थ्य के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं। लूका ४:३६।

मसीह द्वारा आज्ञा पाने पर पतरस पानी के ऊपर चलने लगा था। परन्तु उसको अपनी आंखें मुक्तिदाता पर जमाए रखना आवश्यक था, जैसे ही उसने अपनी दृष्टि हटाई, उसके अन्दर सन्देह उत्पन्न हो गया और वह डूबने लगा। फिर वह चिल्ला पड़ा, "हे प्रभु मुझे बचा" और तुरन्त ही मुक्तिदाता का हाथ उसे बचाने के लिए आगे बढ़ा। मत्ती १४:२८-३१। इसी प्रकार जो कोई उससे सहायता प्राप्त करने के लिए चिल्लाता है, उसे बचाने के लिए मसीह का हाथ आगे आ जाता है।

मसीह ने मुर्दों को जीवित किया। उनमें से एक युवक नाईन नगर की विधवा का पुत्र था। लोग उसे कब्र में दफनाने के लिये ले जा

रहे थे, जब कि यीशु से उनकी भेंट हुई। उसने उस युवक का हाथ पकड़ कर उसे उठाया और जीवित करके उसे उसकी माता को सौंप दिया। फिर अर्थी उठाने वाले तथा अन्य लोग आनन्द प्रकट करते हुए और परमेश्वर की स्तुति करते हुए अपने अपने घरों को लौट गए।

इसी प्रकार याईर की पुत्री को जीवित किया गया और यीशु का शब्द सुनते ही चार दिन का मरा हुआ लाजर कब्र से बाहर निकल आया।

सो जब मसीह इस पृथ्वी पर फिर आएगा तो उसकी वाणी कब्रों को बेध देगी और, "जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे," वे महिमायुक्त अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे और वे, "सदा प्रभु के साथ रहेंगे।" थिस्सलुनीकियों ४ : १६, १७।

अपने सेवा--काल में प्रभु का यह आश्चर्यजनक कार्य था। इस कार्य के विषय में उसने तब बताया जब कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने बन्दीगृह में से उसके पास दूत भेजे थे। वह बन्दीगृह में दूसरों पर निर्भर हो गया था और उसे यह व्याकुलता सता रही थी कि यीशु वास्तव में मसीहा था। सो उसने अपने शिष्यों को मुक्तिदाता से पूछने के लिए भेजा था कि, "आने वाला तू ही है या हम किसी दूसरे की बाट जोहें।"

जब ये दूत मसीह के पास पहुंचे तो उसके चारों ओर रोगियों की भीड़ एकत्रित थी जिनको वह आरोग्यता प्रदान कर रहा था। ये दूत समस्त दिन प्रतीक्षा करते रहे, और वह निरन्तर कार्य करके दुखियों का दुख दूर करता रहा, अन्त में उससे कहा :

"जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जा कर यूहन्ना से कह दो, कि अन्धे देखते है और लंगड़े चलते फिरते हैं। कोढ़ी शुद्ध

किए जाते हैं और बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।" मत्ती ११ : ३-५।

वह कोई साढ़े तीन वर्ष तक, "भलाई के काम करता हुआ फिरता रहा।" इसके पश्चात् पृथ्वी पर उसकी सेवा समाप्त होने का समय आ गया। अब उसे अपने शिष्यों के साथ यरूशलेम जाना आवश्यक था जहां उसके साथ विश्वासघात किया जाना था और उसे दण्डित करके क्रूस पर चढ़ाया जाना था।

इस प्रकार उसके अपने शब्द पूरे होते थे, "अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपने प्राण देता है।" यूहन्ना १० : ११।

'निश्चय ही उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया—वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया और हमारे अधर्म के हेतु कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जायें। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" यशायाह ५३ : ४-६।



# यरूशलेम में प्रवेश

यीशु फसह का पर्व मनाने के लिए यरूशलेम के निकट पहुंचा। उसके चारों ओर बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई थी क्योंकि लोग फसह के पर्व के लिए बड़ी संख्या में यरूशलेम जा रहे थे।

उसकी आज्ञा के अनुसार उसके दो शिष्य एक गदही के बच्चे को ले आए थे जिस पर चढ़ कर वह यरूशलेम जा रहा था। उन्होंने पशु की पीठ पर अपने वस्त्र बिछा दिए थे और उस पर अपने स्वामी को बैठा दिया था।

जैसे ही वह गदही के बच्चे पर सवार हुआ विजयोल्लास के नारों से आकाश गूंज उठा। भीड़ ने उसे मसीह राजा की उपाधि दे कर उसका अभिवादन किया। पांच सौ वर्ष भी से पहले भविष्यद्वक्ता ने इस दृश्य के विषय में भविष्यवाणी की थी :

" हे सिय्योन बहुत ही मगन हो ! हे यरूशलेम जयजयकार कर ! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है और गदहे पर वरन गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा। " जकर्याह ९ : ९।

यह बढ़ती हुई भीड़ बहुत प्रसन्न तथा उत्तेजित थी। वे उसे बहुमूल्य उपहार भेंट न कर सके परन्तु उन्होंने अपने वस्त्र उसके मार्ग पर कालीन के समान बिछा दिए। उन्होंने अंगूर तथा खजूर की सुन्दर डालियाँ तोड़ लीं और उनको उसके मार्ग में फैला दिया। उनका विचार था कि वे लोग यीशु के साथ यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर अधिकार करने के लिए जा रहे हैं।

इससे पहले मुक्तिदाता ने लोगों को स्वयं को राजा के समान आदर सत्कार प्रदान करने की अनुमति नहीं दी। परन्तु इस अवसर पर वह विशेष रूप से स्वयं को संसार के सम्मुख, मुक्तिदाता के रूप में प्रगट करना चाहता था।

परमेश्वर का पुत्र मनुष्यों के पापों के लिए बलिदान होने जा रहा था। आगामी युगों में उसकी कलीसिया के लिए उसकी मृत्यु गम्भीर विचार तथा अध्ययन का विषय बनने जा रही थी, इसलिए यह आवश्यक था कि इस समय सभी लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो।

ऐसा दृश्य देख लेने के पश्चात्, उसका मुकद्दमा तथा क्रूस पर चढ़ाया जाना संसार की आँखों से छिपा नहीं रह सकता था। परमेश्वर ने ऐसा प्रबन्ध कर रखा था कि मुक्तिदाता के जीवन के अन्तिम दिनों की प्रत्येक घटना ऐसी स्पष्टता से उजागर हो कि संसार की कोई शक्ति उस घटना को भुला देने का कारण न बन सके।

इस विशाल भीड़ में जिन्होंने मुक्तिदाता को चारों ओर से घेर रखा था, उनमें आश्चर्यकर्मों की शक्ति के प्रमाण भी उपस्थित थे।

जिन अन्धों को उसने दृष्टि प्रदान की थी वे भीड़ का नेतृत्व कर रहे थे।

जिन गूंगों को उसने बोलने की शक्ति दी थी वे जोर-जोर से होशाना पुकार रहे थे।



के चुनाव के समय [illegible] किया था और उन्होंने [illegible] कर उनका [illegible] टूट गया था, उनको [illegible] था कि [illegible] ही [illegible] एक [illegible] का [illegible]।

यदि इस नगर ने [illegible] की सिफारिशों पर ध्यान दिया होता और [illegible] कर लिया होता, तो [illegible] स्थिर रहता। [illegible] की [illegible] होता और [illegible] द्वारा [illegible] करता। [illegible] [illegible] उनकी [illegible] न [illegible]। [illegible] के [illegible] का [illegible] में [illegible] जाता। [illegible] की [illegible] का [illegible] होता।

परन्तु [illegible] न [illegible] किया था, वे [illegible] ही [illegible] थे। और [illegible] था। अब मुझे [illegible] हुआ था [illegible] विचार की [illegible] गई।*

[illegible] यह [illegible] कि [illegible] है और [illegible] का [illegible] है। [illegible] था कि [illegible] और [illegible] हुए [illegible]

यह [illegible] है

* [illegible]

[illegible]

शिष्य प्रेरणा देनेवाली आत्मा से परिपूर्ण हो गए; उन्होंने उत्तर दिया : " यह आदम तुमको बताएगा; यह स्त्री की सन्तान है, जो सर्प का सिर कुचल डालेगी ।"

" इब्राहीम से पूछो, वह तुमको बताएगा, यह मेल्कीसेदेक, शालेम का राजा और शान्ति का दूत है।"

" याकूब तुमको बताएगा, वह शीलोह यहूदा के गोत्र का है । "

" यशायाह तुमको बताएगा, वह इम्मानुएल, अद्‌भुत युक्ति करने वाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त काल का पिता और शान्ति का राजकुमार है ।"

"यिर्मयाह तुमको बताएगा, वह दाऊद की शाखा, प्रभु तथा हमारी धार्मिकता है । " दानिय्येल तुमको बताएगा, "वह मसीहा है ।"

"होशे तुमको बताएगा, वह सेनाओं का प्रभु परमेश्वर है और प्रभु का स्मारक है । "

" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला तुमको बताएगा, वह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत के पाप उठा ले जाता है । "

" महान यहोवा ने अपने सिंहासन से इनके लिए घोषणा की है यह मेरा प्रिय पुत्र है । "

"हम उसके शिष्य यह घोषित करते हैं, यह यीशु है, जो कि मसीहा है, जीवन का राजकुमार है और मुक्तिदाता है ।"

और यहां तक कि अन्धकार की शक्तियों का राजकुमार तक उनको यह कहते हुए स्वीकार करता है कि मैं तुझे जानता हूं कि परमेश्वर का पवित्र जन है !"



# मन्दिर में से लेन-देन करनेवालों को निकालना

[illegible]

[illegible]

शिष्य प्रेरणा देनेवाली आत्मा से परिपूर्ण हो गए; उन्होंने उत्तर दिया : " यह आदम तुमको बताएगा; यह स्त्री की सन्तान है, जो सर्प का सिर कुचल डालेगी।"

" इब्राहीम से पूछो, वह तुमको बताएगा, यह मेल्कीसेदेक, शालेम का राजा और शान्ति का दूत है।"

" याकूब तुमको बताएगा, वह शीलोह यहूदा के गोत्र का है।"

" यशायाह तुमको बताएगा, वह इम्मानुएल, अद्भुत युक्ति करने वाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त काल का पिता और शान्ति का राजकुमार है।"

"यिर्मयाह तुमको बताएगा, वह दाऊद की शाखा, प्रभु तथा हमारी धार्मिकता है।" दानिय्येल तुमको बताएगा, "वह मसीहा है।"

"होशे तुमको बताएगा, वह सेनाओं का प्रभु परमेश्वर है और प्रभु का स्मारक है।"

" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला तुमको बताएगा, वह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत के पाप उठा ले जाता है।"

" महान यहोवा ने अपने सिंहासन से इसके लिए घोषणा की है यह मेरा प्रिय पुत्र है।"

"हम उसके शिष्य यह घोषित करते हैं, यह यीशु है, जो कि मसीहा है, जीवन का राजकुमार है और मुक्तिदाता है।"

और यहां तक कि अन्धकार की शक्तियों का राजकुमार तक उसको यह कहते हुए स्वीकार करता है कि मैं तुझे जानता हूं कि परमेश्वर का पवित्र जन है!"



# मन्दिर में से लेन-देन करनेवालों को निकालना

दूसरे दिन यीशु मन्दिर में प्रविष्ट हुआ। तीन वर्ष पहले उसने मन्दिर के बाहरी आंगन में लोगों को वस्तुएं बेचते और माल लेते देखा था और उनको डांट कर उन्हें बाहर निकाल दिया था। अब वह फिर मन्दिर में आता था और उस समय भी वही व्यापार चल रहा था। आंगन पशुओं, भेड़ों और पक्षियों से भरा हुआ था। जो लोग अपने पापों का बलिदान चढ़ाते थे उनके हाथ इन जीवों को बेचा जाता था। इस व्यापार में मन्दिर के लोग खूब लूट और बेई-मानी करते थे। आंगन में इतना कोलाहल होता था कि भीतर उपा-सना करनेवाले व्याकुल हो जाते थे।

यीशु मन्दिर की सीढ़ियों पर खड़ा हो गया। एक बार फिर उसकी हृदय को बेधनेवाली दृष्टि इन व्यापारियों पर पड़ी। सभी लोग उसकी ओर आकर्षित हो कर उसे देखने लगे। कोला-हल अकस्मात् ही बन्द हो गया, पशुगण भी शान्त हो गए। सभी की दृष्टि आश्चर्य और भय के साथ परमेश्वर के पुत्र पर जमी हुई थी। ईश्वरीय आभा से उसका मुखमण्डल प्रकाशित हो रहा था जो उसकी महिमा प्रकट कर रहा था। वे आदर की दृष्टि से उसकी ओर देख

रहे थे। ऐसी महिमा उसने पहले कभी प्रदर्शित नहीं की थी। अब शान्ति लगभग असह्य हो गई थी। अन्त में उसने स्पष्ट शब्दों में कहा और उसके शक्तिशाली वचनों ने आंधी के समान लोगों को आन्दोलित कर दिया:

"लिखा है, मेरा घर प्रार्थना का घर होगा; परन्तु तुमने उसे डाकुओं की खोह बना दिया है।" लूका १९:४६।

अब उसने उससे भी अधिक अधिकार प्रदर्शित किया जो कि तीन वर्ष पूर्व उसने किया था। उसने आज्ञा दी :

"यहां से इन वस्तुओं को ले जाओ।"

उसका शब्द सुनते ही एक बार फिर मन्दिर के याजक और अधिकारी भाग गए। उसके पश्चात् उनको अपने भय पर लज्जा अनुभव हुई। उन्होंने विचार किया कि अब वे कभी इस प्रकार भयभीत हो कर नहीं भागेंगे। फिर भी वे पहले से अधिक भयभीत थे और उसकी आज्ञा सुनते ही मन्दिर से निकल भागे थे।

शीघ्र ही प्रांगण ऐसे लोगों से भर गया जो अपने रोगियों को यीशु के पास लेकर आए थे। उनमें से कुछ मरने वाले थे। उनको अपनी आवश्यकता ज्ञात थी। वे विनयपूर्वक मसीह के चेहरे को देख रहे थे। उनको उसकी ओर देखने में भय की अनुभूति हो रही थी क्योंकि उसने अभी कुछ देर पहले लेन-देन करने वालों को मन्दिर से बाहर निकाल दिया था। परन्तु उन्होंने उसके चेहरे पर अपने प्रति प्रेम और करुणा देखी।

यीशु ने दया-भाव प्रकट करते हुए रोगियों को अपने निकट बुलाया और उसके हाथ के स्पर्श मात्र से उनकी सभी व्याधियां दूर हो गईं। उसने प्रेमपूर्वक बच्चों को अपनी गोद में लिया और उनके नन्हें शरीर से सभी व्याधियां दूर कर दीं और हंसते-खेलते हुए बच्चे उनकी माताओं को दे दिए।

जब महायाजकों और अधिकारियों ने जो सामर्थी में कुछ काम करके फिर मन्दिर में लौट आए थे, यह विचित्र दृश्य देखा। उन्होंने छोटे-छोटे बच्चों को परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुना। उन्होंने रोगियों का चंगा होना और अन्धों को दृष्टि पाते, गूंगों का बोलना तथा लंगड़ों का उछलना-कूदना देखा।

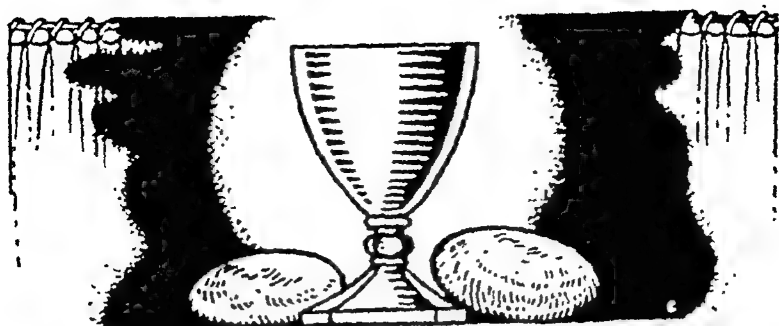
बच्चे प्रसन्नतापूर्वक स्तुति कर रहे थे। उन्होंने यहीं होशन्ना पुकारना आरम्भ कर दिया था जब कि यीशु के यरूशलेम प्रवेश पर भीड़ पुकार रही थी। समस्त मन्दिर उनकी स्तुति की ध्वनि से गूंज रहा था, "दाऊद की सन्तान को होशन्ना, धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।" मत्ती २१: ९।

अधिकारियों ने प्रसन्न बच्चों की ध्वनि को शान्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु वे यीशु के आश्चर्यकर्मों को देख कर डर गए। [illegible] थे कि वे अब अधिक आगे न [illegible] कर उनकी स्तुति कर रहे थे।

फिर वे अधिकारी यीशु के पास पहुंचे, उनको आशा थी कि वह बच्चों को चुप रहने की आज्ञा देगा। उन्होंने उससे कहा, "क्या तू सुनता है कि ये लोग किस विषय में क्या कह रहे हैं?"

यीशु ने उत्तर दिया, "हां, क्या तुमने यह कभी नहीं पढ़ा कि बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से तू ने स्तुति सिद्ध कराई?" मत्ती २१: १६।

[illegible] के प्रकार का [illegible] और पूरा कर उसके कामों का [illegible] बताया, वे दोनों ही बातें बहुत अधिकारियों तथा महायाजकों ने अस्वीकार कर दी थीं। परन्तु परमेश्वर की स्तुति अवश्य की जानी थी और इसके परमेश्वर ने बालकों को चुना कि वे उसकी स्तुति करें।



# फसह का पर्व्व

इस्राएल की सन्तान ने प्रथम फसह उस समय खाया जब कि वह मिस्र की दासता से मुक्त हुई थी।

परमेश्वर ने उनको स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा की थी। उसने उनको बता दिया था कि प्रत्येक मिस्री परिवार के पहलौठे को मार दिया जाएगा। उसने इस्राएलियों को बता दिया था कि जिस मेम्ने को वे बलि करें उसका लोहू अपने दरवाजों की चौखटों पर लगा दें ताकि मृत्यु का दूत लोहू को देख कर उनको सकुशल छोड़ दे।

उनको यह आज्ञा दी गई थी कि वे मेम्ने को रात्रि में ही भून कर अखमीरी रोटी और कड़वे साग के साथ खाएं, कड़वा साग उनकी दासता की कड़ुवाहट का प्रतीक था। उनको बताया गया था कि वे यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार हो कर उस मेम्ने को खाएं। उनको अपनी अपनी जूतियां पहन कर और हाथ में लाठी लिए हुए पूरी तरह तैयार हो कर उस मेम्ने को खाना था।

जैसा परमेश्वर ने कहा था उन्होंने वैसा ही किया और उसी रात्रि को मिस्र के राजा की ओर से उनको आज्ञा दी गई कि वे स्वतंत्र हैं और वे जहां चाहें जा सकते हैं। प्रातःकाल वे प्रतिज्ञा किये हुए देश की ओर चल पड़े।

[illegible]

[illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible] हुआ [illegible] और [illegible]

[illegible] और [illegible] दिया [illegible] हुआ [illegible]

[illegible] किया [illegible]

इस प्रकार [illegible] था [illegible]

[illegible] थी।

अन्त में उसने हृदयस्पर्शी शोकाकुल शब्दों में उनसे कहा :

"मुझे बड़ी लालसा थी कि दुख भोगने से पहले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं।"

मेज पर दाखरस रखा हुआ था, उसने एक प्याला दाखरस लिया, "और धन्यवाद किया और कहा, इसको लो और आपस में बांट लो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाखरस अब से कभी न पीऊंगा।" लूका २२ : १५,१७,१८।

यह मसीह का अपने शिष्यों के साथ अन्तिम फसह था। वास्तव में यह सभी के लिए अन्तिम फसह का पर्व्व था। क्योंकि मेम्ने का बलिदान लोगों को मसीह की मृत्यु की शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया गया था, और जब मसीह, जो कि परमेश्वर का मेम्ना है, संसार के पापों के लिए बलिदान होने जा रहा था तो फिर उसकी मृत्यु का प्रतिनिधित्व करने वाले मेम्ने का बलिदान अनावश्यक हो गया था।

जब यहूदियों ने मसीह को क्रूस पर चढ़ा कर उसके प्रति अपनी अस्वीकृति पर छाप लगा दी, तो उन्होंने फसह के महत्व और उसके मूल्य को अस्वीकार कर दिया। इसके पश्चात् फसह के पर्व्व का आयोजन उनके लिए महत्त्वहीन हो गया था।

जब मसीह इस भोज में सम्मिलित हुआ तो उसके मस्तिष्क में अपने अन्तिम महान बलिदान का दृश्य घूम रहा था। वह इस समय क्रूस की छाया तथा दुख की अवस्था में व्यथा सहन कर रहा था। उसको ज्ञात था कि हार्दिक पीड़ाएं उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। वह उन मनुष्यों की कृतघ्नता तथा निर्दयता को जानता था जिनको बचाने के लिए वह इस संसार में आया था। परन्तु वह केवल अपने ही दुखों का विचार नहीं कर रहा था। वह उन लोगों के प्रति भी सहानुभूति रखता था और उनके कारण दुखी हो रहा था जिन्होंने उसे अपना मुक्तिदाता न मान कर स्वयं को अनन्त जीवन से वंचित कर दिया था।

और अब ? लिन्दा के विचार ने उसके मस्तिष्क में स्थायी अधिकार कर लिया था। उसका ख्याल था कि जब उसके बच्चे का जन्म हो जाएगा, तो वे [illegible] के लिए नहीं रुक जाएंगे। उसका उससे बहुत कुछ कहना था ताकि जब वह उसके साथ न रहे तब भी उसका वचन हृदय में अंकित रहे। उसे यही आशा थी कि अपनी मृत्यु के पहले अन्तिम भेंट में, वह अपनी लिन्दा को ये बातें स्पष्ट कर देगा।

परन्तु वह उनसे ये बातें इस समय नहीं कह सकता था। उसने देख लिया था कि इस समय वे उसकी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं थे।

उसमें बराबर यह विचार हो रहा था। उसका [illegible] भी यही विचार था [illegible] और उसमें [illegible] उसके [illegible] में [illegible] था। [illegible] हृदय में एक दूसरे के विरुद्ध ईर्ष्या [illegible] था।

इस बात का अन्य कारण भी था। नगर के भाग में [illegible] कि अब केवल [illegible] के पास [illegible] था। इस अवसर पर इस दशा का [illegible] करने के लिए सभी तैयारियाँ कर ली गई थीं। [illegible] से भरा हुआ [illegible] हुआ था परन्तु कोई [illegible] उपस्थित नहीं था और वह बातें वह लिन्दा को बताना था।

परन्तु [illegible] लिन्दा [illegible] के विचार [illegible] था कि वह [illegible] का पालन नहीं कर सकेगा। वे [illegible] के लिए तैयार नहीं थे और इसीलिए [illegible] बैठे हुए थे।

यीशु कुछ देर तक प्रतीक्षा करता रहा कि क्या होता है। फिर वह स्वयं मेज पर से उठा। उसने तौलिये से अपनी कमर बांधा और चिलमची में पानी उंडेल कर शिष्यों के पांव धोने आरम्भ कर दिए। उनके वाद-विवाद से उसे बहुत शोक हुआ था, परन्तु उसने कटु शब्दों में उनकी निन्दा नहीं की। उसने अपने शिष्यों के पांव धोकर सेवक का कार्य करते हुए उस पर अपना प्रेम प्रगट किया। जब उसका कार्य समाप्त हो गया तो उसने उनसे कहा, "यदि मैंने प्रभु और गुरु हो कर तुम्हारे पांव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिये। क्योंकि मैंने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।"
यूहन्ना १३ : १४, १५।

इस प्रकार मसीह ने उनको शिक्षा दी कि किस प्रकार उनको एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। अपने लिए उच्च पद की प्राप्ति की इच्छा की अपेक्षा उनमें से प्रत्येक को अपने भाई की सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए।

मुक्तिदाता दूसरों के लिए कार्य करने के वास्ते इस संसार में आया। वह उनको बचाने के लिए आया जो पाप के बन्धनों में जकड़े हुए हैं। वह हमसे भी यही चाहता है।

अब उनके शिष्य अपनी ईर्ष्या पर लज्जित हो रहे थे। उनके हृदयों में अपने प्रभु के प्रति अधिक प्रेम भर गया था और उनमें एक दूसरे के प्रति भी प्रेम उत्पन्न हो गया था। अब वे मसीह की शिक्षा सुनने के लिए पूर्णतया तैयार हो गए थे।

जब वे मेज पर बैठे हुए थे तो यीशु ने रोटी की और धन्यवाद किया और तोड़ कर शिष्यों को देते हुए कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए दी जाती है, मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।

[illegible] विद्यार्थी के [illegible] नहीं जाता है। [illegible]

[illegible] है [illegible] और [illegible] ।

[illegible] और [illegible] शरीर के [illegible] है [illegible] कि [illegible] नहीं [illegible] और [illegible] नहीं और [illegible] है कि [illegible] विश्वास करते हैं। [illegible] है कि [illegible] स्वीकार करते हैं।

[illegible] है। [illegible] और [illegible] बैठ [illegible] हैं।

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible]

और [illegible] है।

[illegible]

इच्छा पूरी कर सकते हैं। हम में भी उसी के समान बालक की भांति परमेश्वर पर भरोसा होना चाहिए। मसीह ने कहा, "तुम मेरे बिना कुछ नहीं कर सकते।" यूहन्ना १५ : ५

उद्यान के निकट पहुंचते ही मक्तिदाता की भयानक व्यथा की रात्रि आरम्भ हो चुकी थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि परमेश्वर की उपस्थिति जो उसकी शक्ति तथा सहायता का स्रोत था अब सूख चुका था। वह ऐसा अनुभव करने लगा था कि अब वह परमेश्वर पिता की सहायता से वंचित हो गया है।

मसीह के लिए संसार के पापों का भार सहन करना आवश्यक था। अब जब कि संसार के पाप उस पर लाद दिए गए थे तो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनको सहन कर लेना उसके लिए बहुत कठिन है। पाप और दोष बहुत भयानक थे उसे यह भय था कि परमेश्वर अब उससे प्रेम नहीं कर सकेगा।

जब उसने यह अनुभव किया कि पिता, पापों तथा दुष्टता का कितना विरोधी है तो उसके मुंह से अनायास ही ये शब्द निकल पड़े, "मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते हैं।"

उद्यान के फाटक के निकट यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना के अतिरिक्त सभी शिष्यों को ठहरने का आदेश दिया और उन तीन शिष्यों को साथ ले कर उद्यान में चला गया। ये तीनों उसके अत्यधिक निष्ठावान अनुयायी थे और उनके निकटतम सहयोगी रहे थे। परन्तु उनको भी अपने दुःख में सहभागी बनाना उससे सहन नहीं हुआ। उसने उनसे कहा :

"तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।" मत्ती २६ : ३८।

वह उनसे थोड़ा और आगे बढ़ कर मुंह के बल गिरा। वह ऐसा अनुभव कर रहा था कि पापों के कारण वह अपने पिता परमेश्वर

से पृथक हो गया है। उनके बीच की खाई इतनी अधिक चौडी, इतनी अधिक काली और इतनी अधिक गहरी दिखाई दे रही थी कि वह कापने लगा था।

मसीह अपने पापो के लिए ऐसा भयानक कष्ट नही सहन कर रहा था परन्तु वह ससार के पापो के कारण सहन कर रहा था। वह पापी के समान उस महान न्याय के दिन पाप के प्रति परमेश्वर की अरुचि अनुभव कर रहा था।

भयानक व्यथा के कारण मसीह भूमि पर पडा हुआ था, वह कापते हुए होठो से चिल्ला उठा, "हे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझसे टल जाए तौभी जैसा मैं चाहता हू वैसा नही, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।' मत्ती २६ ३९।

एक घन्टे तक मसीह भूमि पर पडा हुआ अकेला ही यह व्यथा सहन करता रहा। फिर वह अपने शिष्यो के पास आया, उसे आशा थी कि वे उससे कुछ सहानुभूति के शब्द कहेंगे। परन्तु कोई सहानुभूति उसकी प्रतीक्षा नही कर रही थी क्योंकि वे सो रहे थे। वे उसके शब्द सुन कर जाग उठे परन्तु उस सरलता से पहचान न सके। दु ख के कारण उसका चेहरा परिवर्तित हो चुका था। उसने पतरस को सम्बोधित करते हुए कहा हे शमौन तू सो रहा है? क्या तू एक घडी भी न जाग सका?' मरकुस १४ ३६।

उद्यान के निकट पहुचने पर यीशु ने अपने शिष्यो से कहा था, "तुम सब आज ठोकर खाओगे। उन्होने उसको निश्चित आश्वासन दिया था वे उसके साथ बन्दीगृह में जाने और मृत्यु तक सहन करने के लिए तैयार है। और बेचारे आत्मविश्वासी पतरस ने तो यहा तक कहा था, "यदि सब ठोकर खाय पर मैं ठोकर नहीं खाऊगा।" मरकुस १४ २७ २९।

परन्तु शिष्य अपने पर भरोसा कर रहे थ। व उस महान सहायक की ओर नही देख रहे थे जिसका दमन क लिए मसीह न

उनको बार बार शिक्षा दी थी। सो जब कि मुक्तिदाता को उनकी सहानुभूति तथा प्रार्थनाओं की आवश्यकता थी, वे सो गए थे। यहां तक कि पतरस भी सो गया था।

और मसीह का प्रिय शिष्य यूहन्ना, जो उसकी छाती पर झुका था, वह भी सो गया था। निश्चय ही मुक्तिदाता के प्रति अपना प्रेम प्रकट करने के लिए उसे जागते रहना चाहिए था। उसकी प्रार्थना मुक्तिदाता की प्रार्थना में सम्मिलित हो कर उसके दुःख के समय परमेश्वर के निकट पहुंचनी चाहिए थी। मुक्तिदाता अनेक वार समस्त रात्रि अपने शिष्यों के लिए प्रार्थना करता रहा था फिर भी वे उसके लिए एक घन्टा भी न जाग सके।

यदि मसीह ने इस समय याकूब और यूहन्ना से यह प्रश्न किया होता, "जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं तुम ले सकते हो?" वे पहले ही के समान सरलता से यही उत्तर दिये होते, "हमसे हो सकता है।" मरकुस १० : ३८, ३९।

मुक्तिदाता का हृदय शिष्यों की दुर्बलता के प्रति स[illegible] भरा हुआ था। उसे भय था कि वे उस परीक्षा को [illegible] सकेंगे जो उसके दुःख तथा उसकी मृत्यु के कारण उन प[illegible]

फिर भी उसने उनकी दुर्बलता के लिए कड़ी आ[illegible] की। उसने उनके सन्मुख आगामी परीक्षा देख ली औ[illegible] "जागते रहो और प्रार्थना करते रहो ताकि परीक्[illegible]

उसने अपने प्रति उनके कर्त्तव्य-पालन की [illegible] में कहा, "आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्ब[illegible] मुक्तिदाता के प्रेम तथा स्नेह का यह कैसा [illegible]

परमेश्वर का पुत्र एक बार फिर व्यथा [illegible] थक कर अचेत अवस्था में लड़खड़ाता हु[illegible] आ कर प्रार्थना करने लगा :



## गतसमनी में

गतसमनी बाग में उस रात को जब यीशु ने प्रार्थना की तो पाप का भयानक बोझ उस पर लदा था।

"हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पिये बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।" मत्ती २६:४२।

इस प्रार्थना में उसने ऐसी व्यथा अनुभव की कि उसका पसीना लोहू की बड़ी बड़ी बूंदों के समान भूमि पर गिरने लगा। वह फिर सहानुभूति प्राप्त करने की इच्छा से शिष्यों के पास लौट आया और उसने उनको फिर सोते पाया। उसकी उपस्थिति से वे फिर जाग उठे। उन्होंने भयभीत हो कर उसके चेहरे को देखा क्योंकि उसके चेहरे पर रक्त के धब्बे दिखाई दे रहे थे। वे उसकी मानसिक व्यथा को न समझ सके जो उसके चेहरे से प्रगट हो रही थी।

तीसरी बार वह फिर प्रार्थना करने के लिये उसी स्थान पर गया। अब भय का घोर अन्धकार उस पर छा गया था। वह अब परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित हो गया था। इसके अभाव में उसे भय था कि मात्र मानव स्वभाव ऐसी परीक्षा सहन न कर सकेगा।

तीसरी बार वह फिर पहले के ही समान प्रार्थना करता है। स्वर्गदूत उसको सहायता पहुंचाने के लिए उत्सुक हो रहे हैं, परन्तु ऐसा नहीं हो सकता था। परमेश्वर के पुत्र को वह कटोरा अवश्य पीना था अन्यथा समस्त संसार का विनाश अवश्यम्भावी था। मसीह मनुष्य की असहाय दशा को देखता है। वह पाप की शक्ति को देखता है। विनाशशील संसार के विलाप का दृश्य उसके सन्मुख साकार हो उठता है।

वह अन्तिम निर्णय कर लेता है। वह किसी भी मूल्य पर पतित मनुष्य को बचाने के लिए कृतसंकल्प है। वह स्वर्ग का छोड़ कर आया है, जहां शुद्धता है, प्रसन्नता है, महिमा है, और वह पापों में डूबे हुए संसार को बचाने के लिए आया है। वह अपने उद्देश्य से किसी भी दशा में विमुख नहीं हो सकता। अब उसकी प्रार्थना एक आधीन हो जाने वाली प्रार्थना बन जाती है।

"यदि यह मेरे पिए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।"

मुक्तिदाता अब मृतक के समान भूमि पर गिर पड़ता है। वहां कोई शिष्य उपस्थित नहीं है जो कि उसके सिर के नीचे अपना हाथ रख दे और उसके विकृत मुख का पसीना पोंछ दे। मसीह यहां अकेला है और उसके इतने अधिक लोगों में से एक भी उसके पास नहीं है।

परन्तु परमेश्वर अपने पुत्र के साथ कष्ट भोगता है। स्वर्गदूत उसकी व्यथा को देख रहे हैं। स्वर्ग में सन्नाटा छाया हुआ है, वहां एक भी वीणा नहीं बज रही है। यदि मनुष्य इस स्वर्गीय सेना के आश्चर्य और शोक का दृश्य देख सकता तो उसे यही दिखाई देता कि पिता ने अपनी ज्योति की किरणें, प्रेम तथा महिमा अपने प्रिय पुत्र से पृथक कर दी हैं, तब वह पाप के भयानक परिणाम को अधिक स्पष्टता से समझ सकता था।

अब एक शक्तिशाली दूत मसीह के निकट पहुंच जाता है। वह उस कष्ट सहने वाले अलौकिक व्यक्ति का सिर अपनी गोद में रख लेता है। फिर वह स्वर्ग की ओर संकेत करते हुए कहता है कि वह शैतान पर विजय प्राप्त कर चुका है और इसके फलस्वरूप लाखों व्यक्ति विजयी हो कर उस महिमा के साम्राज्य में प्रविष्ट होने जा रहे हैं।

अब मुक्तिदाता के मुख पर स्वर्गीय शान्ति की आभा दिखाई दे रही है। उसने ऐसा असीम कष्ट भोगा जैसा कोई मनुष्य नहीं भोग सकता क्योंकि उसने सभी मनुष्यों के लिए मृत्यु का स्वाद चखा है।

फिर यीशु अपने शिष्यों के पास आता है, और फिर उनको सोते हुए पाता है। यदि वे जागते और प्रार्थना करते रहते तो आने वाली परीक्षा का सामना करने के लिए उनको शक्ति प्राप्त होती।

इसमें वे सो जाने के कारण वंचित हो गए और जब परीक्षा की घड़ी आई तो उसका सामना करने में वे असफल रहे।

उनकी ओर शोकपूर्ण दृष्टि डालते हुए मसीह ने कहा "अब सोते रहो, और विश्राम करो, देखो घड़ी आ पहुंची है और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है।"

वह यह कह ही रहा था कि उसे भीड़ के आने की पगध्वनि सुनाई दी जो कि उसे खोजने के लिए आ रही थी। फिर उसने कहा, "उठो, चलें, देखो मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है।" मत्ती २६ ४५, ४६।



# विश्वासघात तथा पकड़ा जाना

जब यीशु अपने विश्वासघाती शिष्य से भेंट करने के लिए आगे बढ़ा तो उसके मुख पर व्यथा का कोई संकेत न था। अपने शिष्यों के आगे खड़े हो कर उसने पूछा :

"तुम किस को ढूंढते हो?"

उन्होंने उत्तर दिया, "यीशु नासरी को।"

यीशु ने कहा, "मैं ही हूं।" यूहन्ना १८: ४, ५।

जैसे ही यीशु के मुख से ये शब्द निकले, वही स्वर्गदूत जो उद्यान में उसकी सेवा कर रहा था उसके और भीड़ के मध्य में आ कर खड़ा हो गया। मुक्तिदाता के मुखमण्डल पर स्वर्गीय ज्योति चमकने लगी और कबूतर के समान एक आकृति ने उसे ढांप लिया।

ईश्वरीय महिमा की उपस्थिति में हत्यारी भीड़ एक पल भी खड़ी न रह सकी। वे लड़खड़ाते हुए पीछे हट गए तथा महायाजक, प्राचीन, सैनिक तथा अधिकारी मृतक के समान भूमि पर गिर पड़े।

स्वर्गदूत पीछे हटा और ज्योति अन्तर्धान हो गई, यीशु बचकर निकल सकता था, परन्तु वह वहीं खड़ा रहा। उसके मुख पर असीम शान्ति थी और उसमें दृढ़ आत्मविश्वास था। उसके शिष्य ऐसे

आश्चर्यचकित हो गए थे कि उनके मुख मे एक भी शब्द नही निकला।

रोमी सैनिक शीघ्र ही उठ कर खडे हो गए। महायाजको और यहूदा के साथ उन्होने यीशु को घेर लिया। वे अपनी दुर्बलता पर लज्जित हो गए थ, और वह कही भाग न निकले इसलिए भयभीत भी हो उठे थे। मुक्तिदाता ने फिर उनसे प्रश्न किया

"तुम किस का ढुढते हो ?"

फिर उन्होंने वही उत्तर दिया, "यीशु नासरी को।"

तब मुक्तिदाता ने कहा, "मै तो तुमसे कह चुका हू कि मै ही हू, यदि मुझे ढूढते हो तो इनको ( शिष्यो की ओर सकेत करते हुए ) जाने दो।" यूहन्ना १८ ७, ८।

ऐसी भयानक परीक्षा की घडी में भी मसीह को अपने प्रिय शिष्यों का ध्यान था। वह उनको किसी प्रकार का कष्ट नही सहने देना चाहता था, यद्यपि वह स्वय बन्दीगृह तथा मृत्यु का कष्ट सहन करने जा रहा था।

यहूदा, विश्वासघाती अपनी भूमिका को नही भूला। वह यीशु के निकट आया और उसने उसे चूमा।

यीशु ने उससे कहा, "हे मित्र, जिस काम के लिए तू आया है, उसे कर ले।" मत्ती २६ ५०। फिर उसकी वाणी काँपने लगी, जब कि उसने कहा, "हे यहूदा, क्या तू चूमा ले कर मनुष्य के पुत्र को पकडवाता है ?" लूका २२ ४८।

यीशु के इन मधुर वचनो से यहूदा का हृदय द्रवित हो जाना चाहिए था, परन्तु इस अवसर पर समस्त नम्रता तथा सम्मान उसके हृदय से निकल गया था, यहूदा ने स्वय को पूर्णतया शैतान का समर्पित कर दिया था। वह साहसपूर्वक प्रभु के सन्मुख खडा रहा

और वह उसको क्रुद्ध भीड़ के हाथ सौंपने में जरा भी लज्जा नहीं अनुभव कर रहा था।

यीशु ने विश्वासघाती को चूमा लेने से नहीं रोका। उसने सहनशीलता, प्रेम तथा दया का एक उदाहरण प्रस्तुत किया। यदि हम उसके शिष्य हैं, तो हमें अपने शत्रुओं के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि उसने यहूदा के साथ किया।

जब हत्यारी भीड़ ने यहूदा को यीशु के शरीर को स्पर्श करते देखा जो कि अभी कुछ देर पहले उनकी आंखों के सम्मुख महिमा से पूर्ण था, तो उसका साहस बढ़ गया। उन्होंने मुक्तिदाता पर हाथ डाल कर उसे पकड़ लिया और उसके उन हाथों को बांध लिया जो कि सदा भलाई के कार्य करते रहे थे।

शिष्यों को यह विचार तक नहीं आया था कि यीशु उनके हाथों में स्वयं को सौंप देगा। वे यह समझ रहे थे कि जिस शक्ति ने उनको मृतक के समान भूमि पर गिरने के लिये विवश कर दिया था, वह उनको उस समय तक असहाय बनाए रखेगी जब तक कि मसीह तथा उसके सहयोगी वहां से बच कर नहीं निकल जाते।

वे निराश तथा क्रोधित हो गए जब कि उन्होंने रस्सियों द्वारा उन हाथों को बांधे जाते देखा जिनसे उनको प्रेम था। पतरस ने क्रोध से भर कर अपनी तलवार खींच ली और अपने स्वामी को छुड़ाने का प्रयत्न किया और इस संघर्ष में महायाजक के सेवक का कान कट गया।

जब यीशु ने यह देखा तो उसने रोमी सैनिकों द्वारा पकड़े गए अपने हाथ छुड़ा लिए और कहा, "अब बस करो।" लूका २२ : ५१। और उसका कान छू कर उसे अच्छा कर दिया।

फिर उसने पतरस से कहा, "अपनी तलवार काठी में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे।

क्या तू नही समझता कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हू, और वह स्वर्गदूतो की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा ? परन्तु पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, क्योंकर पूरी होगी ?" मत्ती २६ ५२-५४। "जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊ ?" यूहन्ना १८ ११।

फिर यीशु महायाजको और मन्दिर के अधिकारियो की ओर मुडा जो कि लोगो की एक भीड ले कर वहा पहुचे थे और उसने कहा, ' क्या तुम डाकू जान कर मरे पकडने के लिए तलवारें और लाठिया ले कर निकले हो ? मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहकर उपदेश दिया करता था और तब तुमने मुझे न पकडा, परन्तु यह इसलिये हुआ है कि पवित्र शास्त्र की बातें पूरी हो।" मरकुस १४ ४८, ४९।

शिष्य क्रोधित हो उठे जब कि उन्होने देखा कि मुक्तिदाता ने अपने शत्रुओ के हाथ से स्वय को छुडाने का कोई प्रयास नही किया। वे उसे ऐसा न करने के लिए दोषी ठहराने लगे। वे भीड के सन्मुख उसके आत्मसमर्पण की वास्तविकता को नही समझ सके और भयभीत हो कर उसे छोड कर भाग गए।

मसीह ने उनके भाग जाने के विषय में पहले ही कह दिया था। ' देखो " उसने कहा था वह घडी आती है वरन आ पहुची कि तुम सब तित्तर-बित्तर हो कर अपना अपना मार्ग लोगे और मुझे अकेला छोड दोगे, तौभी मैं अकेला नही क्योकि पिता मेरे साथ है।" यूहन्ना १६ ३२।



# हन्ना महायाजक के सामने

गतसमनी के उद्यान से जो भीड़ यीशु के पीछे चल रही थी वह चिल्लाती हुई जा रही थी। मसीह चलते समय शरीर में पीड़ा अनुभव कर रहा था क्योंकि उसके हाथों को कस कर बांधा गया था और सैनिक उसे चारों ओर से घेरे हुए थे।

उसे सबसे पहले हन्ना के घर ले जाया गया जो पहले महायाजक था परन्तु अब उसके स्थान पर उसका दामाद कैफा, महायाजक का कार्य कर रहा था। दुष्ट हन्ना ने बन्दी अवस्था में नासरत के यीशु को देखने की इच्छा प्रकट की थी। वह उसे दण्डित करने के लिए उसके विरुद्ध कुछ प्रमाण भी एकत्रित करने के लिए इच्छुक था।

इन बातों को दृष्टि में रखते हुए उसने मुक्तिदाता से उसकी शिक्षाओं तथा उसके शिष्यों के विषय में प्रश्न करने आरम्भ किए। उसके उत्तर में यीशु ने कहा :

"मैंने जगत से खोल कर बातें कीं, मैंने सभाओं और आराधनालय में जहां सब यहूदी इकट्ठा हुआ करते हैं, सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा। तू मुझसे क्यों पूछता है ? सुनने वालों से पूछ, कि मैंने उनसे क्या कहा ? देख वे जानते हैं कि मैंने क्या क्या कहा ?" यूहन्ना १८ : २०, २१।

महायाजकों ने यीशु पर दृष्टि रखने के लिए गुप्तचर नियुक्त कर रखे थे जो उसके प्रत्येक शब्द की सूचना उनके पास पहुंचा देते थे। ये गुप्तचर उसके उपदेश तथा कार्यों के विषय में सब कुछ जानते थे। उन्होंने उसको अपने प्रश्नों द्वारा जाल में फंसाने का प्रयास भी किया था जिससे वे उसे दण्ड दिलवा सकें। इसीलिए मुक्तिदाता ने कहा, "सुनने वालों से पूछ कि मैंने उनसे क्या कहा।" अपने गुप्तचरों के पास जा कर उनसे पूछ। जो कुछ मैंने कहा है, उसे वे जानते हैं, वे तुझे बताएंगे कि मेरी शिक्षाएं क्या हैं। मसीह के शब्द ऐसे हृदयस्पर्शी थे कि महायाजक यह अनुभव करने लगा कि बन्दी उसकी आत्मा के विचार पढ़ रहा है।

परन्तु महायाजक के सेवकों में से एक ने यह विचार करते हुए कि उसके स्वामी को यथोचित सम्मान नहीं दिया जा रहा है, यीशु के मुंह पर थप्पड़ मारते हुए कहा, "तू महायाजक को ऐसा उत्तर देता है?"

यीशु ने इसका नम्रतापूर्वक उत्तर देते हुए कहा

"यदि मैंने बुरा कहा तो उस बुराई पर गवाही दे, परन्तु यदि भला कहा, तो मुझे क्यों मारता है?" यूहन्ना १८ २२, २३।

मसीह स्वर्गदूतों की विशाल सेना बुला सकता था। परन्तु पृथ्वी पर उसके आने का उद्देश्य ही यह था कि वह मनुष्यों द्वारा अपमान तथा निरादर सहन करे और अपने कार्य को आधीनतापूर्वक पूरा करे।

हन्ना के घर से मुक्तिदाता को कैफा के महल में ले जाया गया। उस पर सेन्हेड्रीन सभा में मुकद्दमा चलाया जाना था और जब कि इस सभा के सदस्यों को एकत्रित किया जा रहा था तो हन्ना और कैफा ने उससे फिर प्रश्न करने आरम्भ कर दिए, परन्तु उनको इसमें कोई लाभ न मिला।

जब सेन्हेड्रीन सभा के सदस्य एकत्रित हो गए तो कैफा अध्यक्ष के स्थान पर बैठ गया, उसके दोनों ओर न्याय करने वाले सदस्य

बैठे थे और उसके सामने रोमी सैनिकों के पहरे में मुक्तिदाता खड़ा हुआ था और उसके पीछे दोष लगाने वाली भीड़ खड़ी हुई थी।

तब कैफा ने यीशु को आज्ञा दी कि वह सभा के सन्मुख एक आश्चर्यकर्म कर के दिखाए। परन्तु मुक्तिदाता ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया कि उसने कैफा के शब्द सुन लिए थे। यदि वह आत्माओं को वेधने वाली वही दृष्टि उन पर डालता जो उसने मन्दिर में लेन-देन करने वालों पर डाली थी तो समस्त हत्यारी भीड़ उसके सामने से भाग जाने पर विवश हो जाती।

यहूदी उस समय रोमी राज्य के आधीन थे और उनको किसी को भी मृत्यु दण्ड देने का अधिकार नहीं था। सेन्हेड्रीन सभा केवल मुकद्दमा चला सकती थी परन्तु दण्ड का रोमी शासकों द्वारा अनुमोदन अनिवार्य था।

अपने दुष्ट अभिप्राय की पूर्ति के लिए उनके लिए यह आवश्यक था कि वे मुक्तिदाता में कोई ऐसा दोष खोजें जिसको रोमी राज्यपाल पूर्ण अपराध स्वीकार करके उनके द्वारा निर्धारित दण्ड का अनुमोदन कर सके। उनके पास इसका पर्याप्त प्रमाण था कि मसीह ने यहूदी प्रथाओं तथा परम्पराओं के विरोध में बहुत कुछ कहा था। उनके लिए यह प्रमाणित करना सरल था कि उसने महायाजकों तथा फरीसियों की निन्दा की थी और उनको पाखण्डी कहा था। परन्तु इन बातों का रोमी शासकों पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ने की सम्भावना नहीं थी, वे फरीसियों के ढोंग से पहले ही तंग आ चुके थे।

मसीह पर अनेक आरोप लगाए गए, परन्तु इनमें या तो साक्षियों में विरोधाभास था या प्रमाण इतने दुर्बल थे जो कि रोमी शासकों द्वारा स्वीकार नहीं किए जा सकते थे। उन्होंने उस पर लगाए गए आरोपों का उनसे उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया, परन्तु उसने उनकी ऐसी उपेक्षा कर दी जैसे कि उसने उनकी बातें सुनी ही न

हा। मसीह का इस अवसर पर चुप रहना यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा इन शब्दों में व्यक्त किया गया है :

"वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुह न खोला; जिस प्रकार भेड वध होने के समय वा भेड ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुह न खोला।" यशायाह ५३ ७।

महायाजक अब भयभीत होने लगे थे कि वे उसके विरुद्ध कोई ऐसा प्रमाण एकत्रित न कर सकेंगे जिससे वे बन्दी का पीलातुस द्वारा दण्डित करा सकें। उन्होंने एक अन्तिम प्रयास करने का निश्चय किया। महायाजक ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठा कर यीशु को सम्बोधित करते और शपथ दिलाते हुए कहा।

"मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हू, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे।" मत्ती २६ ६४।

मसीह ने कभी अपने कार्य का इनकार नहीं किया और न ही परमेश्वर से अपने सम्बन्ध का इनकार किया। वह व्यक्तिगत निरादर पर चुप रह सकता था, परन्तु जब कभी उसके कार्य या परमेश्वर से उसके पुत्र-सम्बन्धी विषय पर प्रश्न उत्पन्न हुआ उसने स्पष्टता तथा निर्णयात्मक रूप में उसका उत्तर दिया।

उसका उत्तर सुनने के लिए प्रत्येक व्यक्ति कान लगा कर बैठा हुआ था और प्रत्येक की दृष्टि उस पर जमी हुई थी जब कि उसने उत्तर दिया

"तू ने आप ही कह दिया।"

उन दिनों की प्रथा के अनुसार इसी प्रकार का उत्तर दिया जाता था जैसे कि हम आजकल 'हां" या "जैसा आपने कहा वह ठीक है," कह कर उत्तर देते हैं। यह पूर्णतया स्वीकारात्मक उत्तर होता था। उसका मुखमण्डल फिर स्वर्गीय आभा से चमकने लगा जब कि उसने कहा :

बैठे थे और उनके सामने रोमी सैनिकों के पहरे में मुक्तिदाता खड़ा हुआ था और उसके पीछे दोष लगाने वाली भीड़ खड़ी हुई थी।

तब कैफा ने यीशु को आज्ञा दी कि वह सभा के सन्मुख एक आश्चर्यकर्म कर के दिखाए। परन्तु मुक्तिदाता ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया कि उसने कैफा के शब्द सुन लिए थे। यदि वह आत्माओं को बेधने वाली वही दृष्टि उन पर डालता जो उसने मन्दिर में लेन-देन करने वालों पर डाली थी तो समस्त हत्यारी भीड़ उसके सामने से भाग जाने पर विवश हो जाती।

यहूदी उस समय रोमी राज्य के आधीन थे और उनको किसी को भी मृत्यु दण्ड देने का अधिकार नहीं था। सेन्हेड्रीन सभा केवल मुकद्दमा चला सकती थी परन्तु दण्ड का रोमी शासकों द्वारा अनुमोदन अनिवार्य था।

अपने दुष्ट अभिप्राय की पूर्ति के लिए उनके लिए यह आवश्यक था कि वे मुक्तिदाता में कोई ऐसा दोष खोजें जिसको रोमी राज्यपाल पूर्ण अपराध स्वीकार करके उनके द्वारा निर्धारित दण्ड का अनुमोदन कर सके। उनके पास इसका पर्याप्त प्रमाण था कि मसीह ने यहूदी प्रथाओं तथा परम्पराओं के विरोध में बहुत कुछ कहा था। उनके लिए यह प्रमाणित करना सरल था कि उसने महायाजकों तथा फरीसियों की निन्दा की थी और उनको पाखण्डी कहा था। परन्तु इन बातों का रोमी शासकों पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ने की सम्भावना नहीं थी, वे फरीसियों के ढोंग से पहले ही तंग आ चुके थे।

मसीह पर अनेक आरोप लगाए गए, परन्तु इनमें या तो साक्षियों में विरोधाभास था या प्रमाण इतने दुर्बल थे जो कि रोमी शासक द्वारा स्वीकार नहीं किए जा सकते थे। उन्होंने उस पर लगाए गए आरोपों का उससे उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया, परन्तु उसने उनकी ऐसी उपेक्षा कर दी जैसे कि उसने उनकी बातें सुनी ही न

हो। मसीह का इस अवसर पर चुप रहना यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा इन शब्दो में व्यक्त किया गया है :

"वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुह न खोला; जिस प्रकार भेड वध होने के समय वा भेड ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुह न खोला।" यशायाह ५३ ७।

महायाजक अब भयभीत होने लगे थे कि वे उसके विरुद्ध कोई ऐसा प्रमाण एकत्रित न कर सकेंगे जिससे वे बन्दी को पीलातुस द्वारा दण्डित करा सकें। उन्होंने एक अन्तिम प्रयास करने का निश्चय किया। महायाजक ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठा कर यीशु को सम्बोधित करते और शपथ दिलाते हुए कहा।

"मै तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हू, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे।" मत्ती २६ ६४।

मसीह ने कभी अपने कार्य का इनकार नही किया और न ही परमेश्वर से अपने सम्बन्ध का इनकार किया। वह व्यक्तिगत निरादर पर चुप रह सकता था, परन्तु जब कभी उसके कार्य या परमेश्वर से उसके पुत्र-सम्बन्धी विषय पर प्रश्न उत्पन्न हुआ उसने स्पष्टता तथा निर्णयात्मक रूप में उसका उत्तर दिया।

उसका उत्तर सुनने के लिए प्रत्येक व्यक्ति कान लगा कर बैठा हुआ था और प्रत्येक की दृष्टि उस पर जमी हुई थी जब कि उसने उत्तर दिया

"तू ने आप ही कह दिया।"

उन दिनो की प्रथा के अनुसार इसी प्रकार का उत्तर दिया जाता था जैसे कि हम आजकल "हा" या "जैसा आपने कहा वह ठीक है," कह कर उत्तर देते है। यह पूर्णतया स्वीकारात्मक उत्तर होता था। उसका मुखमण्डल फिर स्वर्गीय आभा स चमकने लगा जब कि उसने कहा :

"वरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।" मत्ती २६ : ६४।

इस वक्तव्य द्वारा मुक्तिदाता ने उसके विपरीत दृश्य प्रस्तुत किया जो उस समय वहाँ दिखायी दे रहा था। उसने उस समय की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया जब कि वह श्रेष्ठ न्यायाधीश के रूप में स्वर्ग और पृथ्वी का न्याय करेगा। वह उस समय अपने पिता के सिंहासन पर विराजमान होगा और उसके निर्णय पर पुर्नविचार नहीं हो सकेगा।

उसने सुनने वालों के सम्मुख उस दिन का दृश्य प्रस्तुत किया जब कि वह हत्यारी तथा गाली-गलौज करने वाली भीड़ से नहीं घिरा हुआ होगा वरन स्वर्ग की शक्ति तथा महिमा से घिरा हुआ आकाश के बादलों पर बैठ कर पृथ्वी पर आएगा। उसके चारों ओर स्वर्गदूतों की सेना होगी। फिर वह अपने शत्रुओं पर दण्ड की आज्ञा घोषित करेगा और उन दण्ड पाने वालों में उपस्थित भीड़ भी होगी जो इस समय उस पर दोष लगा रही है।

जब यीशु ने स्वयं को परमेश्वर का पुत्र होने की घोषणा की तो संसार के न्यायी महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ डाले, यह उसने भय प्रदर्शित करने के लिए किया। उसने अपने दोनों हाथ स्वर्ग की ओर उठाते हुए कहा:

"इसने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? देखो, तुमने अभी यह निन्दा सुनी है! तुम क्या समझते हो?" न्यायियों ने उत्तर दिया, "वह वध होने के योग्य है।" मत्ती २६ : ६५, ६६।

यहूदियों के कानून के अनुसार बन्दी पर रात्रि में मुकद्दमा चला नियम के विरुद्ध था। यद्यपि उसको मृत्यु दण्ड देने का निश्चय [

जा चुका था परन्तु नियम के अनुसार उस पर दिन के समय मुकद्दमा चलाना आवश्यक था।

यीशु को हवालात में ले आया गया जहां सैनिकों तथा अन्य लोगों ने उसका अपमान किया और उसे ठठ्ठों में उड़ाया।

सूर्योदय के समय उसे फिर न्यायियों के सन्मुख ला कर खड़ा कर दिया गया और उनका अन्तिम दण्ड घोषित कर दिया गया।

नेताओं तथा साधारण लोगों पर एक शैतानी आवेश छा गया था। लोग जंगली पशुओं के समान चिल्ला रहे थे। वे चिल्लाते हुए यीशु पर झपट पड़े, "वह अपराधी है, उसे मार डालो!" और यदि वहां सैनिक उपस्थित न होते तो भीड़ उसे टुकड़े टुकड़े कर देती। परन्तु रोमी अधिकारियों ने बीच में पड़ कर रोक-थाम कर दी और उन्होंने हथियारों के बल पर उत्तेजित भीड़ को पीछे हटा दिया।

महायाजक, अधिकारी तथा साधारण लोग सम्मिलित हो कर मुक्तिदाता को गालियां दे कर उसकी निन्दा कर रहे थे। उसके सिर को एक पुराने वस्त्र से ढांप दिया गया था, और लोग उसके मुंह पर घूंसे मार रहे थे। वे उससे कह रहे थे, "भविष्यवाणी करके बता तुझे किसने मारा?" मत्ती २६.६८।

जब वह वस्त्र हटा लिया गया तो उपहास करने वालों में से एक ने उसके मुंह पर थूक दिया।

परमेश्वर के स्वर्गदूत सच्चाई के साथ उसके निरादर से सम्बन्धित प्रत्येक कार्य को लिख रहे थे। एक दिन आएगा जब कि जिन्होंने उसके उदास मुख पर थूका और उसे ठट्ठों में उड़ाया, उसका सूर्य के समान चमकता हुआ महिमायुक्त मुख देखेंगे।



# यहूदा

यहूदी अधिकारी यीशु को अपने अधिकार में लेने के लिए उत्सुक थे परंतु लोगों में विद्रोह हो जाने की आशंका से वे खुले रूप में उसे पकड़ने का साहस न कर सके। इसलिए उन्होंने एक ऐसा व्यक्ति खोज लिया जो गुप्त रूप से उनके साथ विश्वासघात करके उसे उनके हाथ में सौंप दे। उनको यहूदा उपयुक्त व्यक्ति दिखाई दिया जो कि यीशु के बारह शिष्यों में एक शिष्य था, और वह यह छल-पूर्ण कार्य करने पर सहमत हो गया था।

यहूदा में स्वभाव से ही धन के प्रति प्रेम था परन्तु वह सदा ही भ्रष्ट तथा दुष्ट नहीं रहा था और उसने पहले कभी ऐसा अधम कार्य करने का विचार तक नहीं किया था। उसने मन ही मन लोभ की आत्मा को उत्साहित किया था और फिर लोभ ने उस पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था और उसके फलस्वरूप अब वह अपने स्वामी को चांदी के तीस टुकड़ों में बेचने पर सहमत हो गया था जो कि उस युग में एक दास का मूल्य होता था। निर्गमन २१:२८–३२।

और अब गतसमनी के उद्यान में मुक्तिदाता को चूम कर पकड़वाने के लिये तत्पर हो गया था।

परन्तु वह परमेश्वर के पुत्र के पीछे पीछे चल रहा था। वह गतसमनी के उद्यान से यहूदी अधिकारियों के सम्मुख ले जाये जाने तक उसके साथ साथ रहा। उसने यह विचार नहीं किया था कि मुक्तिदाता यहूदियों द्वारा स्वयं को मार दिए जाने की अनुमति दे देगा।

प्रतिक्षण वह आशा लगाए हुए था कि ईश्वरीय शक्ति उसको उनके हाथ से मुक्त कर देगी जैसा कि पहले भी कर चुकी थी। परन्तु समय बीतता रहा और यीशु ने शान्त अवस्था में वे यातनाएं सहन कर लीं जो उसके सतानेवालों द्वारा उसको दी जा रही थीं, वह आधीन हो कर समस्त कष्ट सहन कर रहा था। अब विश्वासघाती के हृदय में भयानक भय समा गया, उसे ज्ञात हो गया कि वास्तव में उसने अपने स्वामी के साथ विश्वासघात करके पाप किया है और उसकी मृत्यु का उत्तरदायी वही है।

जब मुकद्दमा समाप्त हो गया तो यहूदा अपनी दोषी अन्तरात्मा की यातना अधिक सहन न कर सका। उस कमरे में तत्काल ही एक चीख सुनाई दी जिसने उपस्थित लोगों में भय उत्पन्न कर दिया।

हे कैफा, वह पूर्णतया निर्दोष है, उसे मुक्त कर दो, उसने मृत्यु दण्ड पाने के लिए कोई अपराध नहीं किया है!

यहूदा की लम्बी आकृति भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ती दिखाई दी। उसका मुख उदास तथा पीला दिखाई दे रहा था और उसके माथे से पसीना बह रहा था। उसने न्याय सिंहासन के सम्मुख पहुंच कर वे चांदी के तीस टुकड़े फेंक दिए जिनके लिए उसने अपने स्वामी से विश्वासघात किया था।

उसने महायाजक के वस्त्र का छोर पकड़ लिया और उससे यीशु को मुक्त कर देने की विनती करने लगा, उसने कैफा से कहा कि यीशु ने कोई अनुचित कार्य नहीं किया है। कैफा ने क्रुद्ध हो कर उसे एक ओर हटाते हुए कहा:

"हमें क्या, तू ही जान।"? मत्ती २७ : ४।

यहूदा फिर मुक्तिदाता के चरणों पर गिर पड़ा, उसने स्वीकार कर लिया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था और उसने यीशु से अनुरोध किया कि वह अपने शत्रुओं के हाथ से स्वयं को मुक्त कर दे।

मुक्तिदाता को ज्ञात था कि यहूदा वास्तव में जो कुछ कर चुका था उसके लिए पश्चाताप नहीं कर रहा था। यह झूठा शिष्य इस तथ्य से भयभीत हो उठा था कि उसके इस कार्य के लिए उसे भयानक दण्ड मिलेगा; परन्तु वह वास्तविक शोक प्रगट नहीं कर रहा था क्योंकि उसने निष्कलंक परमेश्वर के पुत्र के साथ विश्वासघात किया था।

फिर भी यीशु ने उसे अस्वीकार करने से सम्बन्धित एक भी शब्द नहीं कहा। उसने दयापूर्ण दृष्टि से यहूदा की ओर देखते हुए कहा : "मैं इसी घड़ी के लिए संसार में आया हूं।"

उपस्थित जन-समूह आश्चर्यचकित हो कर उसे देखने लगा। अपने विश्वासघाती के प्रति ऐसी उदारता देख कर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

यहूदा ने देख लिया कि उसका अनुरोध व्यर्थ है, वह कमरे में से चिल्ला कर निकल गया कि अब समय निकल गया है! मैंने देर कर दी है!

उसने अनुभव किया कि उसे यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने तक जीवित नहीं रहना चाहिए, वह निराश हो कर चला गया और जाकर अपने आप को फांसी दी।

उसी दिन कुछ घन्टों के पश्चात् क्रुद्ध भीड़ पीलातुस के न्याय आसन से मुक्तिदाता को कलवरी की ओर ले जा रही थी। अकस्मात् ही लोगों के चिल्लाने से भीड़ खड़ी हो गई। मार्ग के किनारे

एक सूखे पेड पर यहूदा का मृत शरीर लटका हुआ दिखाई दे रहा था।

उसके शव को तत्काल ही उस स्थान से हटा कर गाड दिया गया। परतु अब भीड द्वारा मुक्तिदाता का उपहास बन्द हो गया था और अनेक लोगो के चेहरे भय से पीले पड गए थे। जो मसीह के रक्त के प्रति दोषी थे उनमें प्रतिकार प्रारभ हो गया प्रतीत हो रहा था।



# पीलातुस के सामने

सैनहैड्रीन सभा के न्यायियों द्वारा यीशु को मृत्यु दण्ड देने के तुरन्त बाद उनको रोमी राज्यपाल पीलातुस के सम्मुख ले जाया गया जिससे उनके दण्ड की पुष्टि हो सके और उसे क्रियान्वित किया जा सके।

यहूदी महायाजक तथा मन्दिर के अधिकारी पीलातुस के न्यायालय के अन्दर प्रविष्ट नहीं हो सकते थे। उनकी औपचारिक राष्ट्रीय व्यवस्था के अनुसार ऐसा करने से वे अशुद्ध हो जाते और फिर फसह खाने से वंचित रह जाते।

अपनी मतान्धता के कारण वे यह न देख सके कि फसह का वास्तविक मेम्ना मसीह है और जब कि उन्होंने उसको अस्वीकार कर दिया था तो यह महान उत्सव उनके लिए अर्थहीन हो चुका था।

जब पीलातुस ने यीशु को देखा तो उसे वह श्रेष्ठ चरित्रवान तथा सम्मानित व्यक्ति जान पड़ा। उसके मुख पर अपराध का कोई चिन्ह नहीं दिखाई दिया। फिर पीलातुस ने याजकों की ओर देखते हुए कहा :

" तुम इस मनुष्य पर किस बात की नालिश करते हो ? " यूहन्ना १८:२९।

उस पर दोष लगाने वाले उसके विषय में विस्तारपूर्वक कुछ नहीं कहना चाहते थे और इसीलिए वे इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं थे।

उनको ज्ञात था कि वे रोमी राज्यपाल के सन्मुख ऐसा कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सकेंगे जिससे वह उसे मृत्यु दण्ड दे सके। सो महायाजकों ने अपनी सहायता के लिए झूठे गवाह प्रस्तुत किए। "और वे यह कह कर उस पर दोष लगाने लगे, कि हम ने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते और अपने आप को मसीह राजा कहते सुना है।" लूका २३ २।

यह झूठ था, क्योंकि मसीह ने स्पष्टता से कैसर को उपयुक्त सम्मान देने की शिक्षा दी थी। जब एक व्यवस्थापक ने इसी प्रश्न पर उसे अपनी बातों में फसाने का प्रयास किया था तो उसने उत्तर दिया था :

"जो कैसर का है, वह कैसर को और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।" मत्ती २२ २१।

पीलातुस इन झूठे गवाहों से सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह मुक्तिदाता की ओर मुड़ा और उसने पूछा "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

यीशु ने उत्तर दिया तू आप ही कह रहा है।" मत्ती २७ ११।

जब उन्होंने यीशु का यह उत्तर सुना तो कैफा तथा उसके सहयोगियों ने पीलातुस से कहा कि अब तो तू ने स्वय उसकी गवाही सुन ली है और जो दोष उन्होंने उस पर लगाया था, उसको उसने स्वीकार कर लिया है। वे चिल्ला पड़े कि उसे क्रूस पर चढ़ा कर मृत्यु दण्ड दिया जाए।

जब यीशु ने अपने दोष लगाने वालों को कोई उत्तर नहीं दिया तो पीलातुस ने उससे कहा

"क्या तू नहीं सुनता, कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियाँ दे रहे हैं?"

"परन्तु उसने उसको एक बात का भी उत्तर नहीं दिया।" मत्ती २७ ११।

पीलातुस असंमजस में पड़ गया। उसने मसीह में किसी प्रकार के रोष का प्रमाण नहीं पाया और उसको दोष लगाने वालों पर विश्वास नहीं था। उसकी शान्त तथा सौजन्यता से पूर्ण प्रकृति, दोष लगाने वालों की उत्तेजना तथा आवेश के सर्वथा विपरीत थी। पीलातुस पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा, उसकी निर्दोषता उस पर स्पष्ट हो गई थी।

यीशु से सत्य ज्ञात करने के विचार से पीलातुस यीशु का हाथ पकड़ कर एक ओर ले गया और उससे पूछा :

"क्या तू यहूदियों का राजा है ?"

मसीह ने उसके इस प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दिया, बल्कि उससे प्रश्न किया :

"क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझसे कही ?"

परमेश्वर की आत्मा पीलातुस के साथ संघर्ष कर रही थी। मसीह का प्रश्न उसे निकट से अपने हृदय को टटोलने के लिए प्रेरित कर रहा था। पीलातुस इस प्रश्न का अर्थ समझ गया था। उसका हृदय उसके सन्मुख अंगीकार का प्रश्न प्रस्तुत कर रहा था, उसके हृदय में हलचल होने लगी थी। परन्तु उस पर गर्व प्रबल हो गया और उसने उत्तर दिया :

"क्या मैं यहूदी हूं ? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा, तू ने क्या किया है ?' यूहन्ना १८:३३,३५।

पीलातुस के हाथ से स्वर्णिम अवसर निकल गया। परन्तु यीशु ने उस पर यह प्रगट कर दिया कि वह सांसारिक राजा बन कर इस संसार में नहीं आया है, इसलिए उसने कहा :

---

'यह सुन पीलातुस ने उनसे फिर पूछा; तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसको मैं क्या करूं ? वे फिर चिल्लाये, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे।"



पीलातुस असमंजस में पड़ गया। उसने मसीह में किसी प्रकार के दोष का प्रमाण नहीं पाया और उसको दोष लगाने वालों पर विश्वास नहीं था। उसकी शान्त तथा सौजन्यता से पूर्ण प्रकृति, दोष लगाने वालों की उत्तेजना तथा आवेश के सर्वथा विपरीत थी। पीलातुस पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा, उसकी निर्दोषता उस पर स्पष्ट हो गई थी।

यीशु से सत्य ज्ञात करने के विचार से पीलातुस यीशु का हाथ पकड़ कर एक ओर ले गया और उससे पूछा :

"क्या तू यहूदियों का राजा है ?"

मसीह ने उसके इस प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दिया, बल्कि उससे प्रश्न किया :

"क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझसे कही ?"

परमेश्वर की आत्मा पीलातुस के साथ संघर्ष कर रही थी। मसीह का प्रश्न उसे निकट से अपने हृदय को टटोलने के लिए प्रेरित कर रहा था। पीलातुस उस प्रश्न का अर्थ समझ गया था। उसका हृदय उसके सन्मुख अंगीकार का प्रश्न प्रस्तुत कर रहा था, उसके हृदय में हलचल होने लगी थी। परन्तु उस पर गर्व प्रबल हो गया और उसने उत्तर दिया :

"क्या मैं यहूदी हूं ? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा, तू ने क्या किया है ?' यूहन्ना १८:३३,३५।

पीलातुस के हाथ से स्वर्णिम अवसर निकल गया। परन्तु यीशु ने उस पर यह प्रगट कर दिया कि वह सांसारिक राजा बन कर इस संसार में नहीं आया है, इसलिए उसने कहा :

---

"यह सुन पीलातुस ने उनसे फिर पूछा; तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसको मैं क्या करूं ? वे फिर चिल्लाये, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे।"



"मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ न सौंपा जाता, परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं।"

पीलातुस ने उस से पूछा, "तो क्या तू राजा है?"

"यीशु ने उत्तर दिया कि तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूं; मैंने इसलिए जन्म लिया. और इसलिए जगत में आया हूं कि सत्य की गवाही दूं। जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।"

पीलातुस के हृदय में सत्य को जानने की इच्छा थी। उसका मस्तिष्क व्याकुल हो गया था। उसने उत्सुकता से मुक्तिदाता के शब्दों को ग्रहण कर लिया और सत्य को जानने के लिए उसके हृदय मे आन्दोलन आरम्भ हो गया। सत्य क्या है और वह किस प्रकार प्राप्त हो सकता है, यह जानने की इच्छा उसमें प्रबल हो उठी। उसने यीशु से पूछा:

"सत्य क्या है?"

परन्तु उसने यीशु के उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की। न्यायालय के बाहर भीषण कोलाहल होने लगा था। महायाजक तत्काल ही दण्ड की पुष्टि की मांग कर रहे थे और पीलातुस को अवसर के अनुकूल बाहर जाना पड़ा। उसने बाहर निकल कर लोगों से कहा:

"मैं तो उसमें कुछ दोष नहीं पाता।" यूहन्ना १८ : ३६–३८।

एक मूर्तिपूजक न्यायी द्वारा इस्राएली अधिकारियों की जो यीशु पर दोष लगा रहे थे उनके अधम विश्वासघात तथा झूठ की कैसी कटु आलोचना थी।

जब महायाजकों और मन्दिर के अधिकारियों ने पीलातुस के ये शब्द सुने तो उनके क्रोध तथा निराशा की कोई सीमा न रही। उन्होंने लम्बे समय से यह षड्यंत्र रच रखा था और वे बहुत समय

से इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब उन्होंने यीशु के मुक्त कर दिए जाने की सम्भावना देखी तो वे स्वयं उसे टुकड़े टुकड़े कर देने को उद्यत हो गए।

उनका अब स्वयं पर नियंत्रण न रहा। वे खुल कर अपशब्दों का प्रयोग करने लगे। वे मनुष्य से पशु बन गए। अब वे पीलातुस की भी निन्दा करने लगे, वे उसे धमकी देने लगे कि रोमी राजा के प्रति वह निष्ठावान तथा स्वामिभक्त नहीं है। वे उस पर दोष लगाने लगे कि वह यीशु को मृत्युदण्ड देने से इनकार कर रहा है जो कि कैसर का कट्टर विरोधी है। फिर वे चिल्लाने लगे.

"यह गलील से ले कर यहां तक सारे यहूदिया में उपदेश दे दे कर लोगों को बहकाता है।" लूका २३:५।

पीलातुस का इस समय यीशु को मृत्युदण्ड देने का विचार नहीं था। उसको पूरा निश्चय था कि वह निर्दोष है। परन्तु जब उसने सुना कि मसीह गलील का निवासी है, तो उसने उसको हेरोदेस के पास भेजने का निर्णय किया, जो कि उस प्रान्त का शासक था और इस समय यरुशलेम में उपस्थित था। इस प्रकार पीलातुस ने इस मुकद्दमे का दायित्व अपने पर से हटा कर हेरोदेस पर टालने का विचार किया।

यीशु भूख से अचेत तथा दुर्बल हो चुका था, रात्रि में न सोने के कारण वह थक कर चूर हो चुका था। उसके साथ लोगों ने निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया था जिससे उसे शारीरिक पीड़ा भी अनुभव हो रही थी। परंतु पीलातुस ने फिर उसको सैनिकों के हाथ में सौंप दिया और वे उसे निर्दयी भीड़ में फिर खींच कर ले गए जो उसका अपमान करने पर प्रसन्नता अनुभव कर रही थी।



# हेरोदेस के सामने

हेरोदेस की यीशु से पहले भेंट नहीं हुई थी परन्तु वह उसे देखने का बहुत इच्छुक था और उसका कोई आश्चर्यकर्म देखना चाहता था। जैसे ही मुक्तिदाता को उसके सामने ला कर खड़ा किया गया, भीड़ उसे जुल्म करने लगी कोई कुछ चिल्ला रहा था और कोई कुछ। हेरोदेस ने उनको चुप रहने का आदेश दिया क्योंकि वह बन्दी से कुछ प्रश्न पूछना चाहता था।

उसने मसीह के पीले तथा उदास चेहरे को उत्सुकता तथा दया-भाव से देखा। उसने यीशु के मुखमण्डल पर शुद्धता तथा बुद्धिमता के चिन्ह देखे। वह भी पीलातुस के समान सन्तुष्ट हो गया और उसे ज्ञात हो गया कि ईर्ष्या तथा डाह के कारण ही यहूदी उन पर झूठ आरोप लगा रहे थे।

हेरोदेस ने उससे एक आश्चर्यकर्म दिखाने का अनुरोध किया। उसने प्रतिज्ञा की कि आश्चर्यकर्म देख लेने के पश्चात् वह उसे मुक्त कर देगा। उसके आदेश पर अनेक अपंग तथा विकृत शरीर के रोगी अन्दर लाए गए और उसने यीशु को उनको चंगा करने की आज्ञा दी। परन्तु मुक्तिदाता हेरोदेस के सन्मुख चुपचाप खड़ा रहा जैसे कि उसने न कुछ देखा हो और न ही कुछ सुना हो।

परमेश्वर के पुत्र ने मनुष्य का स्वरूप और स्वभाव धारण किया था। उसके लिए ऐसी परिस्थिति में मनुष्य के समान ही कार्य करना आवश्यक था। इसलिए उत्सुकता को शान्त करने या स्वयं को दुःख तथा अनादर से मुक्त करने के लिए वह कोई आश्चर्यकर्म नहीं कर सकता था। उसके लिए यह आवश्यक था कि वह मनुष्य के समान ऐसी परिस्थिति में समस्त दुःख और कष्ट सहन करे।

जब हेरोदेस ने उससे आश्चर्यकर्म करने का अनुरोध किया तो उसके दोष लगाने वाले भयभीत हो उठे। वे उसकी ईश्वरीय शक्ति के प्रदर्शन के भय से आतंकित हो उठे थे। ऐसा प्रदर्शन उनकी योज-नाओं के लिए भयानक आघात सिद्ध हो सकता था और सम्भवतः उनकी मृत्यु का कारण भी बन सकता था। सो उन्होंने चिल्लाना आरम्भ कर दिया कि वह शैतान के सरदार बैलजब्बूल की सहायता से आश्चर्यकर्म करता है।

अनेक वर्ष पहले हेरोदेस यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की शिक्षा सुन चुका था। इन शिक्षाओं का उस पर गहरा प्रभाव पड़ा था परन्तु उसने अपना पापपूर्ण असंयमी जीवन नहीं त्यागा था। इसलिए उसका हृदय कठोर हो गया था और नशे की अवस्था में उसने हेरोदियास को प्रसन्न करने के लिए यूहन्ना का सिर कटवा दिया था।

अब उसका हृदय पहले से भी अधिक कठोर हो गया। वह यीशु की चुप्पी को सहन नहीं कर सका। उसका चेहरा दारुण कष्ट से काला पड़ गया और उसने क्रोध से भर कर मुक्तिदाता को धमकाना आरम्भ कर दिया जो अभी भी शान्त खड़ा हुआ था।

मसीह टूटे हृदयों को चंगा करने के लिए इस संसार में आया था। वह पाप से पीड़ित हृदय को चंगा करने के लिये यदि कुछ शब्द बोल कर किसी को लाभ पहुंचा सकता तो वह कभी चुप न रहता। परन्तु उनके लिए उसके पास कोई शब्द नहीं है जो जान बूझ कर सत्य को अपने अपवित्र पैरों तले रौंद देते हैं।

मुक्तिदाता ऐसे शब्द बोल सकता था जो कि उस कठोर हृदय वाले राजा के कानों को वेध सकते थे। वह उसके जीवन के पापों को उस पर प्रगट करके उसे भयभीत कर सकता था जिससे वह कांप कर उसके चरणों में गिर सकता था। वह आने वाले विनाश से उसे परिचित करा कर उसे आतंकित कर सकता था। परन्तु मसीह की चुप्पी उसके लिए इन बातों से भी अधिक असह्य हो उठी थी।

उसके कान जो मानव कष्टों को सुनने के लिए सदा तत्पर रहते थे, उनके लिए हेरोदेस की आज्ञा का कोई महत्व न था। उसका हृदय जो अधम से अधम पापी के लिए द्रवित हो जाता था, उस कठोर हृदय वाले राजा के लिए द्रवित नहीं हुआ जिसे मुक्तिदाता की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं हो रही थी।

क्रोध में भर कर, हेरोदेस भीड़ की ओर मुड़ा और उसने यीशु की निन्दा करते हुए उसे कपटी कह कर सम्बोधित किया। परन्तु उस पर दोष लगाने वाले जानते थे कि वह कपटी नहीं था।

फिर राजा ने निर्लज्जता प्रदर्शित करते हुए परमेश्वर के पुत्र के लिए अपशब्द कह कर उसका उपहास करना आरम्भ कर दिया। "तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उसका अपमान करके ठट्ठों में उड़ाया, और भड़कीला वस्त्र पहना कर उसे पीलातुस के पास लौटा दिया।" लूका २३:११।

जब दुष्ट राजा ने देखा कि यीशु सभी निरादर शान्तिपूर्वक सहन कर रहा है तो वह भयभीत हो उठा, वह समझ गया कि उसके सम्मुख खड़ा हुआ व्यक्ति साधारण मनुष्य नहीं है। वह इस विचार से व्याकुल हो गया कि बन्दी निश्चय ही कोई स्वर्गीय व्यक्ति है जो इस पृथ्वी पर किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए आया है।

हेरोदेस को यीशु के मृत्युदण्ड की पुष्टि करने का साहस न हुआ। उसने इस भयानक दायित्व से बचने के लिए मुक्तिदाता को फिर पीलातुस के पास भेज दिया।



# पीलातुस द्वारा दण्ड दिया जाना

जब यहूदी हेरोदेस के पास से लौट कर मुक्तिदाता का साथ ले कर फिर पीलातुस के पास पहुचे तो वह बहुत अप्रसन्न हुआ और उसन उनसे पूछा कि वे यीशु से क्या करना चाहते हैं। उसने उनको स्मरण दिलाया कि वह पहले ही उससे पूछ-ताछ कर चुका और उसमें उसने कोइ दोष नही पाया। उसने उनको यह भी बताया कि उन्होंने उस पर अनेक आरोप लगाए परन्तु वे उनमें से एक भी आरोप प्रमाणित नही कर सके।

इससे भी अधिक वे उस हेरोदेस के पास ले जा चुके जो स्वय भी यहूदी था और उसने भी उसमें मृत्युदण्ड देन योग्य कोइ दोष नहीं पाया है। परतु दोष लगाने वालो को सतुष्ट करने की इच्छा से उसने कहा

इसलिए मैं उस पिटवा कर छोड देता हू। लूका २३ १६।

यहा पीलातुस न अपनी दुर्बलता प्रकट की। उसने स्वीकार कर लिया था कि यीशु पूर्णतया निर्दोष था फिर वह उसको क्या दण्ड देना चाहता था? यह अनुचित बात के साथ समझौता था। यहूदी इस तथ्य को पूरे मुकद्दमे में नही भूले। उन्होंने पीलातुस को जो

कि रोमी राज्यपाल था पहले भी धमकी दी थी अब उसी का लाभ उठाते हुए वे यीशु के मृत्युदण्ड के लिए उस पर दबाव डालने लगे।

अब भीड़ बन्दी के जीवन का अन्त कर देने के लिए अधिक जोर से चिल्लाने लगी।

जब पीलातुस इसी असमंजस में पड़ा हुआ था कि उसे क्या करना चाहिए, उसकी पत्नी का एक पत्र उसके सन्मुख प्रस्तुत किया गया जिसमें लिखा था : "तू उस धर्मी के मामले में हाथ मत डालना; क्योंकि मैंने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुःख उठाया है।" मत्ती २७ : १९।

इस सन्देश को पढ़ते ही पीलातुस के चेहरे का रंग उड़ गया; परन्तु उसकी दुविधा को देख कर भीड़ और अधिक जोर से चिल्लाने लगी।

पीलातुस ने देख लिया कि कुछ न कुछ उसे करना ही पड़ेगा। फसह के पर्व पर एक बन्दी को मुक्त कर देने की प्रथा प्रचलित थी और यह लोगों की इच्छा पर निर्भर था, वे जिसे मुक्त कराने की मांग करते थे, उसे छोड़ दिया जाता था। रोमी सैनिकों ने अभी कुछ दिन पहले बरअब्बा नाम के एक कुख्यात डाकू को गिरफ्तार किया था। वह डाकू, लुटेरा तथा हत्यारा था। सो पीलातुस ने अब भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा :

"तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूं? बरअब्बा को या यीशु को जो मसीह कहलाता है"? मत्ती २७ : १७।

उन्होंने उत्तर दिया, "बरअब्बा को।" लूका २३:१८।

पीलातुस स्तब्ध रह गया, उसे बहुत आश्चर्य हुआ और वह निराश हो गया। अपने ही निर्णय को अस्वीकार करके और लोगों के चिल्लाने से प्रभावित हो कर उसने भीड़ पर अपना नियंत्रण तथा प्रतिष्ठा खो दी थी। अब वह भीड़ के हाथ का खिलौना बन चुका

था। वे उमसे अपनी इच्छा पूरी करवा सकते थे। फिर उसने पूछा ' याशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करू ? "

उन्होंने एक स्वर में चिल्ला कर कहा, " वह क्रूस पर चढाया जाए

" राज्यपाल ने कहा, क्यों उसने क्या बुराई की है ? "

' परन्तु वे और भी चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे, वह क्रूस प चढाया जाए। " मत्ती २७ -२, २३।

पीलातुस का चेहरा पीला पड गया जब उसने सुना, " वह क्रू पर चढाया जाय। " उसे यह विचार तक नही आया था कि नौब यहा तक पहुच जाएगी। उसने बार बार यीशु का निर्दोष घोषि किया था परन्तु फिर भी भीड यह माग कर रही थी कि उ भयानक यातना या मृत्यु दण्ड दिया जाए। उसने फिर प्रश्न किय

' क्या उसने क्या बुराई की है ? "

फिर वही ध्वनि गूज उठी, " उसे क्रूस पर चढा। क्रूस पर चढा

पीलातुस ने उनकी सहानुभूति अर्जित करने का अन्तिम प्रय किया। वह चकित, दुर्बल, घावो से पूर्ण यीशु को उनके सम्म बाहर ले आया।

' और सिपाहियो ने काटो का मुकुट गूथ कर उसके सिर पर र और उसे बैजनी वस्त्र पहनाया। और उसके पास आ आकर कह लगे, हे यहूदियो के राजा प्रणाम। और उसे थप्पड भी मारे। यूहन्ना १९ २,३।

उन्होंने उसके मुह पर थूका, किसी ने उसके हाथ से वह सरक छीन लिया जो उसके हाथ में पहले पकडा दिया गया था और उ या उसके सिर पर मारने लगे। इससे काटे उसके सिर में अधि गहरे घुस गए और सिर से रक्त की धाराए बह निकली जिस सारा शरीर लहूलुहान हो गया।

शैतान ने सैनिकों का नेतृत्व किया और उन्होंने मुक्तिदाता को अपशब्द कह कर उसका अपमान किया। शैतान चाहता था कि इससे वह उत्तेजित हो कर अपने को मुक्त करने के लिए कोई आश्चर्य कर्म करे और समस्त मुक्ति की योजना इस प्रकार विफल हो जाए।

इस भयानक परीक्षा मे उसके मानवीय स्वभाव की एक असफलता परमेश्वर के पुत्र को अपूर्ण बलिदान सिद्ध कर सकती थी और इस प्रकार मनुष्य का उद्धार असम्भव बना सकती थी।

परन्तु वह जो स्वर्गीय सेना को आदेश दे सकता था और एक पल में पवित्र स्वर्गदूत की सेना को अपनी सहायता के लिए प्रस्तुत कर सकता था, उनमें से केवल एक स्वर्गदूत समस्त उत्तेजित भीड़ पर प्रबल हो सकता था – वह जो स्वयं अपनी अलौकिक महिमा द्वारा स्वयं को यातनाओं से एक क्षण में मुक्त कर सकता था—क्रुद्ध भीड़ की यातनाओं को आदरयुक्त धैर्य तथा साहस के साथ नम्रता-पूर्वक सहन कर रहा था।

जब कि अपनी निर्मम यातनाओं के कार्य द्वारा वे मनुष्य से साक्षात् शैतान बन गए थे, उसकी नम्रता तथा धैर्य उसे मानवता से ऊपर उठा कर उसका ईश्वरीय स्वभाव प्रगट करते हुए उसका परमेश्वर के साथ सीधा सम्बन्ध प्रमाणित कर रहे थे।

पीलातुस पर मुक्तिदाता के असीम धैर्य का गहरा प्रभाव पड़ा। उसने बरअब्बा को न्यायालय में उपस्थित करने की आज्ञा दी। फिर उसने दोनों बन्दियों को भीड़ के सन्मुख प्रस्तुत किया। फिर उसने मुक्तिदाता की ओर संकेत करते हुए कहा, "देखो यह पुरुष, ..क्योंकि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता!" यूहन्ना १९ : ५, ६।

यहां परमेश्वर का पुत्र कांटों का मुकुट पहने और भड़कीला उपहासपूर्ण वस्त्र पहने खड़ा था। वह कमर तक नंगा था। उसकी पीठ में कोड़ों की मार से रक्त की धाराएं बह रही थी। उसका

चहरा रक्त रंजित था और उस पर थकावट तथा पीडा के चिन्ह विद्यमान थे परन्तु फिर भी वह ऐसा सुन्दर दिखाई दे रहा था जैसा कि पहले कभी नही दिखाई दिया था। उसके मुख पर सौजन्यता और अपने क्रूर शत्रुओ के प्रति सद्भाव दृष्टिगोचर हो रहा था।

उसके ठीक विपरीत दूसरा बन्दी खड़ा हुआ था, उसके मुख पर दृष्टि डालने से ही स्पष्ट हो रहा था कि वह क्रूर हत्यारा है।

देखनेवालो में कुछ ऐसे व्यक्ति थे जिनकी यीशु के प्रति सहानुभूति थी। यहा तक कि महायाजक तथा अधिकारी भी यह स्वीकार कर लेने पर विवश हो गए थे कि यह जैसे अपने विषय में घोषणा करता था वैसा ही है। परतु वे समर्पण के लिए तैयार नही थे। उन्होने ही भीड में उत्तेजना और आवेश उत्पन्न किया था इसलिए महायाजक, मन्दिर के अधिकारी तथा भीड फिर चिल्लाने लगी—

" उसे क्रूस पर चढा ! क्रूस पर चढा !

अन्त में पीलातुस का धैर्य समाप्त हो गया, उसने उनसे कहा

" तुम ही उसे ले कर क्रूस पर चढाओ, क्योंकि मैं उसमें कोई दोष नही पाता।" यूहन्ना १९ ५, ६।

पीलातुस ने मुक्तिदाता को मुक्त करने का बहुत प्रयास किया, परतु यहूदी फिर चिल्ला उठे

' यदि तू इसको छोड देगा तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नही।" यूहन्ना १९ १२।

यह पीलातुस के मर्मस्थल पर आघात था, उसको पहले ही रोमी शासक सन्देह की दृष्टि से देखते थे और वह जानता था कि इस प्रकार की उसके विरोध में एक ही शिकायत उसका विनाश कर देगी।

" जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु इसके विपरीत हुल्लड़ होता जाता है, तो उसने पानी लेकर भीड़ के सामने अपने हाथ धोए, और कहा; मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं, तुम ही जानो। " मत्ती २७ : २४।

पीलातुस ने व्यर्थ ही मसीह के मृत्यु दण्ड से स्वयं को मुक्त करने का प्रयास किया। यदि उसने आरम्भ में ही तात्कालिक दृढ़ता का परिचय दिया होता और अपनी धारणा तथा इच्छा को समुचित रूप में क्रियान्वित किया होता तो भीड़ उस पर प्रबल न हो पाती, वे उस पर अपना नियंत्रण कभी न स्थापित कर पाते। अपनी अनिश्चितता के कारण ही उसका विनाश हुआ।

जब उसने देख लिया कि वह यीशु को मुक्त करने में असमर्थ है तो उसने अपना सामाजिक मान और पद बनाए रखना उचित समझा। अपनी सांसारिक शक्ति को खो देने की अपेक्षा उसने एक निर्दोष व्यक्ति के बलिदान को अधिक महत्व दिया। भीड़ की मांग के आगे झुकते हुए उसने यीशु को कोड़े लगवाए और उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए उनके हाथ में सौंप दिया। परन्तु अपना बचाव करने का प्रयत्न करने के पश्चात् भी जिस बात का उसे भय था, वह उस पर आ पड़ी। उसका सम्मान उससे छीन लिया गया और उसे ऊंचे पद से हटा दिया गया। उसका गर्व टूट गया और मसीह के सलीब पर चढ़ाए जाने के कुछ ही समय के बाद उसने आत्महत्या कर ली। सो जो लोग इस प्रकार पाप से समझौता कर लेते हैं, अपने ऊपर शोक तथा विनाश लाते है। " ऐसा मार्ग है, "जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है। " नीतिवचन १४ : १२।

जब पीलातुस ने मसीह के लोहू से स्वयं को निर्दोष घोषित किया, तो कैफा ने यीशु की निन्दा करते हुए उत्तर दिया, " इस का लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो। " मत्ती २७ : २५।

और यही भयानक शब्द बार बार महायाजको और लोगो ने दोहराए।

इस प्रकार उन्होंने अपने ऊपर भयानक दण्ड की आज्ञा दी, उन्होंने अपनी सन्तान को यह दण्ड उत्तराधिकार के रूप में दे दिया।

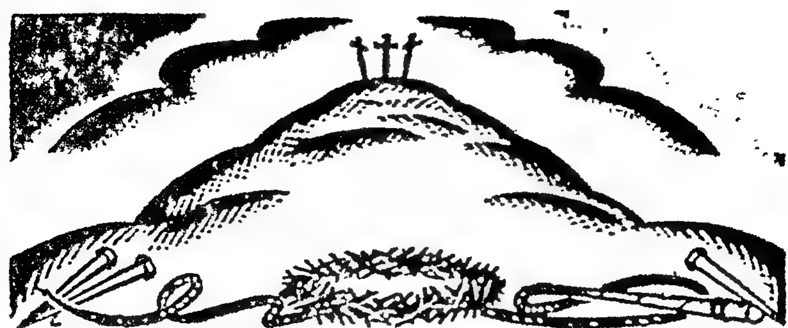
लगभग चालीस वर्षों के पश्चात यह दण्ड अक्षरश यरुशलेम के विनाश के रूप उनके सम्मुख आया।

यह दण्ड अक्षरश उन पर घटा जब कि वे निन्दित अवस्था में समस्त ससार में तितर बितर हो गए आज भी उनके वशज पृथ्वी पर इधर उधर भटक रहे है।

अन्तिम समय में यह दो गुणा उन पर घटेगा तब दृश्य पूर्णतया बदल जाएगा और 'वही यीशु' आएगा, "और जो परमेश्वर को नही पहचानते और हमारे प्रभु यीशु को नही मानते उनसे पलटा लेगा।" २ थिस्सलुनीकियो १ ८।

तब वे पहाडो और चट्टानो से कहेंगे

"कि हम पर गिर पडो और हमें उसके मुह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो क्योकि उसके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुचा है अब कौन ठहर सकता है?" प्रकाशित वाक्य ६ : १६, १७।



# कल्वरी

भीड़ चिल्लाती हुई यीशु को साथ ले कर कल्वरी की ओर चल पड़ी। जब यीशु पीलातुस के न्यायालय के फाटक से बाहर निकला तो वह भारी क्रूस जो बरअब्बा के लिये तैयार किया गया था, उसके घायल कन्धों पर रख दिया गया। दो डाकुओं पर भी क्रूस लाद दिए गए जो कि यीशु के साथ ही क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले थे।

थकित और पीड़ित मुक्तिदाता उस भारी क्रूस को उठाकर न ले जा सका, कुछ ही कदम चलने के बाद वह अचेत होकर उस भारी क्रूस के नीचे गिर पड़ा।

जब उसे होश आया तो फिर क्रूस उस पर रख दिया गया। वह लड़खड़ाता हुआ कुछ गज तक गया और फिर मृतक के समान भूमि पर गिर पड़ा। उसको उत्पीड़ित करने वालों पर स्पष्ट हो गया कि इस भारी क्रूस को ले जाना उसके लिए सम्भव नहीं है। अब वे व्याकुल हो गए और किसी ऐसे व्यक्ति को खोजने लगे जो उसका क्रूस उठाकर ले चले।

---

जब वे उस जगह जिसे कल्वरी कहते हैं पहुँचे, तो उन्होंने वहां उसे क्रूस पर चढ़ाया।



उसी समय उनको शमौन कुरेनी दिखाई दिया जो कि विपरीत दिशा से अपने मार्ग पर चला आ रहा था। उन्होंने उसको पकड़ लिया और कलवरी तक क्रूस उठा कर ले जाने पर बाध्य कर दिया।

शमौन का पुत्र मसीह का शिष्य था, परन्तु स्वयं उसने मुक्तिदाता को स्वीकार नहीं किया था। मुक्तिदाता के लिए क्रूस उठा कर चलने के कारण शमौन ने कुछ समय के पश्चात् उसको अपना मुक्तिदाता स्वीकार कर लिया। वह जीवन पर्यंत इस कार्य के लिए परमेश्वर के प्रति आभार प्रकट करता रहा। कलवरी पर घटनेवाली घटनाएं देख कर और यीशु द्वारा कहे गए शब्द सुनकर शमौन ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र तथा अपना मुक्तिदाता स्वीकार किया।

क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान पर पहुंच कर दण्डित व्यक्तियों को यातना के क्रूसों पर बांध दिया गया। दोनों डाकुओं ने बांधने वालों से संघर्ष करके स्वयं को मुक्त करने का प्रयास किया परन्तु मुक्तिदाता ने उनका कोई विरोध नहीं किया।

यीशु की माता भी इस भयानक यात्रा में यीशु के साथ कलवरी तक आई थी। जब वह भार के नीचे गिर कर दब गया था तो वह उसकी सेवा करने के लिए आगे बढ़ी थी, परन्तु उसको यीशु तक नहीं पहुंचने दिया गया था।

प्रत्येक पग पर वह उसे देख कर आशा कर रही थी कि वह स्वयं को उन भयानक शत्रुओं से मुक्त करने के लिए अपनी परमेश्वर-प्रदत्त शक्ति का प्रदर्शन करेगा। अब वह यात्रा के अन्त तक पहुंच चुकी थी, उसने डाकुओं को क्रूस पर बांधे जाते देखा, उसने असमंजस की व्यथा सहन की!

क्या वह जिसने मृतकों को जीवित कर दिया था, स्वयं को क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति देगा? क्या परमेश्वर का पुत्र इस प्रकार निर्दयतापूर्वक मार डाला जाएगा? क्या उसके मसीहा होने पर उसका जो विश्वास था वह उचित था!

उसने क्रूस पर उसके हाथों को खींचे जाते देखा—वे हाथ जो सदा ही दुखियों को आशीष देने के लिए आगे बढते थे। हथौड़ा और कीलें ले आई गईं और उसके नर्म मांस में ये कीलें ठोक दी गईं। इस हृदय विदारक दृश्य से शोकित शिष्य यीशु की माता को जो अचेत हो गई थी, उठा कर दूर ले गए।

यीशु ने किसी प्रकार की शिकायत नहीं की। उसका चेहरा शान्त बना रहा और उसके माथे पर पसीने की बड़ी बड़ी बूंदें उभर आयीं। वह अकेला ही हौद में दाखें रौंद रहा था और देश के किसी व्यक्ति ने उसका साथ नहीं दिया। यशायाह ६३ ३।

जब सैनिक अपना कार्य कर रहे थे तो यीशु का दिमाग अपनी पीड़ा से हट कर अपने उत्पीड़ित करने वालों के भयानक प्रतिकार पर केंद्रित हो गया जिसका उनको एक दिन अवश्य सामना करना पड़ेगा। उसे उनकी अज्ञानता पर दया आने लगी और उसने उनके लिए प्रार्थना की।

' हे पिता, इनको क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।" लूका २३ ३४।

मसीह अपने पिता की उपस्थिति में मनुष्यों का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार अर्जित कर रहा था। उसकी इस प्रार्थना का समस्त संसार ने उत्साह के साथ स्वीकार किया है। उसने इसमें प्रत्येक पापी को सम्मिलित किया है जो भूत, वर्तमान तथा भविष्य में इस संसार में रहेगा।

जब भी हम पाप करते हैं मसीह को घायल करते हैं। वह हमारे लिए अपने छिपे हुए हाथों को परमेश्वर के सिंहासन के ऊपर उठा कर कहता है, "उनको क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।"

जैसे ही यीशु को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया, क्रूस को बलवान मनुष्यों ने झटके से उस गढ्हे में खड़ा कर दिया जिसे क्रूस को गाड़ने के लिए पहले से तैयार कर लिया गया था। इससे परमेश्वर के पुत्र की पीड़ा चरम सीमा पर पहुंच गई।

पीलातुस ने फिर एक तख्ती पर लातीनी, यूनानी तथा इब्री भाषा में लिखवा कर क्रूस के ऊपर टंगवा दिया जिसे सभी व्यक्ति देख सकें। उस तख्ती पर लिखा था :

"यीशु नासरी, यहूदियों का राजा।"

यहूदियों ने यह वाक्य परिवर्तित करने का उससे अनुरोध किया। महायाजक ने उससे कहा 'यहूदियों का राजा मत लिख, वरन यह लिख कि उसने कहा कि मैं यहूदियों का राजा हूं।"

परन्तु अपनी दुर्बलता के कारण पीलातुस अपने पर बहुत क्रोधित था, उसने मन्दिर के अधिकारियों और महायाजकों की पूर्णतया उपेक्षा करते हुए कहा :

"मैंने जो लिख दिया सो लिख दिया।" यूहन्ना १९:१९,२१,२२।

जैसे ही यीशु के क्रूस को सीधा खड़ा किया गया, एक भयानक दृश्य दिखाई देने लगा। महायाजक, मन्दिर के अधिकारी तथा शास्त्री एक साथ मिल कर भीड़ के साथ मरते हुए परमेश्वर के पुत्र का उपहास करने लगे :

"यदि तू यहूदियों का राजा है तो अपने आप को बचा।" लूका २३:३७।

"इस ने औरों को बचाया और अपने को नहीं बचा सकता। यह तो इस्राएल का राजा है। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें। उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, यदि वह इसको चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले क्योंकि इसने कहा था कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।" मत्ती २७:४२,४३।

"और मार्ग में जाने वाले सिर हिला हिला कर और यह कह कर उसकी निन्दा करते थे कि वाह! मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले! क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा ले।" मरकुस १५ २९,३०।

मसीह क्रूस से उतर सकता था। परन्तु यदि वह ऐसा कर देता तो हम कभी उद्धार न पा सकते। वह हमारे ही लिए मरने के लिये तैयार हुआ था।

"वह हमारे ही अपराधों के लिए घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताडना पडी, कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जायें।" यशायाह ५३ ५।

रात्रि के समान गहन अन्धकार छा गया था। यह अलौकिक अन्धकार पूरे तीन घन्टे छाया रहा।

भीड पर एक अज्ञात भय छा गया था। उसका उपहास और निन्दा अब बन्द हो चुकी थी। स्त्री-पुरुष और बच्चे भयभीत हो कर भूमि पर पड़े हुए थे।

कभी कभी बादलो में बिजली की चमक दिखाई दे जाती थी जिसके प्रकाश में मुक्तिदाता का क्रूस दिखाई पडने लगता था। सभी का विचार था कि उनसे प्रतिकार लेने का अवसर आ गया था।

नवे घन्टे में लोगो के ऊपर से अन्धकार हट गया, परन्तु मुक्तिदाता पर अन्धकार छाया रहा। जब वह क्रूस पर टगा हुआ था तो उस पर बिजलियाँ गिरती प्रतीत हो रही थीं। उसी समय उसने निराशा व्यक्त करते हुए चिल्ला कर कहा.

"हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तू ने मुझे क्यो छोड़ दिया?" मरकुस १५ ३४।

इसी बीच यरूशलेम और यहूदिया में अन्धकार छा गया था और सभी लोगो की दृष्टि यरूशलेम नगर की दिशा में लगी हुई थी। उन्होने देखा कि नगर के ऊपर भयानक रूप से बिजलिया चमक रही थी।

अकस्मात् ही क्रूस पर से अन्धकार उठ गया और स्पष्ट विजयी स्वर में समस्त पृथ्वी पर यह ध्वनि गूजती सुनाई दी 'पूरा हुआ।' यूहन्ना १९ ३०। "पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथ सौंपता हूँ।" लूका २३ ४६।

क्रूस के चारो ओर प्रकाश फैल गया और मुक्तिदाता का चेहरा महिमा से पूर्ण हो कर सूर्य के समान चमका। फिर उसने अपना सिर झुकाया और प्राण त्याग दिए।

क्रूस के आसपास खड़ी भीड़ पत्थर के समान स्थिर हो कर अपनी सांस रोक मुक्तिदाता की ओर देखने लगी। पृथ्वी पर फिर अन्धकार छा गया और बादलों की भीषण गर्जना के समान शब्द सुनाई दिया और साथ ही पृथ्वी भूकम्प के कारण डोलने लगी।

भूकम्प के कारण लोग एक दूसरे के ऊपर भूमि पर गिर पड़े। उनमें भयानक भगदड़ मच गई। आसपास के पहाड़ों की चट्टानें तड़क गयीं और उन पर से लुढ़क कर मैदानों में आ गिरीं। कब्रें खुल गईं और अनेक मृतक कब्रों में से जीवित हो कर निकल आए।

समस्त सृष्टि छोटे छोटे कणों में विभक्त होती प्रतीत होने लगी। महायाजक, अधिकारी, सैनिक तथा अन्य लोग भयभीत हो कर औंधे मुंह भूमि पर गिर पड़े।

मसीह की मृत्यु के समय कुछ याजक यरूशलेम के मन्दिर में सेवा कार्य कर रहे थे। उन्होंने भी भूकम्प के झटके अनुभव किए और उसी समय मन्दिर का पर्दा जो पवित्र स्थान से परम पवित्र स्थान को पृथक करता था, ऊपर से नीचे फट कर दो टुकड़े हो गया। यह पर्दा उसी अदृश्य हाथ ने फाड़ा था जिसने बेलशस्सर राजा के महल की दीवार पर लिखा था।

अब पृथ्वी पर परम पवित्र स्थान की कोई आवश्यकता नहीं रही। अब उसकी पवित्रता समाप्त हो गई थी। अब परमेश्वर की उपस्थिति उस परम पवित्र स्थान पर कभी अनुभव नहीं की जाएगी। परमेश्वर की स्वीकृति या अस्वीकृति अब महायाजक के पटके पर लटके बहुमूल्य पत्थरों पर कभी नहीं चमकेगी, या उस पत्थर पर छाया कभी नहीं पड़ेगी।

अब मन्दिर में पशुओं का बलिदान महत्वहीन हो गया था। परमेश्वर के मेम्ने ने अपना बलिदान दे कर संसार के पापों की बलि दे दी थी।

## क्रूस

प्रकाश ने क्रूस को घेर लिया और मुक्तिदाता का चेहरा महिमा से सूरज की नाईं चमका। "परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जायें" (यशायाह ५३:५)।

जब गलवरी के क्रूस पर मसीह की मृत्यु हुई, तो यहूदी तथा अन्यजाति के लिए समान रूप में नया मार्ग प्रशस्त हो गया।

जब मुक्तिदाता ने चिल्ला कर कहा, 'पूरा हुआ!' तो स्वर्गदूत जयजयकार करने लगे। मुक्ति की महान योजना पूरी हो चुकी थी। आज्ञाकारिता का जीवन व्यतीत करके आदम की सन्तान परमेश्वर के सम्मुख अब उपस्थित हो सकती थी।

शैतान पराजित हो गया, उसका साम्राज्य छीन लिया गया।



# यूसुफ की कब्र में

रोमी साम्राज्य के विरुद्ध राजद्रोह करने के अपराध में मुक्ति-दाता को मृत्युदण्ड दिया गया था। ऐसे कारणों से मारे जाने वाले लोगों को गाड़ने के लिए एक पृथक स्थान होता था।

यीशु का प्रिय शिष्य यूहन्ना इस विचार मात्र से कांप उठा था कि उसका स्वामी क्रूर सैनिकों द्वारा असम्मानित रूप में गाड़ा जाएगा परन्तु इसको रोकने के लिए कोई उपाय नहीं सूझ रहा था क्योंकि पीलातुस तक उसकी पहुंच न थी।

ऐसे दुखद समय में निकुदेमुस तथा अरमतिया का यूसुफ उन शिष्य की सहायता के लिए आ पहुंचे। ये दोनों ही व्यक्ति सैनहेड्रीन सभा के सदस्य थे और पीलातुस से उनका परिचय था। दोनों ही व्यक्ति धनवान तथा प्रभावशाली थे। उन्होंने संकल्प कर लिया कि मुक्तिदाता को सम्मानपूर्वक दफनाना उचित है।

यूसुफ साहसपूर्वक पीलातुस के पास पहुंचा, और उसने उ यीशु का शव मांगा। यह जान लेने के पश्चात् कि वास्तव में की मृत्यु हो चुकी है उसने यूसुफ की विनती स्वीकार कर ली।

जब यूसुफ यीशु का शव मांगने पीलातुस के पास चला गया निकुदेमुस ने उसके शरीर के गाड़े जाने से सम्बन्धित आ

तैयारियाँ कर ली। उस युग में यह प्रथा थी कि मृतक के शव को बारीक मूती चादर में सुगन्धित ममाले और इत्र डाल कर लपेटा जाता था। यह आवश्यक औषधियों की सहायता से शव को सड़ने से बचाने का एक उपाय था। सो निकुदेमुस लगभग सौ पौंड गन्धरस तथा लोहबान की अमूल्य भेंट ले आया।

यरूशलेम में उच्च से उच्च सम्भावित व्यक्ति का भी ऐसा सम्मान प्राप्त नहीं हो सकता था। यीशु के दीन शिष्य धनवान अधिकारियों द्वारा अपने स्वामी का ऐसा सम्मान देख कर आश्चर्यचकित हो गये थे।

शिष्य मसीह की मृत्यु के कारण अत्यन्त निराश तथा शोकित थे, वे यह तथ्य भूल गए थे कि उसने उनको बता दिया था कि उसके साथ ऐसा होना अनिवार्य है। उनको कोई आशा नहीं थी।

मुक्तिदाता की जीवित अवस्था में यूसुफ तथा निकुदेमुस दोनों में से किसी ने भी खुले रूप से उसे अपना मुक्तिदाता स्वीकार नहीं किया था। परन्तु उन्होंने उसकी शिक्षाएं सुनी थी और उसकी सेवाओं को निकट से ध्यानपूर्वक देखा था। यद्यपि शिष्य उसकी अपने विषय में कही हुई उन बातों को भूल गए थे जो उसने अपनी मृत्यु के विषय में उनको पहले ही बता दी थी परन्तु यूसुफ तथा निकुदेमुस को वे बातें स्मरण थी। यीशु की मृत्यु से सम्बन्धित भेदी दृश्य जिनके कारण शिष्य निराश हो गए थे और उनका विश्वास डगमगा चुका था, इन अधिकारियों के लिए प्रमाण बन गए थे कि वही सच्चा मसीहा था और अब वे दृढ़ता से विश्वासियों की पंक्ति में आ खड़े हुए थे।

ऐसे अवसर पर इन धनवान तथा सम्मानित व्यक्तियों की सहायता की शिष्यों को बहुत आवश्यकता थी। अब वे अपने मृत

के लिए कुछ कर सकते थे जो पहले इन निर्धन शिष्यों के लिए करना असम्भव था।

सावधानी से सम्मानपूर्वक उन्होंने यीशु के शव को क्रूस से नीचे उतारा। उनकी आंखों से सहानुभूति के आंसू बह निकले जब उन्होंने उसकी घायल तथा रक्तरंजित आकृति देखी।

यूसुफ ने अपने लिए एक चट्टान में नई कब्र खुदवा रखी थी। यह उसने अपने प्रयोग के लिए बनवाई थी परन्तु अब उसने यीशु के लिए इसको सुधार कर तैयार कर दिया। उसके शव को महीन सूती चादर में मसालों और सुगन्धित गन्धरस के साथ लपेटा गया जो कि निकुदेमुस ले कर आया था और फिर उद्धारकर्ता को कब्र के अन्दर रख दिया गया।

यद्यपि यहूदी अधिकारी मसीह को मार डालने में सफल हो गए थे परन्तु अभी भी उनको चैन न था। वे उसकी महान शक्ति से परिचित थे।

उनमें से कुछ लाजर की कब्र के सामने खड़े हुए थे और उन्होंने लाजर को कब्र में से जीवित अवस्था में बाहर निकलते देखा था, अब वे कांप रहे थे। उनको भय था कि मसीह स्वयं जीवित हो कर उनके सन्मुख फिर खड़ा हो सकता है।

उन्होंने उसको लोगों की भीड़ के सामने यह कहते सुना था कि उसे अपना प्राण देने का भी अधिकार है और उसे वापिस लेने का भी अधिकार है।

उनको उसके शब्द याद आए जब कि उसने कहा था, "इस मन्दिर को ढा दो, और, मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।" यूहन्ना २:१९। और वे जानते थे कि उसने अपने शरीर के विषय में यह कहा है।

यहूदा ने उनको वह सब बता दिया था जो मसीह ने यरूशलेम की यात्रा करने से पहले अपने शिष्यों को बताया था :

" देखो हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसे घात के योग्य ठहराएंगे। और उसको अन्य जातियों के हाथ सौपेंगे, कि वे उस ठट्ठों में उड़ाएं, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।" मत्ती २० १८, १९।

उनको अब अनेक बातें याद आईं जो उसने अपने पुनर्जीवित हो उठने के विषय में कही थीं। वे उन बातों को न भूल सके। अपने पिता शैतान के ही समान वे विश्वास करते और कांपते रहे।

उन पर सभी प्रकार से स्पष्ट कर दिया गया था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था। अब वे रात्रि में सो भी नहीं सके, उसके जीवित रहने की अपेक्षा उसकी मृत्यु उनको अधिक व्याकुल कर रही थी।

उस को कब्र में ही रखने का सवन्ध करके उन्होंने पीलातुस से कब्र पर मुहर लगाने और उसकी रखवाली किए जाने का निवेदन किया। पीलातुस ने महायाजकों के कहने पर सैनिकों का पहरा नियुक्त करते हुए कहा :

"तुम्हारे पास पहरुए तो हैं, जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। सो वे पहरुओं को साथ ले कर गए, और पत्थर पर मुहर लगा कर कब्र की रखवाली की।" मत्ती २७ ६५, ६६।



# वह जीवित हो उठा है

मुक्तिदाता की कब्र की अत्यधिक सावधानी से चौकसी करने
का प्रबन्ध किया गया था, और प्रवेश द्वार पर एक विशाल पत्थर
लगा दिया गया था। उस पत्थर पर रोमी मुहर इस प्रकार लगा दी गई
थी जिससे मुहर टूटे बिना पत्थर को नहीं हटाया जा सकता था।

कब्र के चारों ओर रोमी सैनिकों का पहरा था। उनको आदेश
दिया गया था कि अत्यधिक सावधानी से यीशु के शव की चौकसी
करें। उनमें से कुछ निरन्तर कब्र के चारों ओर घूमते रहते थे और
कुछ कब्र के द्वार पर बैठे विश्राम करते थे।

परन्तु कब्र पर अन्य शक्तिशाली पहरेदार भी उपस्थित थे।
शक्तिशाली स्वर्गदूत भी वहां उपस्थित थे। उनमें से एक स्वर्गदूत
...ी अपनी शक्ति का प्रयोग करके समस्त रोमी सेना का संहार कर
...ता था।

सप्ताह के प्रथम दिन की रात्रि धीरे धीरे व्यतीत होती रही और
...ाल से पहले घनघोर अन्धकार की घड़ी आ पहुंची।

...क अत्यधिक शक्तिशाली स्वर्गदूत स्वर्ग से नीचे भेजा गया।
...का चेहरा बिजली के समान चमक रहा था और उसके वस्त्र हिम

के समान उज्ज्वल थे। उसने अपने मार्ग से अन्धकार को हटा दिया और उसकी महिमा से आकाश प्रकाशित हो गया।

सोते हुए रोमी सैनिक जाग उठे और उठ कर खड़े हो गए। उन्होंने आदरयुक्त भय के साथ आश्चर्यचकित हो कर स्वर्ग की ओर देखा और उस प्रकाश की ओर देखा जो उनके निकट आता जा रहा था।

इस शक्तिशाली स्वर्गदूत के आने पर पृथ्वी काप उठी। वह मंगलमय सन्देश ले कर आया था और उसके आने की गति तथा शक्ति ने पृथ्वी को शक्तिशाली भूकम्प के समान हिला दिया। सैनिक, अधिकारी तथा पहरेदार मृतक के समान भूमि पर गिर पड़े।

इनके अतिरिक्त कब्र पर कुछ अन्य पहरेदार भी उपस्थित थ। दुष्ट दूत भी वहा हाजिर थे। क्योंकि परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु हो चुकी थी, उसके शव को वे अपने अधिकार में ले लेना चाहते थे और उसको सौंप देना चाहते थे जिसका मृत्यु पर अधिकार है—अर्थात शैतान को।

शैतान के दूत वहां इसलिए उपस्थित थे कि यीशु के शव को उनके हाथ से कोई शक्ति न छीन सके। परन्तु परमेश्वर के सिंहासन के निकट रहने वाला दूत जैसे ही कब्र पर पहुचा वे भयभीत हो कर वहा से भाग गए।

स्वर्गदूत ने कब्र के द्वार पर लगे विशाल पत्थर को एक छोटे कंकड़ के समान उठा कर लुढ़का दिया फिर अपनी वाणी से जिसके द्वारा पृथ्वी काप गयी उसने कहा

"यीशु, परमेश्वर के पुत्र, बाहर निकल आ। तेरा पिता तुझे बुलाता है।"

फिर वह जिसका मृत्यु तथा कब्र पर अधिकार था कब्र से बाहर निकल आया। उसने कब्र से बाहर निकल कर घोषणा

की, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं।" और स्वर्गीय सेना ने झुक कर उसे दण्डवत किया और स्तुति के गीत गा कर उसका अभिवादन किया।

यीशु मृत्यु पर विजयी हो कर बाहर निकल आया। उसकी उपस्थिति से पृथ्वी कांप गयी, बिजलियां चमक गयीं और बादल के गरजन हुए।

जब यीशु ने अपने प्राण दिए थे तो उस समय भी भूकम्प आया था और जब वह मृत्यु पर विजयी हुआ तो उस समय भी पृथ्वी भूकम्प से कांपने लगी थी।

स्वर्गदूत के आगमन पर उसके दूत भाग निकले थे इससे शैतान उन पर बहुत क्रोधित हुआ। उसे आशा थी कि यीशु पुनर्जीवित नहीं होगा और मुक्ति की योजना असफल हो जाएगी। परन्तु जब उसने यीशु को मृत्यु पर विजयी होते देखा तो उसकी आशा में पानी फिर गया। शैतान को अब ज्ञात हो गया कि उसके साम्राज्य का अन्त आ गया है और उसका विनाश भी निकट आ गया है।



भूमि कांपती प्रतीत हुई। वे भागती हुई कब्र पर पहुंची और उनका आश्चर्य अधिक बढ गया जब कि उन्होंने कब्र पर लगा पत्थर लुढका हुआ देखा। उस समय वहां कोई रोमी सैनिक भी नही दिखाई दे रहा था।

कब्र पर सबसे पहले पहुचने वाली स्त्री मरियम मगदलीनी थी। उसने जब कब्र पर से पत्थर हटा हुआ देखा तो दौड़ती हुई शिष्यों को सूचित करने के लिए वह उनके पास पहुच गई।

जब अन्य स्त्रियां वहां पहुची तो उन्होंने कब्र के ऊपर एक ज्योति चमकती देखी और जब उन्होंने अन्दर देखा तो कब्र को खाली पाया।

जब वे आश्चर्यचकित हो कर इधर-उधर टहल रही थी तो उन्होंने एक युवक को चमकीले वस्त्र पहने कब्र के निकट बैठे देखा। यह वही *स्वर्गदूत था जिसने कब्र पर से पत्थर को लुढकाया था।* वे भयभीत हो कर भागने के लिए पीछे मुड़ी परन्तु स्वर्गदूत ने उनसे कहा

"तुम मत डरो. मैं जानता हू कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढाया गया था, ढूढती हो। वह यहां नही है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है, आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था।"

'और शीघ्र जा कर उसके चेलो से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है, और देखो, वह तुमसे पहले गलील को जाता है वहां उसका दर्शन पाओगे।' मत्ती २८ ५-७।

जैसे ही स्त्रियों ने फिर कब्र के अन्दर झांक कर देखा, उन्होंने एक दूसरे स्वर्गदूत को देखा, जिसने स्त्रियों से पूछा

'तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूढती हो? वह यहां नही, परतु जी उठा है, स्मरण करो, कि उसने गलील में रहते हुए तुमसे

---

"सप्ताह के पहिले दिन भोर होते ही वह जी उठ कर पहिले पहिल मरियम मगदलिनी को .. दिखायी दिया।

कहा था कि अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में प
वाया जाए और क्रूस पर चढ़ाया जाए; और तीसरे दिन जी उ
लूका २४ : ५–७ ।

स्वर्गदूतों ने मसीह की मृत्यु तथा पुनर्जीवित होने का तथ्य उन स्पष्ट किया। उन्होंने स्त्रियों को यीशु के वे वचन स्मरण कराए जो उ अपने विषय में कहे थे और अपनी मृत्यु तथा पुनर्जीवित हो उठने विषय में उनको पहले ही बता दिया था। अब वे यीशु के शब्दों क अर्थ समझ गयी थी और उनमें नई आशा तथा नया साहस जागृत हो गया था, वे अब भागती हुई इस शुभसन्देश को पहुंचाने के लिए शिष्यों के पास पहुंच गईं।

मरियम इस दृश्य को देखने के लिए उस समय वहां उपस्थित नहीं थी। परन्तु अब पतरस और यूहन्ना के साथ कब्र पर लौट आयी थी। जब वे यरूशलेम को लौट गए तो मरियम वहीं ठहर गई। उसे वह स्थान छोड़ना उपयुक्त न जान पड़ा जब तक कि उसे यह ज्ञात न हो जाए कि यीशु के शरीर का क्या हुआ। जब वह खड़ी हुई रो रही थी, तो उसने एक वाणी सुनी जो उससे पूछ रही थी :

'हे नारी तू क्यों रोती है? और किस को ढूंढ़ती है?'

उसके नेत्र अश्रुओं से ऐसे पूर्ण थे कि उसे दिखाई नहीं दिया कि उससे बोलने वाला कौन है। उसके मन में विचार आया कि यह माली है और उसने नम्रतापूर्वक उससे कहा :

'हे महाराज, यदि तूने उसे उठा लिया है तो मुझसे कह कि उसे कहां रखा है और मैं उसे ले आऊंगी।'

उसका विचार था कि यदि धनवान व्यक्ति की कब्र उसके स्वामी के लिए अधिक सम्मान का स्थान समझा जा रहा हो तो वह स्वयं उसके किसी स्थान का प्रबन्ध करेगी। परन्तु अब स्वयं मसीह की वाणी उसके कानों में सुनाई दी। उसने कहा, 'मरियम।'

उसने तुरत अपने आंसू पोछ लिए और मुक्तिदाता को खड़े हुए देखा। वह भूल गई थी कि उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था और आनंदित होकर उसने अपने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, "रब्बूनी अर्थात् हे गुरु!"

तब यीशु ने कहा, "मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं।" यूहन्ना २० १६,१८।

यीशु ने अपने लोगों द्वारा अपना सम्मान तब तक स्वीकार नहीं किया जब तक कि उसे यह निश्चय नहीं हो गया कि पिता ने उसके बलिदान को स्वीकार कर लिया है। वह ऊपर स्वर्ग पर चढ़ गया और उसने स्वयं परमेश्वर के मुख से पापी मनुष्यों के प्रति अपने प्रायश्चित की स्वीकृति का आश्वासन प्राप्त कर लिया और उसके रक्त के द्वारा मनुष्य अनंत जीवन प्राप्त कर सकता है इसका भी परमेश्वर द्वारा उसको निश्चय दिला दिया गया।

जीवन के राजकुमार को आकाश और पृथ्वी का समस्त अधिकार दे दिया गया और तब वह अपने अनुयायियों के पास पृथ्वी पर लौट आया जिससे वह पापी संसार में उनको अपनी शक्ति तथा महिमा में सहभागी बना सके।



# गवाह

मसीह के पुनर्जीवित हो उठने के दिन दोपहर वाद, उसके दो शिष्य इम्माऊस नामक गांव को जा रहे थे, यह छोटा कस्बा यरूशलेम से लगभग आठ मील दूर था।

पिछले दिनों जो घटनायें घटी थीं, उनसे वे वहुत व्याकुल हो रहे थे, विशेष रूप से वे स्त्रियों की सूचना से चकित रह गए थे जिन्होंने वताया था कि उन्होंने स्वर्गदूतों को देखा है और यीशु को पुनर्जीवित हो जाने के पश्चात् देखा है।

वे अब प्रार्थना और ध्यान करने के लिए अपने घरों को लौट रहे थे और उनको आशा थी कि प्रार्थना द्वारा उनको इन घटनाओं की वास्तविकता को समझने के लिए ज्ञान का प्रकाश प्रदान किया जाएगा जिनके विषय में वे अभी तक अन्धकार में थे।

जब वे यात्रा कर रहे थे तो मार्ग में एक अपरिचित व्यक्ति उनके साथ हो लिया परंतु वे अपनी वातचीत में इतने व्यस्त थे कि उनको उसकी उपस्थिति का आभास नहीं हुआ।

इन व्यक्तियों पर शोक का इतना भार था कि चलते-चलते वे रो रहे थे। मसीह के प्रेमी हृदय ने उनका दुःख समझ लिया और उसने उनको शांति देने का निश्चय कर लिया।

यदि आरम्भ में ही मुक्तिदाता स्वयं को उन पर प्रगट कर देता तो वे सन्तुष्ट हो जाते। अपनी प्रसन्नता के कारण वे उसकी सभी बातों को सुनने की आवश्यकता अनुभव न करते। परन्तु उनके लिए यह जानना आवश्यक था कि पुराने नियम में उसके कार्य के लिए जो सभी प्रकार की भविष्यवाणियां की गई हैं, उनको वे भली भांति समझ लें। इसी पर उनका विश्वास आधारित होना चाहिए था। मसीह ने उनको आश्वस्त करने के लिए कोई आश्चर्य कर्म नहीं किया परन्तु पवित्र शास्त्र को स्पष्ट करना उसका प्रथम कार्य था। उन्होंने उसकी मृत्यु को सभी आशाओं का अन्त समझ लिया था। अब उसने भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यवाणी से स्पष्ट कर दिया कि उनके विश्वास का सबसे अधिक दृढ़ प्रमाण यही था।

इन शिष्यों को शिक्षा देते हुए मसीह ने उसके कार्य के प्रति पुराने नियम की साक्षी के महत्व को भी प्रगट किया। आज अनेक लोग पुराने नियम की उपेक्षा करके उसे अस्वीकार कर देते हैं, उनका कहना यह है कि अब इसकी आवश्यकता नहीं रही है। परन्तु मसीह की शिक्षा यह नहीं है। उसकी दृष्टि में पुराने नियम का इतना उच्च सम्मान था कि उसने एक बार कहा, "जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तो भी उसकी नहीं मानेंगे। लूका १६ : ३१।

जब सूर्य अस्त हो रहा था तो शिष्य अपने घर पहुंच गए। "यीशु के ढंग से ऐसा जान पड़ा कि वह आगे बढ़ना चाहता है।" परन्तु शिष्य उससे पृथक होना सहन नहीं कर सके जिसने उनके हृदय आनन्द और हर्ष से पूर्ण कर दिए थे।

इसलिए उन्होंने उससे कहा, "हमारे साथ रह; क्योंकि सन्ध्या हो चली है और दिन अब बहुत ढल गया है।" लूका २४ : २८,२९।

सादा भोजन शीघ्र ही तैयार हो गया और यीशु अपने नियम के अनुसार मेज पर बैठ गया।

"मेरे प्रभु, मेरे परमेश्वर।" यूहन्ना २० : २८।

ऊपर वाली कोठरी में मसीह ने फिर अपने विषय में पवित्रशास्त्र को उन पर स्पष्ट किया। फिर उसने अपने शिष्यों को बताया कि पापों की क्षमा और पश्चाताप का उसके नाम के द्वारा समस्त संसार में जा कर प्रचार करो और इसका प्रारम्भ यरूशलेम से करो।

अपने स्वर्ग पर चढ़ने से पहले उसने उनसे कहा, "जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होगे।" "और देखो जगत के अन्त तक मैं तुम्हारे साथ हूं। प्रेरितों के काम १:८; मत्ती २८:२०।

अपने जीवन को संसार के लिए बलिदान कर देने के विषय में उसने कहा कि तुम मेरे गवाह रहे हो। जो कुछ मुझ पर बीता है वह सब तुमने अपनी आंखों से देखा है। जो अपने पापों से पश्चाताप करता है, उसे मैं सहर्ष स्वीकार करता हूं। जो लोग चाहते हैं, उनका परमेश्वर से फिर मेल हो सकता है और वे अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

यह दया का सन्देश मैं तुम्हारे हाथ में सौंपता हूं जो मेरे शिष्य हो। यह सन्देश सभी जातियों तथा सभी भाषाओं के बोलने वालों तक पहुंचाना तुम्हारा कर्तव्य है।

पृथ्वी के छोर तक चले जाओ परन्तु स्मरण रखो कि मैं सदा तुम्हारे संग हूं। विश्वास तथा भरोसा रखते हुए परिश्रम करो क्योंकि मैं तुमको कभी नहीं भूलूंगा।

मुक्तिदाता द्वारा शिष्यों को सौंपा गया कार्य सभी विश्वासियों के लिए है। यह संसार के अन्त तक मसीह के प्रत्येक विश्वासी का कार्य है। वे जो मसीह से जीवन प्राप्त करते हैं, उनका यह कर्तव्य है कि वे दूसरों की मुक्ति के लिए कार्य करें।

भीड़ को सभी उपदेश नहीं दे सकते परन्तु व्यक्तिगत सेवा सभी कर सकते हैं। जो दूसरों का कष्ट दूर करने के लिए सेवा का कार्य करते हैं और जो आवश्यकता में पड़े हुए लोगों की सहायता करते हैं और जो शोकित लोगों को शान्ति देते हैं और जो पापियों पर मसीह का क्षमा करने वाला प्रेम प्रकट करते हैं, वही मसीह के गवाह हैं।



# वही यीशु

पृथ्वी पर मुक्तिदाता का कार्य पूरा हो चुका था। अब उसके अपने स्वर्गीय घर को जाने का समय आ चुका था। वह विजय प्राप्त कर चुका था और अब वह परमेश्वर के सिंहासन पर महिमा और प्रकाश से पूर्ण हो कर फिर अपना स्थान प्राप्त करने जा रहा था।

यीशु ने अपने स्वर्गारोहण के लिए जैतून के पहाड़ को चुन लिया। अपने ग्यारह शिष्यों को साथ ले कर, वह उस पहाड़ की ओर चल पड़ा। परन्तु शिष्यों को यह ज्ञात नहीं था कि अपने स्वामी के साथ उनकी यह अन्तिम भेंट थी। चलते चलते मार्ग में मुक्तिदाता ने उनको अन्तिम निर्देश दिए। उनको छोड़ने से पहले उसने यह बहुमूल्य प्रतिज्ञा दी जो उसके प्रत्येक अनुयायी के लिए प्रिय तथा प्रेरणादायक रही है।

“और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।” मत्ती २८:२०।

वे चढ़ाई पार करके बैतनिय्याह के निकट पहुंच गए। यहां वे विश्राम करने के लिए बैठ गए और शिष्यों ने प्रभु को चारों ओर से

घेर लिया। उसके मुखमण्डल से प्रकाश की रेखाएं फूटती प्रतीत हो रही थी और वह उनकी ओर प्रेमपूर्ण दृष्टि से देख रहा था। उनके कानों में मुक्तिदाता के मधुर वचन गूंज रहे थे।

हाथ उठाकर उनको आशीष देते हुए, वह धीरे-धीरे उनसे ऊपर उठा लिया गया। जब वह ऊपर पहुंच गया तो आदरयुक्त भय से पीड़ित शिष्य अपनी आखें फाड़ फाड़ कर अपने प्रभु की अन्तिम झलक देखने के लिए आकाश को देखने लगे। एक महिमायुक्त बादल ने उसको उनकी आखों से ओझल कर दिया। उसी क्षण उनको स्वर्गदूतों का मधुर गान सुनाई देने लगा।

जब कि शिष्य ऊपर देख रहे थे तो उनके कानों में मधुर संगीत के समान शब्द गूंज उठे। उन्होंने मुड़ कर दो स्वर्गदूतों को मनुष्यों के रूप में देखा जिन्होंने उनसे कहा "*हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।*" प्रेरितों के काम १ ११।

ये स्वर्गदूत उस स्वर्गदूतों के दल के सदस्य थे जो यीशु को पृथ्वी से स्वर्ग तक लिवाने के लिए आए थे। वे उन लोगों पर जो पृथ्वी पर छूट गए थे, अपनी सहानुभूति तथा प्रेम प्रगट करने के अभिप्राय से यह आश्वासन देने के लिए ठहर गए थे कि उनकी यह पृथकता सदा के लिए नहीं है।

यीशु ने उनसे फिर आने की प्रतिज्ञा की थी, क्योंकि उसने कहा है

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए

जगह तैयार करूं, तो फिर आ कर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं, वहां तुम भी रहो।" यूहन्ना १४ : १-३।

स्वर्गदूतों ने शिष्यों को बताया कि मसीह "उसी रीति से फिर आएगा" जिस रीति से उन्होंने उसको स्वर्ग जाते देखा था। वह सशरीर ऊपर उठाया गया और उन्होंने उसे जाते हुए देखा। जब वह ऊपर पहुंचा तो बादल ने उसको उनकी दृष्टि से छिपा लिया। वह फिर बादल पर बैठ कर आएगा और "प्रत्येक आंख उसे देखेगी।" प्रकाशित वाक्य १ : ७।

हनोक ने साक्षी दी, "देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया कि सब का न्याय करे।" यहूदा १४,१५।

पौलुस प्रेरित इसी दृश्य को प्रस्तुत करते हुए कहता है :

"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे।"

"तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।" थिस्सलुनीकियों ४ : १६,१७।

इस प्रकार प्रभु पृथ्वी पर अपने स्वामिभक्तों को सदा काल तक अपने साथ रखने के लिए लेने आएगा।



## जीवित यीशु

आज यीशु प्रत्येक आदमी के दिल के दरवाजे के पास खड़ा होकर अंदर आने के लिए खटखटाता है। वह जबरन अंदर नहीं आयेगा। वह स्वैच्छिक स्वीकृति चाहता है। वह कहता है, "देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो उसके पास भीतर आकर मैं उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ" (प्रकाशित वाक्य ३:२०)।



# उनका स्वर्ग पर उठाया गया प्रभु

जब शिष्य यरूशलेम लौटे तो लोग उनको आश्चर्यचकित हो कर देखने लगे। उनके स्वामी के मुकद्दमे तथा क्रूस पर चढाए जाने के पश्चात् उनका विचार था कि अब वे नीची दृष्टि करके सदा लज्जा अनुभव करते रहेंगे। उनके शत्रु उनके मुख पर शोक और पराजय देखने के इच्छुक थे। इसके विपरीत उनके मुख पर प्रसन्नता और विजय के चिन्ह दिखाई दे रहे थे। उनके मुख पर स्वर्गीय आभा थी। वे निराश तथा शोकित नही थे वरन परमेश्वर की स्तुति करते हुए उसे धन्यवाद दे रहे थे।

आनन्द से परिपूर्ण अवस्था में उन्होने मसीह के जीवित हो उठने तथा स्वर्गारोहण की आश्चर्यजनक कथा लोगो को सुनाई और उनकी साक्षी को अनेक लोगो ने स्वीकार किया।

शिष्यो को भविष्य के प्रति अब किसी प्रकार का अविश्वास नही था। उनको ज्ञान था कि उनका प्रभु स्वर्ग में है और उसकी उनके साथ पूर्ण सहानुभूति है। वे जानते थे कि अपने रक्त के आधार पर वह परमेश्वर से उनके लिए विनती कर रहा है। वह अपने कीलो से

छिदे हुए हाथ-पैर परमेश्वर पिता को दिखा रहा था और यह उस मूल्य का प्रमाण था जो कि अपने द्वारा उद्धार प्राप्त करने वालों के लिए उसने चुकाया था।

उनको ज्ञात था कि वह फिर आएगा और उसके साथ पवित्र स्वर्गदूत होंगे और उन्होंने उत्सुकता से प्रसन्नतापूर्वक उस घड़ी की प्रतीक्षा की।

जब जैतून के पहाड़ पर यीशु उनकी आंखों से ओझल हो गया था, तो उसकी भेंट स्वर्गीय सेना से हुई थी जो स्तुति के गीत गाते हुए उसे चारों ओर से घेर कर स्वर्ग तक ले गई थी।

परमेश्वर के नगर के फाटक पर असंख्य स्वर्गदूत उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब यीशु फाटकों पर पहुंचता है तो उसके साथ आने वाले स्वर्गदूत विजयोल्लास से फाटक पर खड़े स्वर्गदूतों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं।

"हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो;
हे सनातन के द्वारो, ऊंचे हो जाओ;
क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।"
फाटक पर खड़े स्वर्गदूतों ने कहा:
"वह प्रतापी राजा कौन है?"

वे ऐसा इसलिए नहीं कह रहे हैं कि उनको यह ज्ञात नहीं है कि [illegible]तापी राजा कौन है परन्तु वे प्रशंसा और स्तुति का उत्तर सुनने के [illegible]भिलाषी हैं।

यीशु के साथ आने वाले स्वर्गदूत मधुर संगीत में गाते हुए कहते हैं।
[illegible]परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है
[illegible]परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है।" भजनसंहिता २४ : ७-१०।
[illegible]तब परमेश्वर के नगर के फाटक खोल दिए जाते हैं और समस्त [illegible]न सेना स्तुति गान करती हुई नगर में प्रवेश करती है।

समस्त स्वर्गीय सना अपने प्रधान सेनापति के प्रति सम्मान प्रकट करन की प्रतीक्षा में खडी है। वे प्रतीक्षा कर रहे हैं जब कि वह अपने पिता क साथ सिंहासन पर विराजमान हो।

परन्तु वह अभी महिमा का मुकुट और स्वर्गीय वस्त्र पहनना स्वीकार नही कर सकता। उसे पृथ्वी पर अपने चुन हुए लागा के प्रति परमश्वर पिता से अभी एक विनती करनी है। वह स्वर्ग में उस समय तक सम्मान प्राप्त करना स्वीकार नही कर सकता जब तक कि पृथ्वी पर उसकी कलीसिया को मान्यता प्राप्त नही होती और उस स्वीकार नही कर लिया जाता।

वह कहता है कि जहा वह है, वहा उसके लोग भी होगे। यदि उस महिमा दी जा रही है ता उसमें उनका भी सहभागी होना चाहिये। वे जो पृथ्वी पर उसके नाम में कष्ट सहन करते है, उनको उसके राज्य में प्रभुता प्राप्त करनी चाहिए।

इसलिए मसीह परमेश्वर से अपनी कलीसिया क लिए विनती करता है। वह उनके साथ अपनी एकरूपता स्थापित करता है, और उनके प्रति अगाढ प्रेम प्रकट करता हुआ उनके अधिकार तथा पद का सुरक्षित रखन के लिए विनती करता है जिनको उसन अपने रक्त द्वारा मोल लिया है।

उसकी विनती के उत्तर में परमश्वर पिता द्वारा यह घाषणा की जाती है

' परमश्वर के सब स्वर्गदूत उसका दण्डवत कर।" इब्रानिया १ ६।

प्रसन्नतापूर्वक समस्त स्वर्गीय सना उद्धारकर्त्ता का दण्डवत करती हैं। असख्य स्वर्गदूत उसक सामने झुक कर उस दण्डवत करत है और समस्त स्वर्ग में स्तुति का मधुर सगीत गूज उठता है।

" वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा और धन्यवाद के योग्य है।" प्रकाशित वाक्य ५:१२।

मसीह के अनुयायी, " उस प्रिय में स्वीकार कर लिए जाते है।" स्वर्गीय सेना की उपस्थिति में परमेश्वर ने मसीह के साथ अपनी वाचा का अनुमोदन किया है कि वह पश्चाताप करने वाले तथा आज्ञाकारी मनुष्यों को स्वीकार करेगा और अपने पुत्र के समान ही उनसे प्रेम करेगा। जहां उनका उद्धारकर्त्ता होगा वहां उनके द्वारा उद्धार पाने वाले लोग भी होंगे।

अन्धकार के राजकुमार पर परमेश्वर का पुत्र विजयी हुआ है और उसने पाप तथा मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। स्वर्ग अब उनकी स्तुति से गूंज रहा है:

" जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे।" प्रकाशित वाक्य ५:१३।